प्रकाशक

श्रीमान सेठ मिश्रीलालजी जतनलालजी

मोतीचंदजी डागा, जयपुर सिटी

प्रथमवार

केवल डाकव्यय भेजने से पुस्तक बिना मूल्य मिलेगी

मुद्रक, जे० के० शर्मा

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

His Holiness The Jagat Guru Acharya Dev
Shri 1008 Shri Vijai Shanti Surishwarji Bhagwan

જન્મ	દીક્ષા	આચાર્ય પદ	નિર્વાણ
૧૯૪૫	૧૯૬૧	૧૯૯૦	૧૯૯૯
માઘ સુદ ૫	માઘ સુદ ૫	મગસિર સુદ ૨	આસોજ વદી ૧૦

હિઝ હોલીનેસ શ્રી જગત્ ગુરુ મહાન યોગિરાજ
નિરન્તર સ્મરણીય પુરન્દર ભટ્ટાર્ક આચાર્ય-સમ્રાટ્
શ્રી શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી વિજય શાન્તિ સૂરીશ્વરજી ભગવાન

स
म
र्प
ण

बहुत दिनों की साध आज पूरी होने दो।
श्रीचरणो में गीत-सुधा अर्पित होने दो।
मेरे मन का भाव प्रभो! संग्रह में देखो।
बिन्दु-बिन्दु मे सिन्धु भरा छन्दो में लेखो।

प्रस्तावना

"नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।" महिमन् स्तोत्र

भावार्थ सद्गुरु से बढकर कोई भी तत्त्व नही है ।

०

अन्य किसी वस्तु की खोज मत कर । केवल एक सत्पुरुष की खोज कर और उसके चरण कमलो में आत्मा को सर्वरूपेण समर्पित करके प्रवृत्ति करता रह । यदि फिर मोक्ष न मिले तो मेरे पास से लेना ।

(श्रीमद् राजचद्र)

०

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्त्तिः, पूजा मूलं गुरोर्पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोर्कृपा ॥

०

वेद थके ब्रह्मा थके, थाके शंकर शेष ।
गीता को भी गम नहीं, जहँ सद्गुरु उपदेश ॥

०

अतिशय महान् पुण्य योग से, आज से लगभग पन्द्रह वर्ष पहले, मुझे श्रीआबूजी तीर्थ में विश्ववन्द्य, जगतगुरु आचार्य सम्राट् श्रीविजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान् के दर्शनो का अपूर्व लाभ, उन्ही पूज्य गुरुदेव के अनुग्रह से, सहज स्वाभाविक रीति से प्राप्त हुआ ।

ज्यो-ज्यो मैं आचार्य भगवान् के अधिकाधिक सम्पर्क में आया, त्यो-त्यो अनुभव द्वारा मेरा यह विश्वास दृढ़ होता रहा-कि वे इस विश्व में बडे से बड़े अवतारी पुरुष थे ।

अखिल विश्व के शान्त रस के परमाणु उन्ही में एकत्रित हुए हों ऐसी अनुपम शान्ति आप श्री में रहा करती थी।

विश्व-प्रेम का अखड स्रोत आप श्री से निरन्तर वहता था। मुझे तो ऐसा भान होता था कि आप श्री के एक रोम मे से निकला हुआ प्रेम ही सारे जगत् में फैला हुआ है।

आप श्री सभी प्राणियो को आत्मवत् समझते थे और सभी मे समभाव रखते थे।

विश्व की समस्त पवित्र वस्तुओ को एकत्रित कर उन्हे देखने से जो आनन्द प्राप्त होता है, उससे भी अधिक आनन्द, आप श्री के परम पवित्र शान्त मुखारविन्द का दर्शन करने से, प्राप्त होता था।

सुदूर देश-देशान्तर से यूरोपियन, पारसी, हिन्दू, मुसलमान, राजा, महाराज, अमीर और गरीब, सभी जाति और धर्म के मनुष्य आचार्य श्री के दर्शनो के लिये आते थे। सभी लोग आचार्य भगवान् को, विश्व के एक आदर्श महापुरुष की तरह, पूज्य मानते थे। गुरुदेव प्रत्येक व्यक्ति को विश्व-प्रेम का उपदेश देते थे। सख्यातीत मनुष्यो ने आपके उपदेश से सत्य मार्ग ग्रहण किया।

भूतकाल में अनेक अवतारी महापुरुष हुए है। वे कैसे रहे होंगे, इस बात का यथार्थ भान, आचार्य भगवान् के दर्शनो से इस समय भी प्रत्यक्ष हो जाता था।

आचार्य भगवान् में अनन्त आत्मशक्ति प्रगट होते हुए भी वे सदा निरभिमान हो सादगी के साथ रहते थे। किसी समय आप एक छोटे बालक की तरह चेष्टा करते हुए देखे जाते थे तो दूसरे समय आप महान् ज्ञानी के रूप में उपदेश देते हुए दिखाई देते थे। आप एकाकी होते हुए भी बहुसगी थे एव सदा प्रसन्न रहते थे। शत्रु-मित्र, निन्दक-पूजक, सुख-दुख, मान-अपमान आदि में आप सदा समभाव ही रखते थे। ऐसे ज्ञानी

महापुरुष के गुणगान करने में स्वयं बृहस्पति भी असमर्थ हैं, तो फिर मेरा सामर्थ्य ही क्या ?

आचार्य भगवान् का यथार्थ स्वरूप समझना तो बडा ही कठिन था किन्तु आप श्री ही अनुग्रह कर जिस भक्त को अपना स्वरूप बतलाते वह आपको सहज ही समझ सकता था । मेरा नम्र अभिप्राय तो यह है कि पूर्व अनेक जन्मो मे सद्गुरु की भक्ति द्वारा संस्कार प्राप्त भव्यात्मा, आचार्यदेव के प्रति जिस परिमाण में श्रद्धा भक्ति रखते थे उसीके अनुरूप वे उन्हें समझ सकते थे ।

श्रीमद् राजचंद्र ने सच ही कहा है सत्पुरुष मे अडिग श्रद्धा, उसकी भक्ति मे तल्लीनता, सर्वस्व समर्पण एवं आज्ञापालन यही मोक्षप्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ एवं सरल मार्ग है ।

किशनचंद लेखराज

आ
भा
र

इस संग्रह में जिन सरस्वती-पुत्रों की वाणी का संकलन हुआ है, वे सब संग्रह-कर्त्री के हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

विषय-सूची

॥ श्री धर्म तीर्थ शान्ति गुरुभ्यो नमः ॥

अनन्य शरण को देनेवाले, निरन्तर स्मरणीय स्वर्गीय श्री सद्गुरु भगवान् को सतत वन्दन ।

जब-जब दुनिया में धर्म का नाश होता है तब-तब अवतारी महापुरुष सत्य, धर्म तथा शान्ति की स्थापना के लिये जन्म धारण करते है

इस मरुधर देश को धन्य है ।

इस अहीर जाति को धन्य है ।

पुण्यवती माता वसुदेवी को धन्य है ।

पुण्यात्मा रायका श्री भीमतोला जी को धन्य है ।

समस्त ससार में जिनके विश्वप्रेम का सन्देश फैल रहा है, विश्व के चारों कोनो में जिनके नाम से कोई अजान नही है वे इस विश्व की महान् से महान् विभूति-रूप जगद्गुरु आचार्यदेव श्रीविजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान् हैं ।

आप श्री के गुरु का नाम श्री तीर्थ विजयजी भगवान् और उनके भी गुरु का नाम महान् योगीन्द्र, त्रिकालदर्शी श्रीमद् धर्मविजयजी भगवान था । इन तीनो ही महापुरुषो ने अहीर जाति मे जन्म धारण किया था ।

श्रीधर्मविजयजी भगवान् का जीवनचरित्र अद्भुत है । उसका अति संक्षिप्त वर्णन यहाँ दिया जाता है

जोधपुर के पास जसवन्तपुरा परगने में माडोली नामक एक गाँव है । वहाँ एक रायकाजी दरजोजी करके रहते थे । दरजोजी के कोलोजी नामक एक इकलौता पुत्र था । कोलोजी का जन्म सवत् १८४८ की आषाढ सुदी १५ के शुभ दिन हुआ था । दरजोजी के देहावसान के पश्चात् कुटुम्ब-निर्वाह का भार कोलोजी के सिर आ पडा । बचपन से ही कोलोजी

को ईश्वर एव भगवद्भक्ति मे अटल श्रद्धा थी । उनके जीवन-निर्वाह का साधन पशुओ के पालन-पोषण पर निर्भर था । एक बार मारवाड में बडा भयकर दुष्काल पडा । अन्नपानी और पशुओ के लिये घास मिलना दुष्कर हो गया । ऐसे कठिन समय मे वे कुटुम्ब को साथ लेकर देशाटन के लिये निकल पडे । मार्ग मे बीमारी फैल जाने से कितने ही पशु मर गये । परिवार के लोगो मे से भी केवल कोलोजी और वेलजी नामक उनका एक डेढ़ साल का बालक जीते रहे । घूमते फिरते वे पूना के समीप चोक नामक गाँव मे आये । वहाँ मारवाड से आये हुए, थूल गाँव के निवासी जसाजी नामक एक जैन-गृहस्थ रहते थे । कोलोजी ने अपने पुत्र के साथ उनके यहाँ पशुओ की सार-सँभाल के लिये नौकरी कर ली । कोलोजी की अपूर्व भक्ति-भावना देखकर सेठ ने उन्हे पच परमेष्ठी मत्र सिखाया । कोलोजी अधिक समय ध्यान में ही तल्लीन रहते थे ।

एक बार उनके पुत्र वेलजी को जगल मे सर्प ने डस लिया । उस समय कोलोजी ईश्वर के ध्यान में निमग्न थे । ध्यान से जब जागे तो उन्होने सर्पदशित अपने पुत्र को मृत्यु की शरण में देखा । पुत्र को अपनी गोद में लेकर उन्होने यह दृढ प्रतिज्ञा की यदि मेरा यह पुत्र बच जायगा तो मैं अन्न जल ग्रहण करूँगा; नही तो परमेष्ठी मत्र का ध्यान करते करते यह शरीर छोड दूंगा । सेठ तथा अन्य लोगो ने यह प्रतिज्ञा छोड़ देने के लिये उन्हें बहुत समझाया परन्तु ईश्वर मे अडिग श्रद्धा रखते हुए वे अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे । उपवास के तीसरे दिन श्रद्धा के प्रबल प्रताप से कोई सन्त महात्मा आ उपस्थित हुए और पुत्र को जीवित किया । तुरन्त ही कोलोजी ने अपने इस पुत्र को महात्माजी के चरणो में रख दिया और कहा आपने इसको जीवनदान दिया इसके लिये मै आपका अतिशय ऋणी हूँ । मुझे अब अपना शेष जीवन भगवद्भक्ति मे बिताना है इसलिये कृपया आप यह बतलाइये कि मुझे इस पुत्र की क्या व्यवस्था करनी चाहिये । उत्तर में महात्माजी ने कहा इस पुत्र को तुम किसी साधु अथवा यति

को वहरा देना और तुम भी जैन दीक्षा अंगीकार कर लेना। इससे आत्म-ज्ञान सम्पादन कर तुम एक महापुरुष के रूप में पूजे जाओगे, यह तुम्हें मेरा आशीर्वाद है।

तुरन्त ही महात्माजी अदृश्य हो गये। इसके बाद कोलोजी ने तीन उपवास का पारणा किया। कुछ मास बाद उन्होंने अपने पुत्र वेलजी को एक यति को वहरा दिया। जो वेलजी यति के नाम से मडार गाँव मे प्रसिद्ध हुए। इसके बाद कोलोजी को मणिविजयजी नामक एक जैन-साधु मिले। उनके पास उन्होंने सवत् १८७३ की माह सुदी ५ के दिन दीक्षा ग्रहण की। तभी से उनका नाम मुनि महाराज श्रीधर्मविजयजी रखा गया।

खडाला के घाट में कुछ समय ध्यान में व्यतीत करने के बाद श्री धर्मविजयजी महाराज श्री को स्वभावतः सहज ही आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई। आप इतने बडे शक्तिशाली समर्थ पुरुष थे कि एक स्थान पर विराजते हुए भी आप उसी समय दूर-दूर देशों मे अनेक स्थानो पर अपने भक्तो को दर्शन देते थे। एक समय आप रामसीण गाँव से विहार कर आगे पधार रहे थे। उस समय आपके साथ बहुत से लोग थे। जेठ का महीना था। गर्मी सख्त पड रही थी। साथ के लोगो को प्यास सताने लगी। आस-पास में पानी मिलने का कोई उपाय न था। इसलिये बहुत से लोग घबरा गये। अनन्त-दयाल श्रीगुरुदेव भगवान् के पास अपनी तर्पणी में थोडा सा जल था। आपने उसमें से थोडा सा पानी पृथ्वी मे एक गढ़ा करा कर डाला और उसके ऊपर एक कपडा ढँकवा दिया। तुरन्त ही लब्धि के प्रभाव से उस गढे में पानी उमड़ आया। हर एक मनुष्य ने उसमे से अपनी प्यास बुझाई।

एक समय श्रीधर्मविजयजी भगवान् रामसीण में विराजते थे। चैत्र-सुदी पूर्णिमा का दिन था। उन्ही दिनो रामसीण गाँव के कई एक श्रावक पालीताणा यात्रा के लिये गये हुए थे। वे पहाड के ऊपर आदेश्वर दादा के दर्शन कर बाहर निकले तो उन्होंने वृक्ष के नीचे गुरु श्री को देखा।

वदना के पश्चात् उन्होने प्रश्न किया भगवन् ! आप कब पधारे ? प्रत्युत्तर में 'ओ शान्ति' शब्द सुनाई दिये। उसी दिन श्रावकों ने पालीताणा से रामसीण पत्र लिखा कि आज दिन यहाँ पहाड ऊपर श्रीधर्मविजयजी महाराज साहेब के दर्शन हुए है। क्या आप श्री अभी रामसीण मे हैं अथवा विहार कर गये हैं। रामसीण से इस प्रकार उत्तर आया कि चैत्र-सुदी पूर्णिमा के दिन प्रातकाल दस बजे गुरु श्री ध्यान करने के लिये जगल में पधार गये थे। शाम को चार बजे के बाद आप वापिस लौट आये और अभी यही विराजते है। इस प्रकार आप श्री अपनी अनन्त आत्मशक्ति द्वारा एक ही समय दूर-दूर देशो मे अनेक स्थानो पर अपने भक्तों को दर्शन देते थे। आप श्री के जीवन-चरित्र मे इस प्रकार की अनेक अद्भुत और अलौकिक बातें है जिन्हें लिखना सभव नही है।

मृत्यु का समय भी एक महीने पहिले ही आपने अपने भक्तो को बता दिया था और कहा था कि जिस स्थान पर मेरे मृतदेह का दाह-संस्कार करो वहाँ पालखी के चारो तरफ नीम के चार सूखे खूँटे लगा देना। अग्नि लगाने की आवश्यकता नही पड़ेगी। नीम के जो चार खूँटे गाडोगे वे भविष्य में नीम के चार वृक्ष होगे। मेरी मृत्यु के बाद भविष्य मे जब कोई महान् आदर्श व्यक्ति प्रकट होगा तब एक नीम का वृक्ष अदृश्य हो जायगा।

आपके कहे अनुसार ही सवत् १९४९ की आषाढ बदी ६ को प्रातःकाल आपश्री का देहावसान हुआ। हजारो लोग बिना किसी जाति-भेद-भाव के आपश्री की पालखी अग्निसंस्कार के लिये जगल में ले गये। चार नीमके खूँटे गाडकर बीच मे गुरु श्री की पालखी रखी गई। पालखी के आसपास चन्दन की लकड़ियाँ चुनी गई। इन्द्र महाराजने भी उस समय इतनी अधिक वर्षा की कि जल का कोई पार न रहा। आग स्वत. आपश्री के दाहिने पैर के अँगूठे मे से प्रकट हुई। शरीर के ऊपर के उपकरण, ध्वजा और ज़मीन में गाडे हुए चार नीम के खूँटे वगैरह अखंड बने रहे, केवल

शरीर ही जलकर भस्म हुआ। उपकरण तथा ध्वजा को लोग प्रसाद रूप से ले गये। नीम के चारों सूखे खूंटे भविष्य में चार नीम के वृक्ष हुए। माडोली में दाह-संस्कार वाली जगह पर गुरुश्री की देवली बनाई गई है। देवली में गुरुश्री की चरणपादुका पधराई गई है। जब गुरुदेव की तिथि आती है तब वहाँ प्रति वर्ष बडा मेला भरता है। हजारो दर्शनार्थी उलट पड़ते है। दर्शनार्थ आने वाले प्रत्येक मनुष्य को माडोली में प्रति वर्ष जिमाया जाता है। उस दिन गुरु श्री के चरणो से प्रातःकाल खास समय पर दूध तथा गगा जल बहता है। जगत्गुरु आचार्यदेव श्रीविजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान् उस दिन जहाँ कही भी होते है वहाँ से पधार कर दिन में किसी समय किसी एक को दर्शन देते है।

श्रीधर्मविजयजी भगवान् देवलोक पधारने के बाद भी कभी-कभी अपने परमभक्तों को दर्शन देते है।

उपरोक्त सारी वस्तुस्थिति अभी भी माडोली मे विद्यमान है। केवल नीम का एक वृक्ष अभी हाल मे अदृश्य हो गया है और तीन वृक्ष मौजूद है।

श्रीधर्मविजयजी भगवान् के शिष्य महान् तपस्वी महात्मा श्रीतीर्थ-विजयजी भगवान् हुए। आपश्री भी जाति के अहीर थे। आपका जन्मस्थान मणादर गाँव था। आपश्री ने सारा जीवन तपश्चर्या में पूरा किया। सवत् १९८४ की फागुन सुदी ८ के दिन मारवाड में भुडोत्रा गाँव में आपश्री का देवलोकवास हुआ।

जगतगुरु आचार्य सम्राट् श्रीविजयशान्तिसूरीश्वरजी भगवान् का जीवन-चरित्र अनुभव करने योग्य है। आपश्री का जीवन-चरित्र अत्यन्त अद्भुत अलौकिक एव अगम्य है इसलिए वाणी द्वारा यथार्थ कह सकने में कोई समर्थ नही है तो फिर लेखनी द्वारा लिखकर उसका वर्णन कैसे किया जा सकता है।

अहीर कुल का इतिहास

परम पूज्यपाद आचार्यदेव का जन्म अहीर (रवारी) जाति में हुआ। शिक्षा एवं संगठन के अभाव से यह जाति आजकल अवनतावस्था में है। इस जाति की वर्तमान हीन-अवस्था देखकर इसे सामान्य पशु चराने वाली जाति समझना इसके साथ अन्याय करना है। इस जाति का भूत-काल का इतिहास समुज्ज्वल एवं स्फूर्तिप्रद है। भारत की सर्वस्व-रूपा गोजाति की रक्षक होने के नाते यह जाति भारत की रक्षा करने वाली कही जा सकती है। समय-समय पर प्राणों की बाजी लगाकर इस जाति ने गौ जाति की रक्षा की है। भारतवासियों के लिए इस जाति ने जो महान् त्याग एवं बलिदान किया है उसके लिए भारत का बच्चा-बच्चा इस जाति का कृतज्ञ रहा है और रहेगा। वास्तव में ये लोग क्षत्रिय हैं। प्राचीन समय में क्षत्रिय लोग गौ जाति की रक्षा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे। महर्षि वसिष्ठ ने गौ जाति की बड़ी सेवा की थी। यदुवंश में महाराज कृष्ण ने गौ जाति की इतनी सेवा की कि वे गोपाल के नाम से आज तक प्रसिद्ध हैं। आजकल राजाओं को "गौ ब्राह्मण-प्रतिपालक" आदि से महत्त्वना करते हैं और यह माननीक शब्द है। महाराज दिलीप गौ सेवा के खातिर कुछ समय के लिए राज्य छोड़कर जंगल में सन्यासी की तरह रहे एवं प्राणों की बाजी लगाकर गौरक्षा व्रत का पालन किया। यही कारण है कि आज भी क्षत्रिय लोग गौ ब्राह्मण-प्रतिपालक कहे जाते हैं। आज भी इस जाति में चावड़ा, परमार, भीम, सोलंकी, राठोड, यादव, मकवाणा आदि क्षत्रियों की अनेक शाखाएँ विद्यमान हैं। रायका, रबारी, देसाई आदि नामों से यह जाति प्रसिद्ध है। ये नाम भी इस जाति का शासक क्षत्रिय जाति होना सिद्ध करते हैं। राय का अर्थ राज्य है। राज्य करने के कारण

ये लोग रायका कहलाये। रबारी शब्द दरबारीका अपभ्रंश रूप है। दरबारी शब्द का 'द' उड़ गया और शेष रबारी रह गया। इसी तरह देश में सर्व प्रथम आने के कारण यह जाति देसाई नाम से मशहूर हुई। इस जाति के आचार-विचार एव रीति-रिवाज भी क्षत्रियो से प्राय मिलते-जुलते हैं। रोटी-व्यवहार तो आज भी उस जाति का क्षत्रियो के साथ है। भाट लोगो के पोथे जिनमे कि इस जाति का इतिहास मिलता है, देखने से मालूम होता है कि प्राचीन काल में क्षत्रियो के साथ इस जाति का बेटी-व्यवहार भी रहा है।

गीता में क्षत्रियो के स्वाभाविक गुण बतलाते हुए कहा है

शौर्यं तेजो धृति दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्
दानमीश्वर भावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम्॥

भावार्थ शूरता, तेज, धैर्य, दक्षता, युद्ध से न भागना और ऐश्वर्य ये क्षत्रियो के स्वाभाविक गुण है।

क्षत्रियो के ये स्वाभाविक गुण इस जाति के व्यक्ति-व्यक्ति में आज भी पाये जाते है। ब्रह्मचर्य पालना, लाल वस्त्र धारण करना, दड रखना आदि क्षत्रियों के लिए मनु महाराज की कही गई बातें आज भी इस जाति के रहन-सहन और आचार-विचार में पाई जाती है।

इस जाति का इतिहास यह भी बतलाता है कि इन लोगो ने गुजरात और मारवाड मे अनेक बस्तियाँ बसाई। राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए भी इन्होने क्षत्रियो की ही तरह वीरता के साथ अपना खून बहाया है। गुजरात, सौराष्ट्र, मारवाड आदि के इतिहास में उनकी वीरता की असख्य अमर आख्यायिकाएँ मिलेगी। जगदेव सोमोड़ और उनकी राया और हरी कन्याओ की धर्मपरायणता और वीरता की कहानी से मालूम होता है कि इस जाति मे पद्मावती और प्रताप की तरह ही क्षत्रियो का खून बहता है।

जगदेव सोमोड के राया और हरीना नाम की दो कन्याएँ थी। उनके रूप और गुण की प्रशंसा सुन मुगल सम्राट् ने उन्हे अपने अन्तःपुर में रखना चाहा। सम्राट् की बुरी नियत का पता लगने पर जगदेव ने अपनी कन्याओं को अन्यत्र भेज दिया। इस पर मुगलों ने गो-वध आरम्भ कर दिया। जगदेव का खून खौल उठा। उसने विशाल-मुगल-सेना का वीरता के साथ सामना किया पर उसकी परिमित शक्ति अधिक समय तक मुगल सेना के आगे न टिक सकी। जगदेव के स्वर्गारोहण के बाद मुगलों ने दोनों कन्याओ का पता लगाया। उन्हें साम्राज्य का प्रलोभन दिया गया। धर्म के आगे तीन लोक की सम्पत्ति को ठुकराने वाली वीर बालाओं ने प्रलोभन का जवाब तलवार से दिया। अनेक मुगल-सैनिको के खून से अपनी तलवार की प्यास बुझाकर उन्होने भी अपने पिता का अनुसरण किया।

श्री आचार्य देव के चरणों में समर्पित श्रद्धांजलियाँ

स्वर्गीय श्री जगद्गुरु आचार्यदेव महान् योगिराज श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान् के दिव्य जीवन-चरित्र की रूपरेखा को प्रकट करने वाली कुछ श्रद्धाञ्जलियाँ

मैंने अपने जीवन काल में यदि कोई अद्भुत वस्तु देखी है तो ये योग-निष्ठ श्री शान्तिसूरीश्वरजी महाराज हैं। बाहर से ये केवल साधारण दिखते है, और जब ये वार्तालाप करते हैं तब भी ऐसा प्रतीत होता है कि कोई साधारण पुरुष ही बोल रहा है। आप श्री का प्रदर्शन भी स्वभावतः ऐसा है कि लोग सहज ही भूल कर बैठें तो कोई बडी बात नही। किन्तु मुझे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि ये कोई उच्चकोटि के महान् आध्यात्मिक ज्ञान के भंडार हैं। इन महापुरुष को हम लोग सहज में समझ नही सकते है, कारण कि ये योग में और इसी तरह आध्यात्मिक ज्ञान में इस कदर गहरे उतरे हैं कि अठारह मास तक उनके समीप रहकर भी एक विद्वान इन्हें पूरी तरह समझ नही सकता। वर्तमान काल के इतने साधुओ में केवल ये ही योग क्रिया और आध्यात्मिक-ज्ञान के विषय में अग्रणी हैं। ऐसे महान् योगीश्वर को समझने के लिए महान् शक्तिशाली आत्मा, बहुत लम्बा समय लेकर ही इन्हें शायद कुछ समझ सकता है।

परम कल्याणमन्त्र
पुस्तक मे से

योगशास्त्र आदि अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थो के रचयिता, योगनिष्ठ आचार्य भगवान्
श्री विजयकेसर सूरीश्वरजी महाराज

If ever in my life I have come across any wonder He is the Ascetic Shanti Surishwarji Maharaj.

Outwardly He appears to be a man of ordinary calibre and even when He speaks it becomes evident that an ordinary man is speaking. His look is also so simple that people easily mistake about His greatness. But, I felt, He is a store-house of lofty spiritual ideas We cannot easily understand this great personality as His spiritual knowledge has reached such a depth in consequence of His Yogic practices that a certain learned scholar could not thoroughly realise His greatness even after eighteen months' stay with Him. Of all the great saints of to-day He is assuredly the foremost in respect of Yogic and spiritual matters. Should any powerful soul keep company with Him for a long time with a view to understanding this great King of Ascetics (Yogiraj) he might perhaps grasp a little of Him.

(Sd). ACHARYA BHAGWAN SHREE VIJAY KESHAR SURISHWARJI MAHARAJ,
Editor of Yoga-Shastra and other books on Spiritualism.

Quoted from
Param Kalyan Mantra

આચાર્ય દેવ આબૂ में विराजते थे उस समय आपने बम्बई मे दर्शन दिये

पिछले उपवास की रात को मुझे एक दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। उसमें आबू मे विराजते योगिराज जगतगुरु आचार्य भगवान् श्री विजय-शान्ति सूरीश्वरजी महाराज के दर्शन हुए। उन्होने आदेश दिया कि अपना हठ त्याग कर पारणा कर लो। इससे मुझे पूर्ण श्रद्धा हुई कि आचार्य का जो आदेश है उसका प्रकृति के साथ सम्बन्ध है।

पहले जब आबू से तार द्वारा श्री कृपालु आचार्य देव ने पारणा करने की आज्ञा दी थी, उस समय मुझे उन पर विश्वप्रेमी महापुरुष के रूप में श्रद्धा न थी। जब मैं उनके पास रहा और उनके सम्पर्क मे आया तब भी मुझे उन पर पूर्ण श्रद्धा न थी और मैं यह समझता था कि उनका और मेरा धर्म्म जुदा है। दूसरी अनेक शकाओ के साथ कई लोग उनके विरुद्ध बोलते थे, इस कारण भी मुझे उन महापुरुष की यथार्थता पर पूरी पूरी श्रद्धा न थी।

लेकिन पिछले उपवास में मुझे उनका भास तथा प्रकाश मिला, और इस कारण उनके प्रति विश्व के महात्मा पुरुष के रूप मे मेरा विश्वास स्थापित हुआ। इसीलिये उनके आदेश को प्रकृति की प्रेरणा समझ कर मैंने पारणा कर लिया।

स्थानकवासी जैनपत्र	तपस्वी मुनि श्री
ता० ११-१-१९३७	मिश्रीलालजी के आन्तरिक उद्गार

While residing at Abu Achaiya-Deva made Himself manifest in Bombay:

"In the night of my last fast I perceived a hallow of Light in the midst of which I found the presence of Yogiraj Jagat-Guru Achaiya Bhagwan Shree Vijay Shanti Surishwar Maharaj, then staying at Abu. His Holiness ordered me to terminate

the fast and not insist on same any more. I had full confidence in the fact that this order of the Acharya-Deva bore some relation with Nature.

"While at first this gracious Guru-Deva asked me by a telegraphic message to break the fast I had no faith in Him as a great personality of Universal Love and even when I came in contact with Him and kept His Holy Company I had no full confidence in Him and I thought that His religion was different from mine. Besides, the blasphemy of other people was added to my own misunderstanding of Him wherefore I had no full confidence in the reality of His greatness.

"But during the period of my last fast I caught a glimpse of His Holy Light which led to the foundation of my faith in him as a great personality of the world. This is why I regarded His order as an inspiration from Nature and broke my fast."

Date 11-1-1937 — A sincere expression of
Quoted from — TAPASWI MUNIJI
Sthanakwasi Jain Patra. — MISHRILALJI

मैंने दुनिया के हर एक देश की यात्रा की है। मैं अनेक महापुरुषों से मिली हूँ। अन्त में मैं गुरुदेव महाराज श्री शान्तिसूरीश्वरजी से भी मिली। हम पाश्चात्य लोगो में इतना तो ठीक है कि हम किसी बात को बराबर समझ कर ही, मानते है। हम अपने मन से पूछते हैं कि प्रत्येक

वस्तु मे क्या બાત है ? મિસ મેયો ने મદર ઇંડિયા નામક जो पुस्तक लिखी है ઉસે लिखते हुए ઉસને વડી भूल की है । કારણ यह है कि हिन्दुस्तान में અભી तक ऐसे देवरत्न विद्यमान है तो फिर ઉસને ક્યા સમઝ કર यह पुस्तक लिखी હોગી ? અવ तो मैं ઉસે વરાવર જવાબ दूंगी, जिससे कि ઉસકી भूल માલૂમ हो જાયગી और दुनिया पूरी तरह સચાઈ को સમઝ સકેગી । ગુરુજી પરમેશ્વર ही है ઇસમેં कोई भी सन्देह नही है ।

દી પૉવર આવ ઇંડિયા આદિ
પુસ્તકો की રચયિત્રી
મહાન विदुषी मिस માઇકેલ પીમ,
સમ્પાદિકા, ટ્રિબ્યૂન હેરલ્ડ, ન્યૂયૉર્ક

પરમ કલ્યાણમત્ર
पुस्तक में से

I had travelled in every country of the world and had come in touch with many great souls. At last I met Gurudev Shree Shanti Surishwarji. It is, of course, obvious for the Westerners that they accept a thing only upon rational understanding. We, Westerners must inquire into the reason of everything.

Miss Mayo, the Author of Mother India must have committed a great blunder in writing that book. The reason is that while such a precious gem of a God (Deva-Ratna) is existing in India still now what might impel her then to write such a book as that. Now indeed, I must deal out to her proper replies that she might be brought to her senses and that the world might understand the Truth in a perfect manner.

Gurudev is indeed a re-incarnation of God and there cannot be any shadow of doubt about it..........("Gurudev is a God no doubt").

MISS MICHAEL PIM,
Editor, Tribune Herald, New York, Author of "The Power of India", etc. and A Great Scholar.

Quoted from
Param Kalyan Mantra

ये एक उच्च कोटि के महापुरुष हैं। फिर भी इनका हृदय बालक की तरह खरा और निर्दोष है। महात्माओं के लक्षण शास्त्र में कुछ भी लिखे हों पर ऐसी बुद्धि और हृदय का विचार, बल तथा सरल बालभाव और इनका ऐसा सुन्दर समन्वय भाग्य से ही कहीं देखने को मिलता है। इनके साथ मेरा जो परिचय हुआ इससे मुझे तो यही लगा कि यही तो महात्मापन का यथार्थ स्वरूप है। जब जब मैं इनके पास गया हूँ तभी इनके सान्निध्य मे मेरे हृदय एव मस्तिष्क के भावों में ऐसी एकता प्रतीत हुई है कि केवल इनकी ओर देखने और इनका उपदेश सुनने के सिवा और दूसरी कोई भी वृत्ति मन मे उत्पन्न ही नहीं होती। प्रत्येक दर्शनार्थी को यही भास होता है, ऐसा मैंने देखा है। महात्मापन की व्याख्या करने वाली इससे अधिक और क्या वस्तु हो सकती है? लोकैषणा की इच्छा से आप बहुत परे हैं। मुझे बहुत से महापुरुषों के परिचय मे आने का अवसर मिला है परन्तु आप श्री का सान्निध्य मुझे अपूर्व प्रतीत हुआ है। कैसे और कितने अभ्यास का यह परिणाम होगा? यदि यह समझ मे आ जाय और तदनुसार करना शक्य है, ऐसी सुगमता मालूम हो तो सम्भव है वैसा करने का मन हो जाय।

परम कल्याणमंत्र
पुस्तक में से

सर प्रभाशंकर पट्टणी
भावनगर

"This is a great man of a very high order and yet His heart is as pure and simple as that of a child. Whatever might the Shastras say about the signs of greatness it is through sheer good fortune that one can find such a beautiful combination of head and heart with childlike simplicity. From my own acquaintance with Him I could only make out that He was an incarnation of real greatness. Whenever I drew near Him I could realise such a peculiar unity between intellection and feelings that I had no other desire but to look at Him and listen to His instructions. Similar was also the desire in every other visitor too, as I observed. What else can there be that is so much expressive of greatness. He is quite averse to popular fame. I had occasions to come in touch with many great men but I felt His company extremely wonderful. How and with what endeavour could this greatness be achieved. If this were comprehensible and if it were possible to act up to this method with ease probably our mind would run after it."

Quoted from Param Kalyan Mantra

SIR PRAVA SHANKAR PATTANI
Bhawnagar

विश्व के आदर्श पुरुषो में श्री शान्ति सूरीश्वरजी श्रेष्ठ है। गुरुदेव शान्ति सूरीश्वरजी को सभी कुदरती शक्तियाँ प्राप्त है। यदि कोई मनुष्य

वास्तव मे गुरुपद का दावा कर सकता है तो श्री शान्ति सूरीश्वरजी ही है।

'उर्दू-वदेमातरम्-पत्र' पजाब केसरी
परम कल्याण मत्र स्व० लाला लाजपतराय
पुस्तक में से लाहौर

"Shree Shanti Surishwarji is really the greatest of all persons of the world. Gurudeva Shanti Surishwarji is possessed of all the divine powers. If any human soul can deserve to claim the dignity and position of being called Guru-Deva He is undoubtedly Shree Shanti Surishwarji."

Quoted from LALA LAJPAT RAI
Param Kalyan Mantra *Lahore*
Urdu Bande Matram Patra *Punjab-Keshari*

योगनिष्ठ गुरुदेव भगवान् श्री शान्ति सूरीश्वरजी के समागम में मैं पिछले छ सात साल से आया हूँ। इससे मैं अन्दाजा लगा सका हूँ कि आप श्री एक उच्च कोटि के महापुरुष है। आप श्री ने योगाभ्यास से प्राप्त होने वाली विश्वदृष्टि को पाया है। आप श्री सरल प्रकृति के एक योगपरायण सन्त पुरुष है। मैं चाहता हूँ कि अधिकारी सज्जन आप श्री के पवित्र ससर्ग में आकर आप श्री की आध्यात्मिक उच्चता से लाभ उठायें।

परम कल्याण मत्र सर दौलतसिंहजी महाराजा
पुस्तक में से लीवडी

"I have been in touch with the ascetic Bhagwan Shree Shanti Surishwarji for the last six or seven years. So I can now ascertain that He is a great man of a very high order. He has acquired the gift of omniscience through Yogic practices.

I would like every aspiring man to come in contact with His Holiness and be benefitted by His spiritual elevation."

Quoted from
Param Kalyan Mantra

SIR DAULAT SINGHJI
MAHARAJAH
Limbri

सबसे पहले मै हिज होलीनेस जगतगुरु आचार्य सम्राट् श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान् को, जो ससार मे श्रेष्ठ योगिराज है, श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूँ।

उनके पवित्र चरणो में मैं अपने आपको आत्मशुद्धि के लिये समर्पित करता हूँ। राजयोग अथवा प्राकृतिक योग सब योगो मे श्रेष्ठ है।

सद्गुरु भगवान् पर अस्खलित श्रद्धा एव भक्ति रखने से, हृदय मे प्रेम रख कर उनकी आज्ञा सम्पूर्ण रूप से मानने से, धीरे धीरे सद्गुरु भगवान् की कृपा से मुझे मोक्ष-लाभ होगा।

हे प्रभो ! आपको समझने के लिये लाखो जन्म की आवश्यकता है। यदि आपकी कृपा हो जाय तो सहज ही आपको समझा जा सकता है। आपके वचनो में सभी शास्त्रो का समावेश हो जाता है। आपका ध्येय विश्वप्रेम है। जाति धर्म और देश का भेदभाव न रखते हुए आप सभी को अपनाते है।

जो ससार में श्रेष्ठ योगिराज है ऐसे गुरुदेव भगवान् को, पाश्चात्य विद्वान् एव तत्त्वज्ञानी आकर, सिर झुकाते है, यह मैने स्वय देखा है।

अत मैं प्रेमपूर्वक प्रत्येक मित्र तथा यात्री का ध्यान आकृष्ट करता हूँ कि यदि श्री सद्गुरु भगवान् की भक्ति और उनकी दया प्राप्त हो जाय तो ससार की यात्रा का ध्येय पूर्ण हो जाता है।

ज्योर्ज ज्युटजेलर (स्वीट्जरलैंड)

First of all my humble homage and salutation to His Holiness Jagatguru Acharya Samrat Shri

Vijay Shanti Surishwarji Bhagwan, the greatest Yogiraj in the world to whose holy feet I present my soul for purification. Raj Yoga or natural Yoga is the highest Yoga of all the Yogas.

By constant devotion or Bhakti to Sadguru Bhagwan, by obeying His orders, implicitly by loving Him with all your heart, then little by little the grace of Sadguru Bhagwan will be felt on us and the salvation will be realized.

Oh! Bhagwan, it takes millions of lives of a soul to know you. Through your kindness one can easily recognise you. Your words are the essence of all the Shastras Universal love is your gospel. You welcome all irrespective of castes, creeds or nationality. I have personally seen the Philosophers and cultured men of the west coming to pay their respect at the holy feet of His Holiness the greatest Yogiraj in the world.

I therefore gladly draw the attention of all my dear friends, travellers and explorers that by seeing with devotion and attaining the benevolence of Sadguru Bhagwan, all their motto of travelling around the world will be served at this place only.

GEORGE JUTZFIAR
(*Switzerland*)

परम पूज्य विश्ववन्दनीय आचार्य सम्राट् योगीन्द्र चूडामणि श्री श्री १००८ श्री श्री श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान् के प्रति पूर्व व पाश्चिमात्य देशो के प्रसिद्ध आत्मारामजी महाराज परिव्राजकाचार्य, दर्शननिधि, एम० ए०, विद्यावारिधि, व्याख्यान वाचस्पति एव प्रसिद्ध हिस्टोरियन (इतिहासज्ञ) साउथ कनेडा का लिखा हुआ एक आदर्श चित्र

हे सद्गुरु भगवान् ! आप पवित्र से भी पवित्र हो इसलिये हे भगवन् ! आपका मिलना जगत भर के सब पवित्र पदार्थों के मिलन से भी विशेष है ।

आप एक हो, आप अनन्त हो, प्रभो ! आप शिव हो, आप शक्ति हो, आप कृष्ण हो, आप ईश्वर हो, आप निर्गुण हो और आप सगुण हो, और इन दोनो से परे हो आप पवित्र और सत्य से भी आगे हो आप बहुत ही बडे हो, आप सर्वशक्तिमान् हो, आप सर्वस्व हो और सबसे भी परे हो ।

आपको पुण्य और पाप भी स्पर्श नही कर सकते है क्योकि आप इन दोनो से परे हो ।

आपको पहचानने के लिये प्रयास करे तो लाखो जन्म की आवश्यकता है । किन्तु आपकी कृपा हो जाय तो अल्प समय में आपको पहचाना जा सकता है ।

आप जगत् के कल्याण के लिये अदृश्य रूप से विश्व के चारो ओर दिव्य सन्देश पहुँचा रहे हो ।

हे प्रभो ! हे भगवन् ! आप सर्वोपरि और देवाधिदेव हो ।

(जैनध्वज अखबार, अजमेर, ता० १–२–१९३७)

A brief note of the illustrious writings from renouned Sanatan Dharmacharya (monk) Shri

Atmaramji Maharaj Paribrajakacharya, M.A., Scholar of religious (Darshannidhi), Vidya-Varidhi and well known Historian etc. from South Canada towards Gurudev Vishva-Vandaniya Acharya Samrat Yogindra-Chudamani Shree 1008 Shanti Surishwarji Maharaj Sahib.

JAIN DHWAJA, AJMER
1*st. January* 1937

"O Lord, you are the purest and hence to see you is better than to meet all the pure things of the world combined. You are one and numerous as well. You are the Shiva and the Shakti. You are the Krishna, you are the truth and purest of the pures and beyond these also. You are higher than the highest. Almighty and All you are. Sins can never beseige you and virtues as well, as you are beyond the limit of these. It takes millions of lives of a soul to know you if one, tries this, but through your kindness, one can easily recognise you. Your words are the essence of all the Shashtras (scriptures)."

For the welfare of the all living beings you are sending your blessings through wireless around the world O Lord, you are Highest of the Highers and God of the Gods.

श्री आचार्य भगवान् माउन्ट आबू में विराजते थे उसी समय आपने वम्बई में दर्शन दिये ।

वम्बई के सुप्रसिद्ध सेठ मगलदास की धर्मपत्नी बहिन श्री सुन्दर बहिन (कच्छ-भुजपुर-निवासी सेठ देवजी टोकरशी कम्पनी, भारत बाजार, वम्बई नं० ६) तथा कच्छ दुर्गापुर निवासी, बम्बई के सुप्रसिद्ध सेठ हीरजी भाई घेला भाई की सुपुत्री को श्री जगतगुरु आचार्य भगवान् श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा दिये गये दर्शन

बहिन श्री सुन्दर बहिन ने अपने धर्मपति तथा कुटुम्ब से कहा कि श्री आचार्य भगवान् आबूजी से मुझे दर्शन देकर कह गये है इसलिये मैं सभी को जतलाती हूँ कि रविवार की रात को मैं श्री गुरुदेव भगवान् के चरणों में जाऊँगी । उसी दिन रात को बहिन श्री ने आत्मजागृति पूर्वक ध्यानस्थ अवस्था में देह त्याग किया था । बडे बडे पडित और शास्त्रकार भी समाधि मरण नही पाते, वह मरण इन बहिन श्री ने प्राप्त किया था । यदि मृत्यु की अन्तिम घडी मे शान्ति और समाधि हो जाय तो अवश्य समाधि मरण होता है । 'समाही मरण च बोही लाभो' (आवश्यक सूत्र) समाधि मरण हो और बोधि बीज की प्राप्ति हो । जिसके भव का अन्त आने वाला होता है उसको ही समाधि मरण होता है । पर वह समाधि मरण श्री सद्गुरु की कृपा विना प्राप्त नही होता । जिसका आत्मा शुद्ध और पवित्र होता है उस ही को यह प्राप्त होता है । 'भावना भवनासणी' इसलिये मरते समय शुद्ध भाव आ जाता है, उसके भव का अन्त हो जाता है । बहिन श्री का आत्मा शुद्ध और पवित्र था । 'सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ' (उत्तराध्ययन तीसरा अध्ययन) हे गौतम ! जिसका आत्मा शुद्ध और पवित्र होता है उसीमें मेरा धर्म रहता है । गीताजी में भी कहा है यदि मरण समय थोड़ी भी शान्ति प्राप्त हो जाय तो समाधि मरण होता है । जैसे कोई दिन भर घर या दूकान का काम करता रहे पर रेलगाडी छूटने के ठीक समय पर स्टेशन पर हाजिर हो

जाय तो वह गाडी में बैठ जाता है पर यदि कोई दिन भर स्टेशन पर हाजिर रहे पर गाडी छूटने के समय बाहर चला जाय तो वह गाडी चूक जाता है। इसी प्रकार यदि मृत्यु के अन्त समय शान्ति समाधि प्राप्त हो जाय तो अवश्य समाधिमरण होता है।

लि० सेठ मंगलदास C/O सेठ देवजी
कच्छ-भुजपुर
टोकरशी की क०, भारतबाजार बम्बई नं० ९

संसार की महान् विभूति

जगद्गुरु महान् योगीन्द्र विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज अभी मारवाड में सरस्वती अरण्य में विराजते है। वहाँ एक दिन एक गृहस्थ ने एक हजार मनुष्यो को आमन्त्रित किया था। किन्तु वहाँ पाँच हजार मनुष्यो के एकत्रित हो जाने से भोजन बनाने वाले चिन्तित होने लगे। योगिराज ने उन्हें विश्वास दिलाया कि तैयार किया हुआ भोजन, जितने आवेगे उन सभी के लिये पर्याप्त होगा। इस प्रकार पाँच हजार मनुष्यो के भोजन कर लेने के बाद भी और पाँच सौ आदमी धाप कर खायें इतना सामान बढा।

(साप्ताहिक, गुजराती पंच, अहमदाबाद, ता० ६-१-१९२६)

A MODERN MIRACLE-WORKER

His Holiness Yogiraj Jagatguru Acharya Samrat Shree Shanti Vijaysurishwarji Maharaj is at present at Saraswati Aranya, in Marwar, once a lonely little village of the beaten track, but now almost a township, thronged with people of all creeds who have come to pay their humble respects to the Saint.

His Holiness is said to have performed many miracles. On one occasion, it is said, a rich merchant who came for Gurudeo's Darshan invited about 1000 people to a feast, but on that day, unexpectedly, about 5000 people gathered to obtain the saint's blessings and the post was in a quantary as and how to provide them with food. But His Holiness bade him not to be perturbed and when the time came to distribute food, it was found that there was not only enough for all but also enough to feed 500 more was left over.

STATESMAN CALCUTTA
Tuesday, January 7, 1936

संवत् १९९१ की साल मे वैशाख महीने सारणपुरा (मारवाड) के समीप वीसलपुर गाँव में प्रतिष्ठा महोत्सव था। आसपास के गाँवो के मिलाकर चालीस हजार से ऊपर लोग इकट्ठे हुए थे। जगतगुरु आचार्य भगवान् उस समय वीसलपुर पधारे हुए थे। चालीस हजार से अधिक संख्या वाले इस जनसमूह के लिये आवश्यक जल का प्रवन्ध करने का कोई साधन न था। मारवाड जैसे प्रदेश और गर्मी के दिनो में पानी का कैसे प्रवन्ध किया जाय? इस सम्बन्ध में गाँव के लोग वहुत चिन्तित थे। परन्तु जगद्गुरु आचार्य भगवान् की अद्भुत आत्मशक्ति और लब्धि के प्रताप से पानी के प्राकृतिक झरने फूट पडे और जल धारा वह निकली।

आठ दिन तक अनगिनते हजारो आदमी इकट्ठे हुए। परन्तु भोजन अथवा पानी की किसी भी दिन कमी न पडी। जगतगुरु आचार्य भगवान्

की लब्धि के प्रताप से खूब आनन्द मंगल रहा। प्रतिष्ठा महोत्सव के शुभ दिवस एकत्रित हुए मारवाड के श्री संघ, कॉन्फरेन्स तथा देश-परदेश से आये हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने मिलकर जगतगुरु आचार्य भगवान् को 'युगप्रधान' पदवी से विभूषित किया। इनमे कलकत्ता के सुप्रसिद्ध जमीदार दानवीर सेठ जगतसिहजी, जिनके कुटुम्ब में वर्षों से जगत सेठ की पदवी चली आती है, अपने परिवार के साथ इस शुभ अवसर पर पधारे थे। इनके सिवा कितनेक राजकुमार तथा जोधपुर स्टेट के अग्रगण्य अफसरो के साथ असख्य जन-समुदाय उलट पडा था। उस समय का दृश्य बडा अलौकिक था उसकी दिव्यता की कल्पना वही कर सकता है, जिसने उसे आँखो देखा है।

(इलाहाबाद लीडर पत्र, ता० १५-७-१६३५ का अंग्रेजी अनुवाद)

We have received the following for publication from a correspondent.

Mysterious supply of food and water.

It was a remarkable event in the history of Jainism when several thousand Jains and non-Jains, including some recognised leaders of the Jain community attended religious ceremonies held at Bishalpur, Marwar, Erinpura Road, B. B. & C I. Ry., under the august guidance of His Holiness Vishwopkari the Blessed Yogiraj Acharya Samrat Jagatguru Yogindra Chudamani Shree Shanti Vijaysurishwarji Maharaj of Mount Abu fame. There is scarcity of water every year during the summer season in the small village of Bishalpur and on the eve of the ceremony

the people of Bishalpur naturally felt anxious as they could not see any means by which the problem of supplying water to such a vast gathering could be solved and in their anxious moments they approached Shree Gurudeoji Bhagwan. His Holiness assured them that they should not worry about the matter. In fact, when His Holiness arrived at Bishalpur, the water trouble completely vanished and an inexhaustible supply of water suddenly appeared even in those places where there was no chance of getting water. Plentiful supply of water was available at Bishalpur till the ceremony lasted. Further, on several occasions the supply of cooked food, which was considered to be insufficient for the needs of a large number of visitors who arrived unexpectedly, was found to be more than sufficient. Everyone had to believe that the supply was increased by unseen hands. Before the Jagatguru left Bishalpur, the entire assembly, headed by the Jagat-Seth from Murshidabad, conferred on him the Highest religious honour of Jainism, the great title of "Yuga Pradhan."

ALLAHABAD LEADER,
Monday July 15, 1935

श्री आचार्य भगवान् आबू में विराजते थे उस समय आपने अहमदाबाद में दर्शन दिये ।

समाधिमरण की तैयारी

आचार्य श्री विजय केशर सूरीश्वरजी महाराज को सावण सुदी १५ को दोपहर बाद बिस्तर (शय्या) में दस्त होने लगे और तीन दिन बाद खून के दस्त शुरु हो गये। इससे सभी निराश हो गये। आत्मशान्ति के लिये प्रत्याख्यान व्रत लेकर उपवास जाप वगैरह करने लगे। आपकी यह प्रबल इच्छा थी कि किसी के साथ वैर-विरोध न रह जाय, अत आप बार बार सब को खमाने लगे। पचमी के दिन दस्त बन्द हो गये। इसलिये सुबह के पहर आचार्य श्री ने बतलाया कि आज मेरे चारो आहार का प्रत्याख्यान है। आबूजी से योगिराज श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज मुझे कह गये है। महो० श्री देवविजयजी ने पूछा कि क्या आप बतायेंगे कि वे क्या कह गये है ? प्रत्युत्तर मे आपने बतलाया कि जो कह गये है वह मैं जानता हूँ।

मुझे योगिराज आबू से सूचना कर गये है इसलिये मैं आज तैयार होकर बैठा हूँ। अब मैं यहाँ थोडे घटो का ही मेहमान हूँ।

इसलिये अब तुम तैयारी करो। समय पूरा होने आया है। ऐसे हृदय-विदारक शब्द सुनकर पडित श्री लाभविजयजी ने फिर पूछा स्वामिन् ! सभी तैयार ही है। आचार्य श्री ने पुन बतलाया कि जब मैं मारवाड मे था तब मैंने योगिराज श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज से कहा था कि अन्तिम समय में मेरी खबर लेना। उसी के अनुसार वे मुझे सावधान कर गये हैं। इस समय उनकी आँखें और चेहरा खूब लाल हो गये और तेज कम होता हुआ मालूम होने लगा। सीधे बैठकर बातें करते थे सो बन्द कर मस्तक झुकाकर बैठने लगे।

इस अन्त समय में आचार्य श्री विजयनेमि सूरीश्वरजी, आचार्य श्री विजयोदय सूरि तथा आचार्य श्री सागरानन्द सूरि वगैरह अन्तिम मिलाप के लिये आ पहुँचे।

इसके वाद आचार्य श्री विजयसिद्धि सूरि तथा सेठ साराभाई डाह्याभाई और कस्तूरभाई लालभाई आये तव पुन सहज ही मस्तक उठाकर सामने देखा और हाथ जोडे। आजका दृश्य सभी को जुदा ही प्रतीत हुआ। इसलिए आचार्य श्री का सकल परिवार महो० श्री देवविजयजी, प्रखर पंडित श्री लाभविजयजी वगैरह पचास साधु साध्वी हाजिर थे और वार वार नमस्कार मत्र का स्मरण कराते थे। इसी तरह दो दो घंटो के वीच वीच में अनशन कराया जाता था। अन्त समय की अपूर्व शान्ति थी। लगभग छः वजे अन्त समय का मृत्युकालीन श्वास शुरु हुआ। सभी को ऐसा प्रतीत हुआ कि अव श्वास वदला है। यह आत्मा थोडे समय मे ही इस देह रूप पिंजरे से स्वतन्त्र होने वाला है। श्रावको में से नगरसेठ विमलभाई मयाभाई, साराभाई मयाभाई तथा उनकी मातु श्री मुक्तावहिन भी वार वार खवर लेने के लिए आने लगे।

श्रावण वदी पाँच की सन्ध्या को ठीक छः वजकर पैंतीस मिनिट पर गर्दन ऊँची कर सीधे ध्यानावस्था में वैठे और पौने सात वजे अन्तिम श्वास की दो हिचकी ली और तीसरी हिचकी के साथ उनकी अजर अमर आत्मा, हजारो लोगो को शोक ग्रस्त कर, यह देह पिंजर छोड गया। आखिर यह तेजस्वी तारा खिर गया। दुनिया में व्यक्ति की आवश्यकता उसके होते हुए शायद कम भी मालूम हो पर उसके अभाव मे उसकी कीमत का खरा अन्दाज लगता है। उसकी कमी कभी पूरी नही होती। इस शासनस्तम्भ के चले जाने पर उसकी कमी को पूर्ण करना कठिन था। हजारो भव्यात्माओ को उपदेश देकर धर्म मार्ग मे प्रेरित करने वाले ऐसे आचार्य श्री की यह मृत्यु जैन-समाज के लिये महा दु.खरूप थी।

(उपरोक्त लेख श्री वृहत् जीवन प्रभा तथा आत्मोन्नति वचनामृत नामक पुस्तक में से लिया गया है। पृष्ठ ३५२। लेखक देवविनोद आदि अनेक ग्रथो के कर्त्ता आचार्य देव श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी

महाराज)पुस्तक का प्राप्ति स्थान शा० सदुभाई तलकचन्द, रतनपोल में वाघणपोल, अहमदावाद।

श्री उमेदपुर नगर में अजनशलाका व प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्त 'श्री सघ आमत्रण पत्रिका' में से लिये हुए उद्‌गार

वीर सवत् २४६४ विक्रम संवत् १९९५ मगसिर वदी ७ सोमवार ता० १४–११–१९३८

हमारे सद्भाग्य से तीन इच ऊँची श्री अमीझरा उमेद पूरण पार्श्वनाथ भगवान् के सहस्रफणा और अति आकर्षक विम्ब की अजनशलाका विक्रम स० १९९१ की माघ सुदी पचमी के दिन पूज्यपाद प्रात स्मरणीय, जगत-वन्दनीय, जगतगुरु, अनन्तजीव प्रतिपाल, राजराजेश्वर, योग लब्धि-सम्पन्न, योगीन्द्र चूडामणि आचार्य भगवान् श्री श्री श्री १००८ श्री श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महान् योगिराज के पवित्र कर कमलों से श्री वामणवाडजी तीर्थ में हुई थी। उस समय आप श्री के आशीर्वाद के अनुसार श्याम प्रतिमाजी के स्थान स्थान पर, अजनशलाका के पूर्व जो छींटे थे, वे मिट गये और नेत्रो से अमी झरती हुई देखने मे आई है। ऐसे महाप्रतापी जिन विम्व को नूतन श्री जिन चैत्य में सिहासन पर विराजमान करने की तथा नूतन श्री जिन विम्वो के अजनशलाका की महत्त्वशाली क्रियाएँ इन्ही परमपूज्य महान् योगिराज के पवित्र कर कमलो से होगी।

लीं० ४८ गामो के पंचो की सही, मु० श्री उमेदपुर
जैन वालाश्रम, उमेदपुर, वाया-एरनपुर

आबू में विराजते हुए जगतगुरु आचार्य सम्राट् श्री १००८, श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी महाराज ने हैदराबाद सिन्ध में अपने एक भक्त को अग्निदाह से बचाया।

सवत् १९९३ भाद्रपद कृष्ण ५ को स्वर्गीय योगनिष्ठ महात्मा आचार्य श्रीविजयकेसरसूरीश्वरजी महाराज की जयति हैद्रावाद (सीध) के प्रसिद्ध

धनकुबेर सुविख्यात पहुमल ब्रधर्स नामी फर्म के मालिक सेठ कीशनचदजी पहुमल की अध्यक्षता मे बड़े समारोह के साथ मनाई गई।

आपने अपने भाषण में अपने अनुभव का एक उदाहरण दिया और कहा कि मैं अपने निवास स्थान पर आराम से सो रहा था। रात्रि को अचानक इलेक्ट्रिक वायरींग मे आग लग गई। मैं गम्भीर निद्रा में मग्न था, मुझे आग लगने की बात कुछ भी मालूम नही पडी थी, एकाएक आचार्य भगवान् ने दर्शन देते हुए मुझको चिताया कि उठो तुम्हारे घर में आग लग गई है यह सन्देश सुना तो मै घबरा कर उठा, आग लगती हुई देखी। गुरुदेव भगवान् की कृपा से मेरे तथा अन्य बहुत से नर नारियो और बच्चो के प्राण बच गये। मैने श्री गुरुदेव भगवान् से कहा कि आपने जीवन दान दिया। श्री गुरुदेव बोले तुम अनन्य भक्त हो।

पश्चात् सेठ साहेब ने कहा कि जिसको समाधि मरण होता है वह अवश्यमेव उच्च गति को प्राप्त होता है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हमने "श्री बृहत् जीवन प्रभा" के पृष्ट ३५२-३५३ में पाया है।

एक समय केसरविजयजी ने गुरुदेव भगवान् को फरमाया कि यह जीव तो अनादि काल से फिर रहा है। अगर समाधि मरण हो जाय तो कल्याण हो जाय, इसलिये अन्तिम समय मे आप हमारी खबर जरूर लीजियेगा क्योकि जिसका अन्त सुधरा उसका भव का फेरा मिट जाता है।

आबू मे विराजते हुए हमारे पूज्यवर श्री गुरुदेव भगवान् ने अहमदावाद में विराजते हुए योगनिष्ठ महात्मा श्री विजयकेसर सूरिजी महाराज को उनके देहावसान की सूचना दी कि आपका अन्तिम समय आ गया है, समाधि मडित मरण करो। आचार्य श्री ने इस सन्देश के प्राप्त होने के साथ अपने अन्तिम समय की तैयारी की और ध्यानस्थ अवस्था मे देह त्याग किया।

(ऊपर का लेख श्री हैदराबाद बुलेटीन ता० १०—१०—१६३६ के अंग्रेजी अखबार में से लिया गया है। ठि० सिकन्दराबाद, दक्षिण)

How His Holiness Jagat Guru Achaiya Samrat 1008, Shree Bijay Shanti Surishwarji Bhagwan while staying at Abu had saved one of His disciples from burning by fire at Hyderabad (Sindh).

"On the fifth day afet the Full Moon in the month of Bhadrapada in Sambat 1993 the anniversary Jubilee of the late Yogi Mahatma Achaiya Shree Bijay-Keshar Surishwarji Maharaj was celebrated with great pomp under the aegis of Seth Kishanchandji Pohumal, proprietor of the reputed well-established firm under the style of Messrs. Pohumal Bros. Citing an example of his own experience he said in course of his speech, "I was sleeping comfortably in my own home. At night the electric wire suddenly caught fire while I was fast asleep fully unaware of the electric conflagration. All of a sudden Shree Achaiya Bhagwan made His appearance before me and roused me up from my sleep saying, 'Get up, your house is on fire.' At this I rose up in confusion and saw the fire. Through the grace of Guru-Deva Bhagwan the lives of myself and many other men, women and children were saved. I said to Bhagwan Gurudeva, 'You have given me my life,' at which He replied, 'You are my steadfast disciple.'"

Later on Seth Sahib had said, "He who dies

in a reverie must have attained spiritual greatness. I have had glowing examples of this in Shree Brihat Jiwan Prava at pages 352-353."

Once Keshar Bijayji had said to Gurudeva, "'This created being is in existence since the beginning of creation. If death in a reverie is attained it would mean a great blessing. So at the time of my death do please inquire about me since it is a fact that whosoever is chastened at the end must escape from the cycles of birth and re-birth."

"While staying at Abu our Pujya Shree Gurudeva Bhagwan had intimated to Yogi Mahatma Shree Bijay Keshar Surijı at Ahmedabad the previous indication of the latter's demise and informed him that his last day had drawn near and so asked him to prepare for death in a reverie. Immediately on receipt of this information Acharya Shreeji made a preparation for his last moment and breathed his last even while he was in a reverie."

गुरुदेव गुरु भगवान् है। आध्यात्मिक गुरु है।
(नीला क्राम कूक, ली फरमेन, इन्क न्यूयोर्क, द्वारा लिखित
My Road to India नामक पुस्तक के १७० पृष्ठ पर)

"My Road to India."

By :

Nilla Cram Cook

On Page 170 Lee Furman, Inc.

New York.

"Gurudeo is Guru God. Divine Guru."

Illustrated weekly आदि कई अंग्रेजी पत्रो मे श्री गुरुदेव भगवान् महायोगिराज जगद्गुरु आचार्य सम्राट् महाराज साहेब के फोटो के साथ, पुर्तगाल निवासी दार्शनिक एव अन्वेषक डा० जोस रोड्रिगेस द्वारा लिखित, यह लेख प्रकाशित हुआ। यही लेख दुबारा दैनिक नवयुग (हिन्दी), दिल्ली के ता० १२ जुलाई १६३५ के अक में प्रकाशित हुआ।

महान् योगिराज श्री आचार्य सम्राट् जगद्गुरु श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज योग सस्कृति के तात्त्विक विद्वानो में से एक है। योग के अनुयायी प्राकृतिक नियमो द्वारा अद्भुत वस्तुएँ उत्पन्न कर सकते है जिन्हें साधारण लोग जादू समझते है। किन्तु वास्तव में वे जादू से उत्पन्न नही होती।

योग की शक्ति द्वारा असम्भव बाते सम्भव की जा सकती है। आगे चलकर पुर्तगाल निवासी महाशय लिखते है

अतएव मै प्रसन्नता पूर्वक अपने सभी प्रिय यात्री मित्रो एव अन्वेषको का ध्यान इस ओर आकृष्ट करता हूँ कि श्री योगिराज के भक्तिपूर्वक दर्शन करने एव उनका अनुग्रह प्राप्त करने से विश्व में सर्वत्र यात्रा करने के उनके सही उद्देश्य केवल इसी एक स्थान पर सिद्ध हो जायँगे।

'जैनध्वजा', अजमेर

१६-१२-३६

In certain English Newspapers such as the illustrated weekly with a photo of Shree Gurudeo Bhagwan Greatest Yogiraj Jagatguru Achaiya Samrat Maharaj Sahib as written by Dr. Jose Rodrigues, the Portugese Philosopher and explorer. This was again published in Daily Nava Yug (Hindi) of Delhi, dated 12th July, 1935.

"Greatest Yogiraj Shree Acharya Samrat Jagatguru Shree Vijay Shanti Surishwarji Maharaj is one of the true scholars of Yoga culture. Followers of Yoga can produce, by natural laws, phenomena which the initiated people believe to be magic, but actually these are not by magic.

Impossible things can be made possible by the powers of Yoga Further the Portugese Gentleman says·

"I therefore gladly draw the attention of all my dear friend-travellers and explorers that by seeing with devotion and attaining the benevolence of Shree Yogiraj, all their motto of travelling around the world will be served at this place only"

JAIN DHWAJA, AJMER
16-12-36

"TANTRIK YOGA" (HINDU & TIBATAN)
By
J. Marques-Riviere, Member of the Asiatic Society
Publisher. Rider & Co.
Paternoster House, Paternoster Row.
London, E. C 4.

TO MY GURU,

"I wish to dedicate this first volume of the "Asia" series to Guru Shree Vijay Shanti Surishwarji

Maharaj whom I met in India and who gave me peace.

Defination of self realization.

In most obedient respect,

April, 1940 J. M. Riviere

हिन्दू और तिब्बत का तान्त्रिक योग, लेखक जे मारक्वेस राइवीरे, सदस्य एशियाटिक सोसाइटी, प्रकाशक राइडर एन्ड कम्पनी, पेटर-नोस्टर हाउस, पेटर नोस्टर रो, लन्दन ई० सी० ४ का समर्पणपत्र।

मेरे गुरु की सेवा में

'एशिया' ग्रन्थमाला के इस प्रथम भाग को मैं गुरु श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज को समर्पित करना चाहता हूँ। भारत में मैंने आपके दर्शन किये और मुझे आपसे शान्ति प्राप्त हुई।

आत्मज्ञान की व्याख्या।

एप्रिल १९४० } अत्यधिक विनम्रभाव से सम्मान के साथ
जे० एम० राइवीरे

आचार्य देव की स्तुति

(रचयित्री परम विदुषी, प्रखर पंडिता श्री हीराकुंवर बहिन, न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ, वेदान्ततीर्थ, सांख्यतीर्थ, कलकत्ता)

त्रोटकवृत्तम्

समतारस धाम ! गुरो ! समतां, विदधातु सदा मम चित्तकजे ।
तम संशय नाशनभानुसमः, गुरुशान्ति मुनीश ! जयोऽस्तु सदा ॥१॥

अर्थ समता रस के धाम हे गुरुदेव ! मेरे चित्त रूपी कमल में समता भाव उत्पन्न करिये । हे गुरुदेव ! शान्ति मुनीश्वर ! आप संशय रूप अन्धकार को हटाने मे सूर्य सदृश हैं । हे भगवन् ! आपकी सदा जय हो ।

समशान्तसुधोरस भावमयं, जगताप विनाशन मेघ समम् ।
जन दुःखहर मधुर सुखदं, जग पूजित देव ! तवोऽस्ति वचः ॥२॥

अर्थ विश्वपूज्य हे गुरुदेव ! समभाव एव शान्तिप्रधान आपका वचन सुधारस रूप है एव भावमय है । जगत के ताप को शान्त करने में वह मेघ के समान है । वह मनुष्यो के दुख दूर करने वाला है, मधुर है और सुख का देने वाला है ।

भवरोगलयं शिवशान्तिकरं, भयशोकशमं यशहर्षप्रदम् ।
भुवनार्त्तिहरं जनकामभरं, जगपूज्य सदा तव भक्ति रसम् ॥३॥

अर्थ जगत् के पूज्य हे गुरु भगवन् ! आपका भक्तिरस ससार रूप रोग का नाश करने वाला और शान्ति एव कल्याण का देने वाला है । इसके प्रभाव से भय और शोक का शमन हो जाता है एव यश तथा हर्ष

की प्राप्ति होती है। यह ससार के दुख का हरण करने वाला है एव भक्त की कामना को पूरी करता है।

जगतारक ! तापितशान्तिकर ! शरणागतपालक ! शान्तिगुरो।
कमलोपम कोमल पादयुगे सकलार्पितभक्तजनाः प्रमुदा ॥४॥

अर्थ विश्वतारक, सतप्त प्राणियो को शान्ति देने वाला, शरणागत की रक्षा करने वाले, हे शान्ति गुरुदेव ! आपके कमल जैसे सुकोमल चरणो मे भक्त लोग आनन्दपूर्वक अपना सर्वस्व अर्पण करते है।

वसंततिलकावृत्तम्

अज्ञानतामसमपाकरणे प्रदीप !
ससारपारकरणे मम पोततुल्यः।
भक्तेप्सितप्रददने सुरवृक्ष ! नौमि
सूरीश ! शान्तिगुरुदेव, तवाङ्घ्रिपद्मे ॥५॥

अर्थ अज्ञानान्धकार को दूर करने मे दीपक स्वरूप हे गुरुदेव ! ससार से मुझे पार पहुँचाने के लिये आप जहाज समान है। भक्तो की मनोकामना पूर्ण करने मे कल्प वृक्ष रूप हे सूरीश्वर ! हे शान्ति गुरुवर ! मै आपके चरण-कमलो मे नमस्कार करती हूँ।

शिखरिणी वृत्तम्

सदा विश्वप्रेमी वितरति मुदा प्रेमसुपयः।
जनानां तप्ताना शमयति गुरुस्तापदहनम् ॥
सुपुष्पैर्माडोल्या चरणयुगले भक्तिसहितम्।
प्रभोः सम्राट् शान्तेर्भवतु शतशः हीरकनतिः ॥६॥

अर्थ हे गुरुदेव ! आप विश्वप्रेमी है। सदा आनन्दपूर्वक प्रेमामृत का वितरण करते है। त्रिविध ताप से जलते हुए लोगो के तापरूप अग्नि को आप शान्त कर देते है। हे सूरि सम्राट् ! शान्ति गुरुदेव ! सुपुरी

मांडोली के मध्ये, आपके पावन चरण कमलो में हीरा वहिन भक्ति पूर्वक शतशः नमस्कार करती है।

गुरु स्तुतिः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥

अर्थ गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु हैं और गुरु ही महादेव हैं। साक्षात् परब्रह्म भी गुरुदेव ही है। ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार हो।

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

अर्थ ज्ञान रूपी अजन की शलाका द्वारा जिसने अज्ञान तम से अन्धे वने हुए की आंख खोल दी ऐसे श्री सद्गुरु को नमस्कार हो।

स्थावरं जंगम व्याप्तं यत्किंचित् सचराचरम्।
त्वं पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थ स्थावर और जगम जीवो से व्याप्त जो यह चराचर जगत् है उसको जिसने त्व पद अर्थात् आत्मा रूप से दिखलाया ऐसे श्री गुरु भगवान् को नमस्कार हो।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थ जो ज्ञान रूप से अखण्ड मण्डलाकार चराचर जगत् में व्याप्त है उसके (परमेश्वर के) स्थान को अर्थात् मुक्ति पद को जिसने बतलाया ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार हो।

चिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
असि पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थ राचराचर अखिल त्रिलोकी में जो ज्ञान रूप से व्याप्त है ऐसे 'असि पद' रूप परमात्मस्वरूप का जिसने दर्शन कराया ऐसे श्री सद्गुरु को नमस्कार हो।

निर्गुणं निर्मलं शान्तं जङ्गमं स्थिरमेव च।
व्याप्तं येन जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अर्थ निर्गुण, निर्मल, शान्ति स्वरूप परमात्म तत्व को, जिससे सारा स्थावर और जंगम जगत व्याप्त है, दिखलाने वाले श्री गुरुदेव को नमस्कार हो।

विषय-सूची

प्रथम पंक्ति

स्तवन-कुंज

काठियावाडस्थ श्री स्थानकवासी लीम्बडी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध
वक्ता व्याख्यान दिवाकर पूज्य श्री नानचद्रजी
महाराज साहेब द्वारा बनाये हुए भजन

(१)

श्री सद्गुरु प्रार्थना पद

(हरि गीत)

हे नाथ ग्रही अम हाथ रहीने, साथ मार्ग बतावजो ।
न भूलिये कदी कष्टमा पण, पाठ एह पढ़ावजो ॥
प्रभो असत आचरता गणी, निज बाल सत्य सुणावजो ।
अन्याय पाप अधर्म न गमे, स्वरूप ए समझावजो ॥
बगड़े न बुद्धि कुटिल कार्ये, बोध एह बतावजो ।
विभू जाणवानो अजब रीते, जरूर जरूर जणावजो ॥
सहु दूषित व्यवहारो थकी दीन-बन्धु दूर रखावजो ।
छे याचना अम कर थकी, सत्कार्य नित्य करावजो ॥
विभू सत्य न्याय दया विनय जल हृदय मा बरसावजो ।
बदनाम काम हराम थाय न, टेक एह रखावजो ॥
हे देव ना पण देव ! अम उर प्रेम पूर बहावजो ।
पापाचरण नी पापवृत्ति हे दयाल ! हटावजो ॥
सुख सम्प सज्जनता विनय यश रस अधिक विस्तारजो ।
सेवा धर्म ना शोख अम अणु अणु विषे उभरावजो ॥
शुभ सन्त शिष्य सदाय श्रेयो एह विवेक वधारजो ।
आनन्द मंगल अर्पवानी अर्ज ने अवधारजो ॥
ओ शान्ति ! ओ शान्ति !! ओ शान्ति: !!!

(૭)

ગજલ

જગત મા શાન્તિ કરવાને ।
જગત ને બોધ દેવાને ।
લઈ સદેશ પ્રભૂજી નો
અવનિ માં શાન્તિ અવતરિયા ॥૧॥

ભૂલેલા માર્ગ બતલાવા ।
શાન્તિ ના સૂત્ર સમઝાવા ॥
અહિંસા ઔષધિ પાવા ।
અવનિ માં શાન્તિ અવતરિયા ॥૨॥

વધ્યા છે વેર ને ઝેરો ।
અનાચારો બહુ જગમાં ॥
નયન થી ન્યાય નિરખાવા ।
અવનિ માં શાન્તિ અવતરિયા ॥૩॥

ધર્મ ના નામ ના ઝગડા ।
પરસ્પર દ્વેષ ના રગડા ॥
કલા થી કાઢવા મારે ।
અવનિ માં શાન્તિ અવતરિયા ॥૪॥

મહામુશ્કેલીઓ સેવી ।
ધીરજતા રાખવી કેવી ॥
બતાવા જગત ને જાતે ।
અવનિ માં શાન્તિ અવતરિયા ॥૫॥

जीवनुं केम आ जग मां ।
वहे केम प्रेम रग रग मां ॥

भणावा प्रेम ना पाठो ।
अवनि मां शान्ति अवतरिया ॥६॥

भणावा शान्ति ना पाठो, अवनि मां शान्ति अवतरिया ॥

सतशिष्य नानचंद्रजी महाराज

(३)

राग भीम पलाश

क्यां मलशे हवे क्यां मलशे ए संतशिरोमणि क्यां मलशे ॥
जे शान्त रसे थी भरीया छे, गुरु दया क्षमा ना दरिया छे ।
जे शान्ति पद मां ठरिया छे, ए शान्ति सूरीश्वर क्यां मलशे ॥१।
दुःख सहेवा मां पृथ्वी जेवा, जल वृक्षो जेम करे सेवा ।
एने पर दुःख हरवा ना हेवा, ए सन्त शिरोमणि क्यां मलशे ॥२॥
पापी ना पाप तजावे छे, नित्य ज्ञान जले नवरावे छे ।
शान्ति ना पाठ पढ़ावे छे, ए सन्त शिरोमणि क्यां मलशे ॥३॥
जे अखूट शान्ति ना धरनारा, उद्धार अधमनो करनारा ।
दलितो ना दुःख ने दरनारो, ए सन्त शिरोमणि क्यां मलशे ॥४॥
आशा न थी अन्य तणी करता, डूब्या ने करी दे छे तरता ।
अमृत मुख थी रहे छे झरता, ऐ शान्ति सूरीश्वर क्यां मलशे ॥५॥
सहु जीवो ने निज सम जाणे छे, निज पर ना पापो टारे (टाणे) छे ।
सन्त शिष्य शान्ति ने चाहे छे, ए जगत गुरु हवे क्यां मलशे ॥६॥

कविवर्य नानचंद्रजी महाराज साहेब

(૪)

રાગ શું કહું કથની મારી

સદ્‌ગુણ રસ થી સુધારી નાથ !
તારક લ્યો હવે તારી ॥ ટેર ॥

મૈત્રી ભાવ સદા રહે મન મા,
દુશ્મનતા દૂર થાઓ ।
નિરખી પરના ગુણ અમ અન્તર,
પ્રસન્નતા પસરાઓ, નાથ ! તારક ॥૧॥

દોષ નહીં દેખાય દૃષ્ટિમાં
ઉચ્ચ ગુણો ઉભરાવો ।
ઈર્ષા માત્ર ન ઉપજે એવા
વાદલ ને વરસાવો, નાથ ! તારક ॥૨॥

ગમે ન પરની નિન્દા કરવી
દૂષણ માત્ર દબાઓ ।
ભિન્ન પણાનો ભાવ મટીને,
નિજ રૂપે નિરખાવો, નાથ ! તારક ॥૩॥

સન્ત શિષ્ય વિનવે કર જોડી
એ અરજી અવધારો ।
પૂરણ વિવેકી પ્રભૂ બનાવી
વિરોધ કરતાં વારો, નાથ ! તારક ॥૪॥

(५)

राग आशा

आ दिवसो छे अन्तर पट ना ।
भेद तजी तजी ने खमवाना ॥ आ० ॥१॥

आज सुधी नथी नम्र थया त्यां ।
नम्र बनी दिन छे नमवाना ॥ आ० ॥२॥

श्रवण मर्न नथी शुद्ध करेला ।
हृदय तणा पट मा रमवाना ॥ आ० ॥३॥

उत्तम मां उत्तम आ दिवसो ।
वैर विरोध विषय वमवाना ॥ आ० ॥४॥

सर्व जीवो ने मित्र बनावी ।
दिल ना दुश्मन छे दमवाना ॥ आ० ॥५॥

सन्त शिष्य जे सरल सुबोधी ।
ए गुणी जन प्रभु ने गमवाना ॥ आ० ॥६॥

——कविवर्य नानचद्रजी महाराज साहेब

(६)

राग हृदय मन्दिर एनुं रलिया मणुं रे

दयादृष्टि गुरुवर दास पर राखजो रे,
नम्र विनती करुं छु बारम्बार । दयादृष्टि० ॥१॥

प्रभु वेद तणा भेद नथी जाणतो रे,
नथी जाणतो स्वरोदय नो सार । दयादृष्टि० ॥२॥

મને યમ નિયમ આસન આવડે નહીં રે,
નથી વિદ્વત્તા ભરેલા વિચાર । દયાદૃષ્ટિ० ॥૩॥

ક્રિયા કાંડ માં હું કશું સમજું નહીં રે,
ગુપ્ત ભેદ નો ન હૂં ભણનાર । દયાદૃષ્ટિ० ॥૪॥

આપ ભજન બિના અન્ય આવડે નહીં રે,
નિરાધાર ના અસલ છો આધાર । દયાદૃષ્ટિ० ॥૫॥

ઝાંઝાં શાસ્ત્ર ને સિદ્ધાન્ત નથી જાણતો રે,
સદા આપનું સ્મરણ કરનાર । દયાદૃષ્ટિ० ॥૬॥

આપ બિના મને અવર નથી આશરો રે,
સંત શિષ્ય તણા હૃદય શણગાર । દયાદૃષ્ટિ० ॥૭॥

કવિવર્ય નાનચન્દ્રજી મહારાજ સાહેબ

(७)

राग भीमपलाश

श्री शान्ति गुरु के चरणो में
नित उठ शीश नमाता हूँ ।
मेरे मन की कलि खिल जाती है
जब दर्श गुरु का पाता हूँ ॥१॥ टेर

मुझे शान्ति नाम ही प्यारा है
इस ही का मुझे सहारा है ।
इस नाम में ऐसी बरकत है
जो चाहता हूँ सो पाता हूँ ॥२॥

જબ યાદ तेरे ગુણ આતે हैं
दुःख दर्द सभी મિટ જાતે हैं ।
मैं બનકર મસ્ત દીવાના ફિર
બસ ગીત तेरे ही ગાતા हूँ ॥૩॥
ગુરુરાજ તપસ્વી મહાયોગી
શિર तार हो तुम મહારાજો के ।
मैं एक છોટા सा सेवक हूँ
કુછ કહતા હુઆ શર્માતા हूँ ॥૪॥
ગુરુ-ચરણો में हैं अर्ज यही
બઢતી दिन રાત रहे भक्ति ।
મેરા માનુષ જનમ સફલ होवे
यही भक्ति કા ફલ ચાહતા हूँ ॥૫॥

કવિવર્ય નાનચંદ્રજી મહારાજ સાહેબ

(૮)

રાગ ધનાશ્રી

સતસંગ થી સુખ થાય, જીવન માં સતસંગ થી સુખ થાય ।
સતસંગ થી સુવિચારો ઉપજે
મન માં શાન્તિ જણાય । જીવન માં૦ ॥૧॥
સતસંગી ની પ્રિયકર વાણી ।
સુણતાં પોપ પલાય । જીવન માં૦ ॥૨॥
ધર્માધર્મ ના મર્મ સહજ મા
સતસંગે સમજાય । જીવન માં૦ ॥૩॥
આવે વિનય વિવેક સુવિદ્યા
મળે શિવપદ સુખ ધામ ॥ જીવન માં૦ ॥૪॥

महाराणा श्री जयवन्तसिह जी रणमल सिहजी, ठाकुर साहेब,
साणद (गुजरात) स्वस्थान आणद और कोट
द्वारा बनाये हुए भजन

श्लोक

सौम्याति सौम्य सुशील सरल स्वभावं ।
यस्यास्ति विश्व निखिले तु अभेद भावं ॥
प्रशान्त ध्वान्त मतिकान्त सुशान्तरूपं ।
नमामि तं विजयशान्तिसूरीन्द्र भूपम् ॥

अर्थ सौम्य से भी सौम्य, सुशील, सरल स्वभाव वाले, अखिल विश्व मे अभेद-भाव रखने वाले, अज्ञानाधकार को नाश करने वाले, कान्ति (सुन्दर) एव शान्त स्वरूप वाले श्री विजय शान्ति सूरीन्द्र महाराज को मै नमस्कार करता हूँ ।

दोहा

कनिष्ट लोह कचन करे, पीरस प्रबल प्रताप ।
(पण)पत्थर को पारस करे, गुरु अद्भुत पारस आप ॥
देख्यो मै दिलदार अवधूत एक आबू महीं ।
साचे सन्त सरदार शान्ति सदन शान्ति सूरी ॥

राग आशावरी

तरस लगी मोहे गुरु दरशन की ।
सुन्दर साँवरी सूरत सरस की ॥ तरस० ॥१॥
कोटी किनी मेरी कोउ बनत ना ।
बीनती न मानस बरसो बरस की ॥ तरस० ॥२॥

एरी सखी ओ दिन कब आवे।
बातें करे कछु अरस परस की ॥ तरस० ॥३॥
गुरु चरनन में पीयुष बरसे।
प्यास बुझे सखी चरन परस की ॥ तरस० ॥४॥
बरसत नैना थरकत बैना।
हद न रहे जभी हिये में हरष की ॥ तरस० ॥५॥

(१)

राग नागर वेलीओ रोपाव

तुमने वळी वळी लागुं पाय, दर्शन आपोने भगवान,
तुमने पडी पडी लागुं पाय, दर्शन आपोने भगवान।
तुमारा दर्शन करवा काज, भक्तो आव्या छे बहु साथ जो।
तुमने फरी फरी लागुं पाय, दर्शन आपोने गुरु राय।
तुमारी शांत मुद्रा जोइ, हमारा पाप नांखे धोइ जो,
तुमने वळी वळी लागुं पाय, दर्शन आपोने भगवान।
तुमारी प्रेम मूर्ति जोइ, हमारुं मनडुं जाय मोही जो,
तमने वंदन वारंवार, दर्शन आपोने भगवान।
मुख दीठे सुख उपजे, दरीशने अति आनंद जो,
तमने वंदन कोटी हजार, दर्शन आपोने भगवान।
तुं गति तुं मति आशरो, हम हैयाना हार जो,
हम भक्तोना छो प्राण, दर्शन आपोने भगवान।
तुम मूर्तिने निरखवा, हम नयनो बहु तलसे जो,
हम पर कृपा करो भगवान, दर्शन आपोने भगवान।
पंचम काले पामवो, दुर्लभ तुम दीदार जो,
तुम दर्शन थी दुःख जाय, दर्शन आपोने भगवान।

दूर देशावर थी अमो आव्या, महिमा गुणी तुमारी जो,
तुमारो महिमा अपरंपार, दर्शन आपोने भगवान।
भाव भक्ति थी गुरु गुण गाइए, भवतो जन्म सुधार्या जो,
भक्ति देजो अपरंपार, दर्शन आपोने भगवान।

रचयिता सत शिशु

(२)

राग कवाली

शांति गुरु श्री प्यारे चरणों में शीश नवाऊं।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊं।
माथे पै तू हो चंदन, छाती पै तू हो माला।
जिह्वा पै गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊं।
सेवा में तेरी सारे, तन को मैं भूल जाऊं।
वह पुन्य नाम तेरा, प्रतिदिन सुनूं सुनाऊं।
तेरे ही काम आऊं, तेरा ही मंत्र गाऊं।
मन और देह तुझपै बलिदान मैं चढ़ाऊं।

(३)

राग मालकोस त्रिताल

मोरी लागी लगन गुरु कीर्तन की। टेक।
गुरु कीर्तन बिन कुछ नहि भावे,
आत्मिक ज्योति प्रकाशन की। मोरी०।
भवसागर अंधेरा घहेरा
गुरु दीपक से तरनन की। मोरी०।

भोगी दीपक गुरु शांति सूरीश्वर,
व्याकुलता तुम दरशन की। मोरी०।

(४)

राग मोंघामुला महेमान हमारा केम करी दइए विदायरे

मोघा मूली गुरु पूर्णिमाने आज उगी हैयाना आकाश रे
गुरुजीना पूजन करोरे।

वीती अज्ञान फेरी रातडीने वीती अधर्म फेरी अमासरे गुरु०
वेद पुराण आगमे कथ्या, दिव्य गुरु पुनमना प्रकाशरे गुरु०
महिमा महेश शेष कथि शक्या, नव गुरु पुजनना खासरे गुरु०
पूरण कलाए पूर्णिमा पूरण, गुरु भक्ति रस दासरे—गुरु०
गुरुना वेच्या वेचाइए, एवी श्रद्धा स्वार्पण गुरु दासरे गुरु०
गुरु कृपाए प्रभु प्रगटता, भक्त अंतरीए दिव्य उजासरे—गुरु०
तप त्याग योग धर्म सिद्धिओ, सौनो गुरु भक्ति मां वासरे गुरु०
वाणी गुरुनी जीवती गणी, ईश्वर वाणी विश्वासरे गुरु०
कोटी शास्त्रोना ज्ञान पामतोरे, गुरु सेवाथी भक्त श्वासोश्वासरे गुरु०
पूरण ब्रह्म फेरी भावनारे, करो चेतन गुरु मां बनी दासरे- गुरु०
ज्योति अनंतनुर झलहले, भक्त नयने गुरु वासरे गुरु०
हैयाने कोडीए भक्ति दिवट, घृत स्वार्पणने कांइ विश्वासरे गुरु०
सेवाना वारी नयन झारीए, करो नाथ चरण प्रक्षालरे गुरु०
कचोलां केसर बरासना, भर्या गुरु पूजनने काजरे- गुरु०
उजवीए एवी गुरु पूर्णिमा, नाथ आवजो असाडी लोमासरे गुरु०
नाचे मणि बुद्धि सिन्धु मां, आज आतम राग रमे रासरे—गुरु०

(५)

મારા પ્રેમી ભક્તો સહુ આવજો હો રાજ,
જંગલ મા યોગીની ઝુંપડી
આબૂ માં યોગીની ઝુંપડી। મારા પ્રેમી०

કોઈ સાથે આવે તો તેડી લાવજો હો રાજ,
આબૂ મા યોગીની ઝુંપડી।

નિર્મલ જલ મા ઝીલશું, કરશું અમીરસ પાન,
ભોજનીયા મન ભાવતાં, ભજીશું શ્રી ગુરુરાજ।

કાયા પિંજરને પ્રેમ થી પખાલશું હો રાજ,
જંગલ માં યોગીની ઝુંપડી।

કોટી જન્મના પુણ્ય થી, મલ્યા શ્રી ગુરુરાજ.
ભાવ ધરી ગુરુ ના ભેજ્યા, લાખો વાર ધિક્કાર।

તુંહી ગુરુ તુંહી પ્રભુ માનશું હો રાજ જંગલ માં।
મારા શાન્તિ સૂરી ને મન ભાવશું હો રાજ જંગલ માં।

પ્રેમ બિના ગુરુ નવ રીઝે, મુક્તિ કદી નવ થાય,
પૂરણ પ્રેમ જો હોય તો, મોક્ષ માંહી જવાય।

પ્રેમ દરીયામાં નાવડું ઝુકાવશું હો રાજ જંગલ માં।
એક એકના ઉમલકા ખોલશું હો રાજ જંગલ માં।

એક પલ જાએ લાખની, ભજી લ્યો શ્રી ગુરુરાય!
જો જો આ ભવ ભુલતા મલશે નહીં ફરિવાર।

ભક્તોની વિનતી છે એવી હો રાજ—જંગલ માં।
પ્રેમ ભક્તિમાં મનડું જોડશું હો રાજ જંગલ માં।

(६)

देखो મેરે સદગુરુવર ने, કૈસા ધ્યાન જમાયા है।
પ્રેમ ભરી આઁખો में देखो, કરુણારસ ઉભરાતા है। देखो०।

જડ ચેતન का ભેદ બતા के આત્મ રુપ દિખાતા है।
શાંતિ સુધારસ પાન પિલા के આતમ શાંતિ દેતા है। देखो०।

રાગ દ્વેષ की જ્વાલા પ્રગટે, ઇનકો वो મિટાતા है।
ક્રોધ માન માયા को पीस के, અંતર રોગ હટાતે है। देखो०।

મૈત્ર્યાદિ ભાવ બઢે જગત में, वो ધ્યાન નિશદિન ધરતે है।
ધ્યાનાગ્નિ से કર્મ જલાકર, જગ में શાંતિ फैलाते है। देखो०।

તન મન ધન અર્પણ કર ગુરુ को, ભક્તિ માર્ગ वो पाते है।
ગુરુ પદ પંકજ ધ્યાન ધરે બિન, જન્મ મરણ નવ जाते है। देखो०।

ચિન્તામણી સમ સદ્ગુરુ સેવા, પૂર્વ પુણ્ય से પાતે है।
ભક્તિ કરો સદ્ગુરુ की ચિત से, સંતો સદા ઇમ गाते है। देखो०।

(७)

પ્રસિદ્ધ વિદુષી શાતમૂર્તિ સાધ્વીજી શ્રી વલ્લભ
શ્રી આદિએ ગાયેલી ગહુંલી

આવો આવો શાન્તિના સાગર, મન મન્દિરમાં આપ।
મન મન્દિરમાં આપ ગુરુજી, મન મન્દિરમાં આપ। આવો૦।

શાન્તિસૂરી ગુરુદેવ અમારે, જગજીવન આધાર।
દર્શન દુરિત ટલે ભવિજનના, શાંતિ શાંતિ કરનાર। આવો૦।

આત્મજ્ઞાની ધ્યાની યોગી, ધ્યાતા ધ્યેય એક તાન।
આત્મ અનુભવ ધૂનમાં રે, સદા રહે મસ્તાન। આવો૦।

શાસ્ત્ર વિશારદ પ્રખર વેત્તા, દેશકાલ અનુમાન ।
સરસ્વતી કંઠાભરણમાં રે, છે તમને વરવાને । આવો૦ ।

ऊँच नीचनो भेद नहीं छे, राय रंके समभाव ।
જૈન અને જૈનેતર ઉપર, શીઘ્ર પડે પ્રભાવ । આવો૦ ।

મન મન્દિર ના દીપક ગુરુજી, મોહ તિમિર હરનાર ।
નિજ સ્વરૂપની શોધમાં રે, દિવ્ય જ્યોતિ વાતીર । આવો૦ ।

વિશ્વપ્રેમની સરિતા વહેતી, સ્નેહ અંકુર કિનાર ।
નિર્યામક સદ્ગુરુ મળ્યો રે, કરસે ખેવા પાર । આવો૦।

માઘ શુકલ પંચમી દિવસે, જન્મ જયંતિ ઉજવાય ।
જ્ઞાન વલ્લભ મંડલ ગુરુ દર્શન, અર્બુદાચલ પર આય । આવો૦ ।

(८)

પ્રસિદ્ધ વિદુષી શાતમૂર્તિ સાધ્વીજી શ્રી જ્ઞાનશ્રીજી ઉપયોગશ્રીજી,
વિચક્ષણાશ્રીજી આદિએ ગાયેલી ગહુલી

રાગ પંખીડા સંદેશો કહેજો મારા નાથને

શાંતિસૂરી પ્રભુ દર્શન વ્હેલા આપજો ।
કરજો અમારી કૃપા કરી સંભાલજો ।
અમ જીવન છે તુમ ચરણોમાં નાથજી ।
જેમ જેમ કરીને તારજો પરમ કૃપાલજો । શાંતિ૦ ।

આપનું દર્શન છોડવું અમને દોહીલું ।
હૈયા માહી દુઃખ તણો નહીં પાર જો ।
એવો દીન હવે ક્યા રે જગતગુરુ આવશે ।
કરશું આપના દર્શન આનંદકોર જો । શાંતિ૦ ।

તુમ સત્સંગથી થાયે પાવન આત્મા ।
જાને પુદ્‌ગલ જીવ તણો સુવિચાર જો ।
સ્હેજાનંદી થવાની સુન્દર ભાવના ।
પ્રગટે ભાવિના કોમલ હૃદય મોઝાર જો । શાંતિ૦ ।

અતિ ઉપકાર થયો જે અમપર આપનો ।
તે કહેવાની શક્તિ નહીં મુજ ઉરમાં ।
તેહ પદાર્થ નહીં પણ જગમાં જેહવો ।
ભેટ કરીને થાઉં અનૃણ ગુરુરાય જો । શાન્તિ૦ ।

ક્યારે ઉપદેશામૃત પાન કરીશ હું ।
ક્યારે ગુરુચરણોમાં નમાવીશ શીશ જો ।
ક્યારે નયનો તૃપ્ત થશે ગુરુ દર્શન થી ।
ક્યારે જોશું એવી લીલા સૂરીશ જો । શાંતિ૦ ।

ગુરુ વિયોગ છે સહુ દુઃખ માહીં મોટકુ ।
તે સહેવા નહીં બાલ હૃદય સશક્ત જો ।
તે માટે ગુરુ અમને વહેલા બોલાવજો ।
છતાં અયોગ્યતા જાણી નિજ પદ ભક્ત જો । શાંતિ૦ ।

નહીં માગું હું રાજવૈભવ ધન વિશ્વ નું ।
નહીં માગું સુખ બાહ્ય વલી પરદેશ જો ।
સવિનય માગું ગુરુ તુમ ચરણ નમી ફરી ।
સમકિત રત્ન ને આપનો ધર્મ સ્નેહ જો । શાંતિ૦ ।

સોહન મંડલીની છે ફરી ફરી પ્રાર્થના ।
ફિજે હૃદયમાં સમ્યગ્ દર્શન પ્રકાશજો ।
જેહથી અનુભવ રસનું પાન કરીને લહે ।
સુખમય સુંદર શિવનગરીમાં વાસજો । શાંતિ૦ ।

(૯)

પૂજ્ય શ્રી સ્થાનકવાસી લીંબડી સંપ્રદાયના મહાન પ્રખર વ્યાખ્યાન
દિવાકર શ્રીનાનચંદ્રજી મહારાજ નુ બનાવેલુ ભજન

એક યોગી વસે અલબેલો, આબૂના અજબ પહાડમાં;
જ્ઞાન ધ્યાને રસે રસ ઘેલો, આબૂના ગિરિરાજમાં ।
પ્રેમ ભીના નયન જ્યોત ઝલકી રહી, (૨)
ભવ્ય ભાલે સુચંદ્રિકા ચલકી રહી, (૨)
આત્મ ઓજસ વહાવે અકેલો, રસે રસ ઘેલો,
આબૂના અજબ પહાડમાં એક યોગી૦
બ્રહ્મચારી બલિષ્ટ અને યોગી વરિષ્ટ, (૨)
સિદ્ધ આસન જમાવીને સાધ્યા છે ઇષ્ટ, (૨)
શિષ્ટ શિષ્યોના પાયો પ્રજાળ્યા કલીષ્ટ, (૨)
વિશ્વ-વ્યાપી વિભૂતિની જ્યોતિ વિશિષ્ટ, (૨)
દિવ્ય શક્તિ ને ભક્તિ ભરેલો, રસે રસ ઘેલો,
આબૂના અજબ પહાડમાં એક યોગી૦

(૧૧)

आचार्यदेव सम्राट सूरी तुमहीं एक नाथ हमारे हो,
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुमहीं रखवारे हो;
प्रतिपाल करो सबही जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो। आचार्य०।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो;
हम ही तुमको प्रभु भूल रहे, हमको तुम नांहि बिसारे हो। आचार्य०।
भगवान महा महिमा तुमरी, समझे विरले बुधवारे हो।
शुभ शांति निकेतन प्रेमनिधे, मनमंदिर के उजियारे हो। आचार्य०।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुमसे प्रभु पाइ राज हरी अब तो कुछ और सहारे हो। आचार्य०।

(१२)

राग झूलणा छंद (प्रभातीउं)

समरतुं समरतुं सद्गुरुदेवने, नाम समरे सहु पाप जाये।
उठि प्रभातमां समरवा सद्गुरु, नाम निर्मल जपे शांति थाये।
काम अने क्रोधने मान अने मोहने, टालशे ते गुरु नाम लेतां।
आत्मशांति थशे चित्त आनंदशे, दिलनां दुखड़ां दूर जासे।
अर्बुदाचल मांहि स्थान छे जेहनुं, शातिसूरी गुरुराज प्यारा।
ज्ञान निधान छो धर्मनुं स्थान छो, ध्यानथी योगने साधनारा।
पतित पावन गुरु, सुरी सम्राट गुरु, अब्धि संसार थी तारनारा।
नित्य हो वन्दनाए गुरुदेवने, प्राणथी अधिक गुरुदेव प्यारा।

(१३)

मोरवा पपैया बोले, प्रभु प्रभु वन में
शांतिसूरी प्रभु वसे मेरे मन में।
मेरे गुरुदेव रहे पहाड़ गुफा में। मोरवा०।
इसी अँधियारी काली विजली डरावे,
शोर करत है नदिया रण में। मोरवा०।
रिमझिम रिमझिम मेंहुल बरसे,
भींज रहे गुरु ध्यान के रंग में। मोरवा०।
आनंद ए सम देखन चाहे,
गुरुजी की महिमा तीन भुवन में। मोरवा०।
निशि अँधियारी में तुम हो दीपक,
राह बताया एक पलक में। मोरवा०।
सब सखियन मिल यही अरज है,
राखो गुरु श्री चरण कमल में। मोरवा०।

(१४)

अब तो यह जीवन अर्पन है, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, भगवान तुम्हारे चरणों में। अब०।
प्रभु जन्म जन्म से मैं तेरी, गुरु तुम पद पंकज की चेरी,
न्योछावर है यह तन मन धन गुरुदेव तुम्हारे चरणों में। अब०।
नहीं चाह और अब है मन में, नहीं ध्यान और कोई स्वप्नों में,
दिल लग रहा है मेरा हरदम, भगवान तुम्हारे चरणों में। अब०।
मन मंदिर में गुरु आप रहो, अंधकार में ज्ञान प्रकाश करो,
स्वासो के स्वर झंकार रहे, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में। अब०।
मेरी नैया को गुरु पार करो, मेरा जन्म-मरण उद्धार करो,
भक्तों की अरज स्वीकार करो, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में। अब०।

(१५)

श्रीमान् दानवीर सेठ किशनचंदजी साहिबे बनावेलु भजन

तुंही तुंही प्रभु तुंही तुंही।

तुंही तुंही प्रभु तुंही तुंही है गुरु हमारा प्रेम प्यारा (२) तुंही
तुम बिन कौन सगपन मेरा तुंही तुंही गुरु तुंही तुंही है।
तुम बिन कौन रखवाला मेरा तुंही तुंही गुरु तुंही तुंही है।
जंगल ढूंढू पहाड़ ढूंढू, गुरु हमारा मांडोली मांही है।
तुंही ब्रह्मा तुंही विष्णु, तुंही महेश्वर तुंही तुंही है।
अवतार लीधो भक्तो ने कारण कल्याणकारक गुरु तुंही तुंही है।
दास किसनचंद अर्ज करत है तुंही शरण गुरु तुंही तुंही है।

(१६)

राग धोळ

आजे अवसर अमुलख आवीयो,
मल्या आत्मन्उद्धारक देव गुरुजी ततखेव, शांतिसूरिरायजी ।।टेक।।
मारा मनना ते मेल मटाडीया,
पाम्यो गुरुना उपदेशथी ज्ञान रसपान । शांतिसूरिरायजी ।१।
भटक्यो बहु अन्धारे अज्ञानमां,
मल्यो नहि कोइ तारणहार गुरुजी दातार । शांतिसूरिरायजी ।२।
कांइक सुकृत हशे पेला जन्मनुं,
उदय आव्युं ते तो मारे आज, सर्यां बधां काज । शांतिसूरिरायजी ।३।
भवभवना बंधन मारां तुटीयां,
करी गुरुदेवे मुजपर महेर, थइ छे लीला ल्हेर । शांतिसूरिरायजी ।४।
शरणुं साचुं छे सद्गुरु देवनुं,
बीजां खोटां छे आलपंपाल, जगतना ख्याल । शांतिसूरिरायजी ।५।
दया करी शरणमां राख जो,
भक्त मंडळ लागे छे पाय, दर्शन थी दुःख जाय । शांतिसूरिरायजी ।६।

(१७)

राग माढ

जयगुरु धर्मना मंडन, भवदुःख खंडन शांतिसूरि गुरुराय ।१।
प्रेमे पाय हुं लागुं, शरणुं मागुं शांति गुरुरार्य,
बालक वयमां संसार छोड्यो, तज्यो कुटुंबनो संग ।
पूर्वजन्मना तपोबलथी लाग्यो योगमां रंग । जय । १

कृष्ण जे कुल मांही उच्छरियो, ते कुल अवतार,
मिथ्या जाल जगतनी जाणी, छोडी चाल्या घरबार । जय । २

वर्णीव्रतने पाल्युं सूरि ते, वने वन कीधो वास,
आत्मज्योति अंतर देख्युं, रोकी श्वासोश्वास । जय । ३

ज्ञानी अन्तर ने ज्ञानी मलीया, गुरु श्री ज्ञानभंडार,
दीक्षा लईने संयम साध्यो, ॐ सोहम् नाम उच्चार । जय । ४

अंतरना ॐकारनो जाग्यो, सर्व धर्मनो सार,
ॐकारे आबूगिरि गजवीयो, धन्य गुरु अवतार । जय । ५

हिंसा तजावी अनेक पासे, नमाव्या छे भडभूप,
नमावे मस्तक सौ कोइने, नीरखी रूप अनूप । जय । ६

परम योगीश्वर गुरुजी आपने, नित्य नित्य लागुं पाय,
कृपा करो गुरुदेव सेवकपर, पातक सर्व जाय । जय । ७

भक्त मंडलने मन वसीया, गुरुश्री ज्ञाननिधान,
नेत्रो तणुं फल मेलव्यु आजे, करी दर्शन रसपान । जय । ८

गुरुपद पकज पूजतां, ताप सकल टली जाय,
भवसागरने तारवा, समर्थ छे गुरुराय । जय । ९

(१८)

थके हैं लाखों ही ज्ञानी, ध्यानी न तुमको अब तक निहार पाया ॥ टेक ॥
माया अपार तुम्हारी भगवन कभी किसीने न पार पाया । थके० । १
किसीने बन बन की खाक छानी, किसीने पूजा है आग पानी,
कहाँ पर किस रूप में रमे तुम न थे किसीने विचार पाया । थके० । २
किसीने माया में उम्र खोई, फिरा है दुनियाँ के मांही कोई ।
हरेक तारों में सुर तुमारा, तुम्हारा लेकिन न तार पाया । थके० । ३

(१९)

राग भीम पलाश

ए जगमांही अद्भुत योगी, एनी ज्योति जगमग जगमगती ,
ए त्यागी तपस्वी वैरागी, एनी आखलड़ी करुणा भीनी । टेक ।
एनां वचन सुधारसथी भरीयां, जगगणने उपकारे हरीयां ,
एनां वचन अमीरसथी भरीयां, पापीना पाप जलन करीया । ए० । १
एने भेद न थी ऊँच के नीचनो, ए रसियो छे आत्मिकजननो ;
एनो मार्ग अनुपम न्यारो छे, आत्मिकजन एने प्यारो छे । ए० । २
ए जगनो साचो उपकारी, एनी कीर्ति करे आलम सारी ,
ए मस्त सदा आत्मिक रंगे, नहीं परवा एने जग संगे । ए० ।३
अर्बुदगिरि शिखरे बिराजे छे, शांतिसूरि नामे गाजे छे ,
ए जगमांही अद्भुत योगी, करे वंदन तुझ बालक भोगी । ए० ।४

(२०)

तेरी मुरती अजब तेरी सुरती अजब, तुझपै वारी जाऊँ (२)
रायकाश्री तोलाजीना नंदन, जगमाहीं विख्यात (२) तेरी० । १
आहीर कुल में जन्म धरायो, जेनी वसुदेवी मात (२) तेरी० । २
देश मरुधर राज्य सिरोही, गाम मणादर मांय (२) तेरी० । ३
अजब ज्ञानी धर्मधुरंधर, अहिंसा ध्वज फरकाय (२) तेरी० । ४
धर्मविजयजी के पट्टधारी, तिर्थविजयजी महाराज (२) तेरी० । ५
शांति प्रभु जी शांति के दरिया, पूरें वांछित काज (२) तेरी० । ६
आबू अविचल पहाड़ माहें, कीधा शुभ योग ध्यान (२) तेरी० । ७
आनंदघनजी नी उपमा छाजे, प्रगटया आत्मज्ञान (२) तेरी० । ८
देश देश के यात्री आवे, प्रीते गुरु गुण गाय (२) तेरी० । ९
शांतिचरणरज बालक विनवे, आशीर्वाद नें च्हाय (२) तेरी० ।१०

लेखक मास्तर बालचदजी , शाकाज

(२१)

राग काफी खमाच

मरुदेश की भूमि पवित्र हुई, गुरुराज तुम्हारे चरणो से।
गुरुराज तुम्हारे चरणों से, भगवान तुम्हारे चरणो से। मरु०।
राय रंक सभी आय नमें, गुरुराज तुम्हारे चरणों में। मरु० ।१
जंगल पहाड़ों में वास किया, वर्ष पंदर तप और ध्यान किया,
अंधकार में ज्योत प्रकाश रही, गुरुराज तुम्हारे चरणों में। मरु० ।२
कंइ राजोने उपदेश मान लिया, मदिरा मांस का त्याग किया,
पशुवध बंद करवाय दिया, दीनानाथ तुम्हारे चरणों में। मरु० ।३
आत्मिक जन उन्हें प्यारा है, इस लोक में गुरु वो न्यारा है।
शांति का रूप दिखाय दिया, गुरुराज तुम्हारे चरणो से। मरु० ।४
कर जोड़ि वे मानकदास कहे, मेरे सिरपै गुरु का हाथ रहे,
मुझे आशिर्वाद का दान मिले, दीनानाथ तुम्हारे चरणों से। मरु० ।५

(२२)

राग सिन्ध भैरवी ताल त्रिताल

उतार गुरु प्यारे भवजल से पार उतार। . . . . गुरु०
शांतिसूरीजी का दर्शन कर लो, शांति है मुद्रा अपार अपार। गुरु०१
नाम है जैसा गुण है वैसा, सुरत की है बलिहारी हार। गुरु०२
भवसागर से कैसे तिरूँ मैं, नैया पड़ी मझधार धार। गुरु०३
वसुदेवी की कुक्षीए उपन्या, धन्य धन्य तुमे गुरुराज राज। गुरु०४
देश देश सें वंदन आवे, बहोत से नरनार नार। गुरु०५
चांदकुमारी अरज करत है, धर्म का मर्म दो बताय। गुरु०६

(२३)

राग कव्वाली

ऐसा समय हो भगवन् जब प्राण तन से निकले,
जब प्राण तन से निकले, गुरु नाम मन से निकले। ऐसा० १
गुरुराज की हो छाया, मन में न होवे माया,
तप से हो शुद्ध काया, जब प्राण तन से निकले। ऐसा० २
मन में न मान होवे, दिल एक तान होवे,
तुम चर्ण ध्यान होवे, जब प्राण तन से निकले। ऐसा० ३
संसार दुःख हरणा, गुरुदेव का हो शरणा,
हो कर्म मर्म खरना, जब प्राण तन से निकले। ऐसा० ४
अनशन को शुद्ध वट को, प्रभु शांतिसूरी घट हो,
गुरुराज भी निकट हो, जब प्राण तन से निकले। ऐसा० ५
यह बात सुन तो लीजे, इतनी दया तो कीजे,
दासों की अरजी लीजे, जब प्राण तन से निकले। ऐसा० ६

(२४)

राग तुम्हीं ने मुझको प्रेम सिखाया

शांतिसूरीजी मुझे दिल में भाया, काल अनादि का मोह भगाया।
गुरु शांति मेरे दिल में बसाया, आतम ध्याती ज्योति जगाया।
तुम्हीं हो वीतराग गुरुजी (२) शांति०। १
काल अनादि से भव में फँसाया, सुख नहिं पाया दुख में हटाया।
तुम्हीं हो योगीराज गुरुजी (२) शांति०। २
गुरु चरणों में सिर को झुकाया, दुख हटाया, मोह मिटाया।
तुम्हीं हो भक्तवत्सल गुरुजी (२) शांति०। ३

अब शांति सूरी मेरे दिल में ठायी, गुरु गुण गाया भव से तरोया ;
तुम्हीं हो वीतराज गुरुजी (२) शांति० । ४
भूल न जावे गुण को भुलाया, ज्ञान जगाया आनंद पाया ।
तुम्ही हो तारन तरन, गुरुजी (२) शांति० । ५

(२५)

हाँ आया हूँ गुरुद्वार फिर कुछ ले के जाऊँगा,
लेके जाऊँगा, गुरजी लेके जाऊँगा । आया० १
हाँ सुख दुख की सब बातें उनको कहके सुनाऊँगा आया० २
आँख तुम्हारी करुणा भीनी, देते सबको दान,
हाँ कृपा तुम्हारी सहजे पाऊँ लेके जाऊँगा । आया० २
प्रेम शांति का सार बताते ज्ञान बताते हो,
हाँ ॐ मंत्र की भिक्षा दे दो लेके जाऊँगा । आया० ३
मनमंदिर अंधकार से छाया ज्ञान नहीं पाया,
हाँ ज्ञान प्रकाश की ज्योत दिला दो लेके जाऊँगा आया० ४
मानकदास विनय कर जोड़ी वांछित फल मागे ।
हाँ आशीर्वाद का दान दिला दो लेके जाऊँगा । आया० ५

(२६)

पूज्यश्री स्थानकवासी लींबडी संप्रदायना महान प्रखर व्याख्यान दिवाकर
कविवर्य श्री नानचंद्रजी महाराजनु बनावेलु भजन

राग जिन मन का डंका

कहो क्यां मलशे, कहो क्यां मलशे,
ए प्रभुमां पागल क्यां मलशे;

જે પતિત ઉપર પણ પ્રેમ કરે
દુશ્મન ઉપર પણ રહેમ કરે;
પ્રભુ રાજી રહે નિત્ય એમ કરે
એ પ્રભુમા પાગલ ક્યાં મલશે । કહો० १

ઊંચા નિચાનો ભેદ ન થી,
ધન જન ખોયાનો ખેદ ન થી;
જ્યાં અધિક થવાની ઉમેદ ન થી,
એ પ્રભૂમાં પાગલ ક્યાં મલશે । કહો० २

એ જગ વ્યવહારો છોડે છે,
તૃષ્ણાનાં બંધન તોડે છે,
જીવન પ્રભુ ભજને જોડે છે,
એ પ્રભુમાં પાગલ ક્યાં મલશે । કહો० ३

એ કામ કરે છે પ્રભુને ગમતાં,
દુઃખોમાં પણ રાખે સમતા,
નહીં માયા માન અને મમતા,
એ પ્રભુમાં પાગલ ક્યાં મલશે । કહો० ४

પ્રાણી ને નિજ સમ દેખે છે,
સ્ત્રી ને માતા સમ દેખે છે,
લક્ષ્મી મટ્ટી સમ લેખે છે,
એ પ્રભુમાં પાગલ ક્યા મલશે । કહો० ५

સુખ અર્પીને સુખમાં રહે છે,
દુઃખ સહીને પણ સેવા દે છે,
અણુ અણુમા પ્રેમ સદા વહે છે,
એ પ્રભુમાં પાગલ ક્યાં મલશે । કહો० ६

विषयो तन मन थी त्यागे छे,
पुद्गल रस रसहीण लागे छे।
ए निशदिन घटमां जागे छे,
ए प्रभुमां पागल क्यां मलशे। कहो० ७

जे निज मस्तीमां म्हाले छे,
चिंताविण प्रभु पंथ चाले छे,
संत सेवक थइ दीन गावे छे,
ए प्रभुमां पागल क्यां मलशे। कहो० ८

(२७)

तुंही तुंही याद गुरु आवे रे संकट में,
आवे रे संकट में आवे रे विपत में। तुंही १
ये जीवन का नहीं हय भरोसा, बादल ज्यूँ छिप जावे पलक में। तुंही २
शांतिसूरी गुरु में गुण गाते, परमानंद यह पावेरे जगत में। तुंही ३
शांति हैं सूरत प्रेम की मूरत, सम्राट सूरी गुण गायो रे भजन में। तुंही ४
आशिर्वाद मन वांछित मागे, दासी तो अब आवे रे शरण में। तुंही ५

(२८)

राग गरबानो

महाविदेहमां जइने कहेजो चांदलीया (२) गुरुवरजी तेड़ां मोकले
मने दुःख घणुं अहि थाय छे, मारो जीवलडो ललचाय छे,
कृपा करीने दर्शन दे जो, चांदलीया गुरुवरजी। १
हांरे हु तो क्रोध कषायमां डूबी, प्रभु आपनुं नाम हुं तो भूली,
कांइक कृपा थइ हशे आजे चांदलीया गुरुवरजी। २

ઘણા દિવસની આશ આજ પૂરી, મારા હૈયાની હામ છે અધૂરી ,
આટલી વિનતી જઇને કહેજો, ચાંદલીયા ગુણવરજી । ૩

રાજનગરના ભક્તો આવિયા, ઘણા પ્રેમ થી ગુરુ ને બધાવિયા;
કલાને કાન્તાની વિનતી સ્વીકારજો, ચાંદલીયા ગુણવરજી ।

(૨૯)

રાગ કાલી કમલી વાલે તુમકો

શ્રી શાંતિસુરી ભગવાન તુમકો લાખો પ્રણામ । ટેક ।

જીવદયાની જ્યોત જગાવી, અહિંસા કેરી ધૂની લગાવી,
ગુરુજી શાંતિ તણા સમ્રાટ ગુરુ કો । ૧

સાગર જવો શાંતિ તુમારી, મેરુ જેવી ધીર તુમારી ,
ગુરુજી ક્ષમા તણા ભંડાર ગુરુ કો । ૨

ક્રોધ મોહ ને દૂર થી બાલી, મોહ માયા ને જડથી ટાલી ,
તમે થયા વિતરાગ ગુરુ કો । ૩

વિશ્વ ઋણી છે નાથ તમારું, ભક્તો જપે છે નામ તમારું ।
ધન્ય ધન્ય અવતાર ગુરુ કો । ૪

(૩૦)

ગુરુદેવ તારી બેલડીએ
અમે વલગ્યાં નહીં છૂટાં પડીએ ગુરુ
અમે જડીઆં વજ્રની સાકલીએ ગુરુ ૧
સુખ દુઃખમાં પણ સંભાલીશું,
અમે ઘડીએ પણ ના વીસરીએ ગુરુ ૨

તારી દીધેલી લીંબોલી અમે ખાઇશું,
અડશુ નહીં પરની કોકડીએ ગુરુ
અમે રીઝીશુ તુજ રાવડીએ ગુરુ ૩

એમે હંકાઇશું તુજ લાકડીએ,
અમે ભલે પડીએને આંખડીએ ગુરુ ૪

તારાં દીધેલાં દુઃખોથી અમ પાપો,
ભાગે છે ઉભી પુંછડીએ ગુરુ ૫

અમને તાવજે તેલની તાવડીએ,
અમે સુવર્ણ સમ થઇ નીકલીએ ગુરુ ૬

(३१)

अवतार परमात्मा शांतिसूरी भूमी का भार उतारन को,
भूमी को भार उतारन को, भूमी का भार उतारन को अव० १
श्रीराम की माता कौशल्या, श्रीकृष्ण की माता देवकीजी,
सूरीश्वरजी की माता बसुदेवी, भूमी का भार उतारन को अव० २
श्रीराम के पिता दशरथ था, श्रीकृष्ण के पिता बसुदेव था,
सूरीश्वरजी के पिता तोलाजी, भूमिका भार उतारन को अव० ३
श्रीराम की नारी सीताजी, श्रीकृष्ण की नारी रुक्मणीजी,
सूरीश्वरजी बाल ब्रह्मचारी है, भूमि का भार उतारन को अव० ४
श्रीराम की नगरी अयोध्या थी, श्रीकृष्ण की नगरी मथुरा थी,
सूरीश्वरजी की नगरी पहाड़ गुफाओ है, भूमि का भार उतारन को—अव० ५
श्रीराम के हाथ में धनुष्य था, श्रीकृष्ण के हाथ में बंसरी,
सूरीश्वरजी तो दंडधारी है, भूमि का भार उतारन को अव० ६
श्रीरामे रावण मार्या था, कृष्णे कंस पछाड्या था,
सूरीश्वरजी तीर्थों का उद्धार किया, भूमि का भार उतारन को अव० ७

श्रीराम की सेना वानर थी, श्रीकृष्ण की सेना जादव थी,
सूरीश्वरजी की सेना भक्तो की, भूमि का भार उतारन को अव० ८
श्रीराम थे वानर के रखवाल, श्रीकृष्ण थे ग्वालो के रखवाल,
सूरीश्वरजी भक्तो के रखवाल, भूमी का भार उतारन को अव० ९

(३२)

राग धन्याश्री

मन लाग्युं मारु लाग्युं गुरु तारा ध्यानमा;
गुरु तारा ध्यानमां एक तारा तानमां। मन० १
खान न सूझे पान न सूझे तारा ध्यानमां,
मान अने अपमान न सूझे तारा ध्यानमां। मन० २
तुं प्रभु त्राता छे सुखदाता तारी नामना,
सुरवर नरवर मुनीजन गुणीजन तारा गानमां। मन० ३
नमन पूजन तुम करीए भगवान पुरो कामना,
शिवसुख आपो भवदुख कापो रहीए ध्यानमा। मन० ४

(३३)

राग—आशामंड छाया

तेरे चरण में आ खड़ा तेरा भिखारी हूँ,
कृपा नजर से देखिए दीन बाल तेरा हूँ। तेरे० १
चोराशी लाख फेरा छाया रहा अँधेरा,
उसी में रहा फीरा बडा दुखारी हूँ। तेरे० २
अब आपको ही देखा सब रूप से अनोखा,
वोही अनुपम रूप का ज्ञानाधिकारी हूँ। तेरे० ३

तुमारे हे अनंते आतम छे गुन भंते,
अब तो मैं प्रभु आपका नया भिखारी हूँ। तेरे० ४

अपार तेरी शक्ति मेरी है अल्प भक्ति,
तो भी मैं तेरे गान का छोटा सितारी हूँ। तेरे० ५

काम नहीं धन मान का आखिर वो पैया काम का,
प्रेम भक्ति दीजिए भोगी भिखारी हूँ। तेरे० ६

(३४)

राग रखिया बँधावो भैया

गुरुजी तुमारे द्वार पे, भिखारी आ खड़ा हूँ
भक्ति की मेरी झोली, चरण में तेरे डाली,
देने मुझे न खाली, जग में दाता हो। गुरुजी० १

तुम दातारो के दातार, मैं तेरा ही गुण गाता,
फिर भीख क्युं नहिं देता, तेरी आशा है। गुरुजी० २

यह दास तुम्हारा आया, भक्तों के संग में गाया,
चरणों में शीश नमाया, दर्शन दीलावो प्रभुजी
व्याकुल हो रहा हय। गुरुजी० ३

(३५)

राग मोहे प्रेम के झूले

मोहे शांतिसूरी गुरु बता दो सखी,
मोहे पहाड़ गुफा में लइ चालो सखी। मोहे० १

મોત વસુદેવી કુક્ષી સે ઉપજ્યા ,
મોહે અમૃતવાણી સુના દો સખી । મોહે૦ ૨

તરણ તારણ ગુરુ દુઃખ નિવારણ ,
કોઈ આહીર કુલ કો દીપાયો સખી । મોહે૦ ૩

ચાંદકુમારી ચરણો કી ચાકર ,
મોહે નિશદિન દર્શન દીખા દો સખી । મોહે૦ ૪

(૩૬)

ખરતરગચ્છ કી પ્રખર વિદુષી રાજેન્દ્રશ્રીજી ગાયેલી ગહુલી

દુઃખહર સુખકર અઘહર ગુરુવર જય તુમ્હારી જય જય ,
તોલાજી કુલદીપક નંદન, કર્મારી કા કરતે ભંજન ,
શમદમ ગુણ યુત ગુરુ મન મંજન ।
શિવ સુખ કંદન તુમકો વંદન જય તુમ્હારી જય જય । દુઃખ૦ ૧

કિયા જગતકા બહુત સુધારી, શાંતિસૂરિ ભગવાન હમારા ,
વસુદેવી જાયા સબ મન ભાયા, જય તુમ્હારી જય જય । દુઃખ૦ ૨

કાટો મેરે કર્મોં કી ફાંસી, દુનિયાં મેં નહિં હોવે મેરી હાંસી ,
તુમ બિન ગુરુ મેં રહું ઉદાસી ।
ધીત દાન નામી અન્તરયામી, જય તુમ્હારી જય જય । દુઃખ૦ ૩

દીનાનાથ દયા કીજે, કુમતિ કાપ સુમતિ મોય દીજે ,
મિથ્યા તિમિર અઘનાશ કરીજે,
રાજેન્દ્ર કો તારો, પાર ઉતારો, જય તુમ્હારી જય જય । દુઃખ૦ ૪

(ખરતર ગચ્છના)

(३७)

રાગ ભૈરવી

ગુરુની પુજારણ બની હું તો ચાલી છું પુજવાને આજ,
દૂર થી નિહાળતી ઝુંપડીની વાટડી, જીવનની જ્યોત જગાવતી;
સંદેશ કો ગુરુજી કો કહાવતી, મન-મંદિરમાં ગુરુ ને હુલાવતી। હું તો० १

શાને કરે સખી આશક આશા ડુબે સાગરમાં,
જેમ ડુબે નવડું જીવન ઝોલા ખાય,
આશા ભર્યું જીવન હુ નિભાવતી,
ગુરુજીના પ્રેમ થી જીવન હું વીતાવતી। હું તો० २

(३८)

राग भैरवी

दुनियाँ के बाल पुकार रहे, गुरु शांतिसूरि प्रभो शांतिसूरि।
हर स्वर में ये उच्चार रहे, गुरु शांतिसूरि प्रभो शांतिसूरि। १
मणादर ग्राम आहिर कुल चंदा, वसुदेवी माता के तुम हो नंदा,
आचार्य सूरि सम्राट रहे, गुरु शांतिसूरि प्रभो शांतिसूरि। २
मनमंदिर में आप रहो (गुरु आप रहो) अंधकार में ज्ञान प्रकाश करो,
सदा पापीकुं तारनहार रहो, गुरु शांतिसूरि प्रभो शांतिसूरि। ३
जो भाव से मन में ध्यान धरे (गुरु) भवसागर से वह पार तरे,
नहिं आवागमन बेगार रहे, गुरु शांतिसूरि प्रभो शांतिसूरि। ४
मेरी नैया को गुरु तुम पार करो, मेरा जन्ममरण से उद्धार करो,
ये मानक की विनती स्वीकार करो, गुरु शांतिसूरि प्रभो शांतिसूरि। ५

(३९)

गरबो   राग; वागे छे रुडो वेणुकाना मनमाँहो

वागे छे रुडी वेणु आबूना वनमाहिं,
आबूना वन मांहिं शांतिना वन मांहिं हाँ प्रभुना वन मांहिं । वागे० १
जाउं दर्शने गुरुप्रेम -पुष्पोए वधाववा,
मारुं हैयुं हर्षे उभराय शांतिना वन मांहीं । वागे० २
शांति गुरु नाम प्यारुं, भक्तोने खूब प्यारुं,
चरणरज उतारी लइए शांतिना वन मांही । वागे० ३

(४०)

राग   प्रकटया श्रीकृष्ण मनभावता रे लोल

भक्तो पधारो गुरुमंदिरेरे लोल,
मंदिरे विराजे गुरुदेव जो । भक्तो० १
रजनी वधावे रुडा चद्रनेरे लोल,
गुरुने वधावुं हुंय तेम जो । भक्तो० २
मंदिरे वागी ॐनी तानरे लोल,
ए ताने हुँ राखुं ध्यान जो । भक्तो० ३
चालो पूजीए गुरुदेवनेरे लोल,
सौ अंग मला गाशुं गुण गान जो । भक्तो० ४
गुरु ने अर्पीशुं आपणुं जीवन रे लोल,
हृदय मंदिरमा ह्वाला गुरुदेव ने जो । भक्तो० ५
आवो भूलीने सौ जगमाननेरे लोल,
प्रेम भक्तिनी छोळो उडाडी शुं जो । भक्तो० ६

(४१)

जोधपुरना कुवरी अने जयपुरना महाराणी श्रीमती कीसोरबाईए रचेल भजन

आवो गुरुराज भगवंत भीड नीवारजो रे,
शरण ग्रह्युं में आपनुं साचुं, ते वीण मानुं हुं सौ काचुं,
नमी नमी हुं याचुं, शरणे राखजो रे। आवो० १
रिद्धिसिद्धि सौ अपने आपी, गृहमां सुखशांति दो स्थायी,
मागुं तुम जाप जपीने, वेळा वाळजो रे। आवो० २
नजर आपनी चौदिश भाळी, तात दुःख वादल निवारी,
बाळ किशोर ने पाळी, लाज निवारजो रे। आवो० ३

(४२)

जोधपुरना माजीराणी प्रतापबाईए रचेल भजन

दीठा गुरु शांतिसूरी महा ज्ञानी रे,
जेनी कीर्ति नवे खंड जामी। दीठा० १
पहेलो परचो आंही बतलाव्यो रे,
किशोरकुंवरीनो रोग हटाव्यो रे,
वचन सिद्धनो काबु जमायो। दीठा० २
जेना दर्शनथी शांति मले छे रे,
भवोभवना अज्ञान टले छे रे,
बंधन कर्मनां सर्व बळे छे। दीठा० ३
एवा सिद्ध आबुने शोभावे रे,
गिरिराजनो महिमा गवरावे रे,
हीण पुण्य ने नजरे न आवे। दीठा० ४
एना चरणो समस्त शीरे छे रे,
हरदम दासना दुःखडां हरे छे रे,
माजी राणी प्रताप कहे छे। दीठा० ५

(४३)

राग जेरे पूजन को भगवान

करे जो शांतिसूरी का ध्यान,
तो होगा भव भव में कल्याण....करे० १

झूठे जग की झूठी माया,
मूरख इसमें क्यों भरमाया ?
ले ले गुरुवर से ज्ञान, तो होगा भव भव में
कल्याण....करे० २

तुम हो ध्यानी पूरन ज्ञानी,
आपकी महिमा कोई न जानी,
गुणज्ञान रतन की खान, तो होगा भव भव में
कल्यान....करे० ३

विनय सहित जो उनको ध्यांवे,
आशा पूरन अपनी पावे,
सिद्ध पुरुष भगवान, तो होगा भव भव में
कल्यान....करे० ४

आबू अचलगढ आप विराजे,
पायु नमे रंक और महाराजे,
सबका करते हैं कल्यान, तो होगा भव भव में
कल्यान....करे० ५

मानकदास कहे सिर नामी,
आप हो पूरन अन्तरयामी,
हम पर दया करो भगवान, तो होगा भव भव में
कल्यान....करे० ६

(४४)

राग मेरे मौला मदीने बुलाले मुझे

गुरु शांति के दर्शन को जाया करो। (२)
विनय भक्ति से शीश नमाया करो,
प्रेम भक्ति से शीश झुकाया करो। (२) गुरु० १

गुरु-दर्शन और वंदन ही जगत् में सार है,
शुद्ध चित्त से इनको ध्यावे, उसका बेड़ा पार है।
गुरु शांति के शरणे तुम जाया करो,
विनय भक्ति से शीश नमाया करो। (२) गुरु० २

मैं फँसा हूँ कामिनि-मोह, लोभ और कंचन के बीच,
सद्गति हो कैसे मेरी, मैं पड़ा बंधन के बीच।
गुरु करके दया तुम बचाया करो,
प्रेम भक्ति से शीश झुकाया करो। (२) गुरु० ३

इंडिया यूरोप सब जग में, अमर नाम है गुरुराज का,
हो सदा कल्याण जग का, यही मन गुरुराज का।
आशीर्वाद का दान दिलाया करो,
गुरु शांति का पाठ सिखाया करो। (२) गुरु० ४

लाख भक्तों से छिपोगे, ढूँढ लेंगे हम सही,
अचलगढ मंही आबू कही, जहाँ होगे तुम वही।
हम भक्तों ने भक्ति दिलाया करो,
गुरु शांति का पाठ पढाया करो। (२) गुरु० ५

छा रही महिमा तुम्हारी, चहूँ दिशि संसार में,
दास मानक के बसो तुम; अब हृदय मंदिर में।
अपनी मूर्ति के दर्शन दिलाया करो,
हम भक्तो को आप बचाया करो। (२)
अपनी भक्ति में ध्यान लगाया करो। (२) गु० ६

(४५)

राग मालकोस

खोल दो अब तुम द्वार, गुरुवर खोल दो अब तुम द्वार,
तुम्हे वंदन करूं वारंवार, सूरीश्वर खोल दो अब तुम द्वार। खो० १

आँख से दर्शन भाव से पूजा, मन में भक्ति का विचार,
योगीश्वर खोल दो अब तुम द्वार। खो० २

वहुत देर से अखियाँ तरसें, खोल दो बारी द्वार,
ज्ञानीवर खोल दो अब तुम द्वार। खो० ३

दर्शन दे मंगलीक सुनाओ, तुम दर्शन सुखकार,
ध्यानीवर खोल दो अब तुम द्वार। खो० ४

धूप पड़े मन अति अकुलाय, कर जोड करूँ मैं पुकार,
पूज्यवर खोल दो अब तुम द्वार। खो० ५

दास मानक की आशा पूरो, तार दो भवसिंधु पार,
दयासिंधु खोल दो अब तुम द्वार। खो० ६

(४६)

लखनौवाला तथा काश्मीरवालानुं बनावेलुं भजन

मुझ अबला की पुकार सुनो, मेरे सद्‌गुरुजी मेरे सद्‌गुरुजी;
तुम ध्यान धरैया अब दो दर्शन, मेरे सद्‌गुरुजी मेरे सद्‌गुरुजी।
तुम मौन करैया, अब दो दर्शन मेरे सद्‌गुरुजी
मेरे सद्‌गुरुजी। मुझ० १

मेरे इस जीवन की टेक यही, मेरी अभिलाषा है एक यही,
तुम ध्यान धरैया अब दो दर्शन, मेरे सद्‌गुरुजी मेरे सद्‌गुरुजी;
मेरे ज्ञानी गुरुजी मेरे ध्यानी गुरुजी। मुझ अबला की २

सब सर्व लुटा के बैठी हूँ, लय तुमसे लगा के बैठी हूँ,
चरणो पर न्योछावर तन मन धन मेरे सद्‌गुरुजी,
मेरे सद्‌गुरुजी। मुझ० ३

मेरे ज्ञानी गुरुजी, मेरे ध्यानी गुरुजी,
मुझ अबला की पुकार सुनो मेरे सद्‌गुरुजी मेरे सद्‌गुरुजी
मुझ दासी की पुकार सुनो मेरे ज्ञानी गुरुजी मेरे ध्यानी,
गुरुजी। मुझ० ४

(४७)

राग कौशीया

तुम पापियो के त्राता हो, तुम जगतपिता और माता हो,
हमें निज चरणो में लाओ प्रभु, हमे अपना नाम जपाओ प्रभु। तुम०१

अब करत पाप मैं हाराजी, प्रभु राखो बिरुद तुम्हाराजी;
संसार विषयन्सुख छोड़ पिता, मैं शरण तुम्हारी आन पड़ा। तुम०२

ज्यों जानो मुझको तारोजी, भवसागर पार उतारोजी,
जहँ मात-पिता न भाई हैं, तहाँ केवल आप सहाई हैं। तुम० ३

तुम जगतगुरु जगदीश्वर हो, तुम सब सृष्टि के ईश्वर हो,
मेघ अग्नि तुमको ध्यायें हैं, जलवायु तव गुण गाये हैं। तुम० ४

जग सघळी तुम्हें ध्यावेजी, कोइ अन्त न तेरा पावेजी,
तुं करुणा हस्त पसारा है, तुम सबका एक सहारा है। तुम० ५

तुम जग बंधव जग स्वामी हो, तुम सबके अन्तरयामी हो,
तुम दीनानाथ दयालु हो, सर्व आश्रय और कृपालु हो। तुम० ६

आशीर्वाद हमें दीजेजी, मन भक्ति तेरी में भींजेजी,
अब दया का हाथ पसारोजी, हम सबको लेउ उद्धारोजी। तुम० ७
(सब भक्तों को लेउ उद्धारोजी)

(४८)

राग नागर वेलीओ रोपाव

अजिए शांतिसूरी भगवान, भजतां आवे भवनो पार,
भजता आवे भवनो पार, भजतां आवे भवनो पार रे। भ० १

तुम हो ध्यानी पूरन ज्ञानी, तुम हो सबके अंतरयामी,
तुम हो पूरण योगीराज, भजता आवे भवनो पार रे। भ० २

तुम शांति के पूरण दाता हो, तुम प्रेम को पूरन दाता हो,
तुम हो शान्ति के अवतार, भजतां आवे भवनो पार रे। भ० ३

तुम जगत्गुरु कहलाते हो, तुम जगबांधव कहलाते हो,
तुम हो जग तारनहार, भजतां आवे भवनो पार रे। भ० ४

तुम पहाड़ गुफा में फिरते हो, तुम आत्ममेरम में रमते हो,
तुम धन्य धन्य अवतार, भजतां आवे भवनो पार रे। भ० ५

तुम जंगल झाड़ी में फिरते हो, तुम बाघ सिंह से न डरते हो,
तुमको वंदन कोटि हजार, भजतां आवे भवनो पार रे। भ० ६

ए बाल भक्तो गुण गाते हैं, तुम चरणो शीश नमाते हैं,
भक्ति दीजो अपरपार, भजता आवे भवनो पार रे। भ० ७

(४९)

प्रेमी शांतिसूरी भगवान, तुम हो प्रेम सिखाने वाले,
तुम हो ज्ञान बताने वाले, सच्चा मार्ग बताने वाले। १

गुरु शांति के अवतार, तुमको वंदन बारंवार,
तुम हो अद्भुत योगीराज, मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले। २

जो शरण में आपकी आवे, मनवांछित फल वह पावे,
तुम हो ध्यानी श्री भगवान, बेड़ा पार लगाने वाले। ३

गुरु दर्शन अति सुखकारी, पाय नमें सहु नरनारी,
आचार्य सूरि सम्राट्, सच्चा ध्यान बताने वाले। ४

गुरुभक्ति जग में सार, इसका कर लो सब व्यापार,
बाकी झूठा सब रोजगार, लाभोलाभ दिखाने वाले। ५

प्रभु शान्तिसूरिजी भगवान, मेरी आशा कर दो पूरी,
मानक अर्ज सुनो, गुरुराज, आशिर्वाद के देने वाले। ६

(५०)

सम्राट श्री गुरुराज तुम तो प्रेम के अवतार हो,
शान्त सूरत शान्त मूरत, शान्ति के अवतार हो। १

संकट हरन सुख के करन, गुरु शांति के दातार हो,
गुरु शरण में आ पडा हूँ, आपका आधार हो। २

कर्म की आंधी भयानक, भँवर में नैया पड़ी,
थाम लो पतवार हो, गुरु आप खेवनहार हो। ३

भिखारी आपकी कृपा का, और दर्शन का मै,
आपका दर्शन मुझे हर साल बारबार हो। ४

की अरज मानक ने रोकर, गुरुराज के चरणो में यह,
देखना निष्फल न मेरे, आँसुओ की धार हो। ५

(५१)

दयासिन्धु कृपासिन्धु, प्रभु परमात्म गुरुदेवा,
अकारण विश्वना बन्धु, गुरुजी कोटि वन्दन हो। १

महा अज्ञान अंधारुं छवायुं देह मन्दिर माँ,
प्रभो आत्मा उजालो हो, गुरुजी कोटि वंदन हो। २

अलौकिक आत्मशक्ति याँ, न थी विश्वास पामरने,
उघाड़ो नेत्र अंजन थी, गुरुजी कोटि वंदन हो। ३

न थी श्रद्धा न थी भक्ति, न थी सेवा जिगर जागी,
बनावो शुद्ध आत्मार्थी, गुरुजी कोटि वंदन हो। ४

हजुं हु तुं न थी जातुं, स्वरूप तारूँ न समजातुं,
चरण लयलीन नव थातुं, गुरुजी कोटि वंदन हो। ५

तमो त्यागी अमो भोगी ज्ञान योगी तमे पुरा,
जगतना ओ जुना जोगी, गुरुजी कोटि वंदन हो। ६

दइने कंइ नवा चेतन, भरो भक्ति गुरुदेवा,
तमारी प्रेम भक्ति मांयाँ, रगेरग जोडजो देवा। ७

(૫૨)

તુમ એક અલૌકિક હો ભગવન્, त्रिभुवन में सचमुच લાખો में,
है प्रेम શાંતિરસ ભરા હુઆ, ભરપૂર तुम्हारी आँखों में। १
તુમ જગ से हमसे ન્યારે हो, औ जीवन આધાર हमारे हो,
તુમ ન્યારે हो पुण्य-પાપો से, है प्रेम तुम्हारी આંખો में। २
તુમ विश्वप्रेम કા પાઠ પઢા, પહાડો में ધ્યાન કા રંગ ચઢા,
दिखलाई પડ़ती है अतिशय, કરુણા ही तुम्हारी आँखों में। ३
तुम રાગ દ્વેષ જલાયા है, और मोह માયા को हटाया है,
શાંતિ રસ કા ઝરા ભરા है सूरीश्वर तुम्हारी आँखो में। ४
ए वचन तुम्हारा सुधा झरे, जग भर तुम કલ્યાણ કરે,
अति कूट कूटकर ભરા हुआ, विश्वप्रेम तुम्हारी आँखों में। ५
तुम આતમરસ को पिलाता है, चहुंगती से हमें बचाता है,
तुम दर्श से हर्ष उभराता है, दीनानाथ हमारी आँखो में। ६

(૫૩)

મને મળ્યા ગુરુવર જ્ઞાની રે, મારી સફલ થઈ જિન્દગાની,
શાંતિ સૂરીશ્વર પ્રભુ રૂપે દીઠા, ગુરુદેવ મને લાગ્યા મીઠા,
આત્મ ઉજાસ બતાવી રે મારી૦
જ્ઞાનની ચમકિત જ્યોતિ જગાવી, સદ્‌ઉપદેશની ધારા વર્ષાવી,
અવધુત ધુન જગાવી રે મારી૦
સત્ય જીવનનાં સુન્દર ચિત્રો, દયાનીતિ નિસ્વાર્થના સત્રો,
આત્મ ઉજાસ બતાવી રે- મારી૦
પાઠો ભણાવ્યા પ્રેમભક્તિના (વિશ્વપ્રેમના)
સમભાવ સાદાઈ ને અહિંસાના,
બંધુત્વ ને પ્રગટાવી રે મારી૦

અંતર અમારા ઉછળ્યા હર્ષે, ફરી ફરી મલશું પ્રતિવર્ષે,
સંત સમાગમ મેલવી રે મારી૦
શાંતિસૂરી ભગવાન ને વંદો, ત્યાગો હવે સહુ ખોટા ફંદો,
ભક્તિ દેવી એ પીછાણી રે- મારી૦

શ્રીસ્થાનકવાસી લીંબડી સપ્રદાયના પ્રસિદ્ધ વક્તા વ્યાખ્યાન દિવાકર
કવિવર્ય શ્રીનાનચન્દ્રજી મહારાજ બનાવેલુ ભજન

(૫૪)

આવરદા વ્યર્થ વિતાવી એ રાગ

શુદ્ધ મારગ સંત બતાવે (૨)
અશાંતિ કેરા મૂલ ઉખેડી, પરમ શાંતિ પથરાવે શુદ્ધ૦ ૧

હિતાહિત હકીકત સઘલી, સદ્બુદ્ધે સમજાવે,
કર્મ બંધના કારણ સઘલાં, જુગતી કરી જગાવે શુદ્ધ૦ ૨

પાઇ પીયાલો પરમ જ્ઞાનનો, જ્યોત અખંડ જગાવે,
અંતર ઘટમાં ફરી અજવાલુ, આત્મ સ્વરૂપ દર્શાવે શુદ્ધ૦ ૩

ભૂલ સુધારી ભવ ભવ કેરી, સઘલા દોષ સમાવે,
અવલા પંથ બધા અલસાવી, સાંચો પથ સુણાવે શુદ્ધ૦ ૪

ભીતરનું ભ્રમણા સ્થલ ભાંગી, નિર્ભય સ્થલ નિરખાવે,
વેરઝેરની લહેર ઉતારી, નિર્વિષ વુદ્ધ બનાવે શુદ્ધ૦ ૫

પ્રબલ પાપના પડલ ઉતારી, અન્તર નયન ખુલાવે,
સત શિષ્ય દુખ દૂર હટાવી, અપૂર્વ પદવી અપાવે શુદ્ધ૦ ૬

(५५)

स्थानकवासी लीवडी सम्प्रदायना कविवर्य श्रीनानचन्द्रजी महाराज
रचित भजन

आतमन्दरशान विरला पावे, दिव्यप्रेम विरला प्रगटावे,
ए मारग समजे जन विरला, विरलाने एमां रस आवे। १
सद्गुरु संग करे कोइ विरला, अमृतफल कोई विरला खावे,
अन्तरमां जागे जन विरला, कर्म दलोने विरला हठावे। २
तजवानुं त्यागे कोइ विरला, ज्ञान नदीमां विरला न्हावे,
आतम रमण रमे कोइ विरला, अमर बुट्टी विरला अजमावे। ३
समजे आत्मसमा सहुं विरला, ध्यान प्रभुनु विरला ध्यावे,
अर्पी दे प्रभु अर्थे विरला, संतशिष्य विरला समजावे। ४

(५६)

अनन्य भक्त महात्मा नरसिंह भगत

अनेक युग वित्यारे एणे पंथे चालतारेजी,
नाव्यो नाव्यो पंथडा केरोरे पार। अनेक० १
अविद्याना ओलेरे अमे घणुं आयड़्यारेजी,
शोध्यो नहिं अमारा घरनोरे सार। अनेक० २
लोकडीयानी लाजेरे वाइमें ताण्यो घुंघटोरेजी,
तेथी अमे दिठा नहिं जगनाथ। अनेक० ३
प्रभु अम पासे रे, विभु नोता वेगलारेजी;
सदा हता साहेब अमारीरे साथ। अनेक० ४

સૂરજ છવાણોરે આકાશમાં વાદલેરેજી ;
તેથી જેમ પ્રગટે નહિરે પ્રકાશ । અનેક૦ ૫

એમ અવિદ્યાએરે અવરાણો આતમારેજી ,
તેથી સર્વ શક્તિનો નિરખ્યો નાશ । અનેક૦ ૬

નાવરૂપી નિર્મલરે, પ્રભુજીનું નામ છેરેજી ,
કોઇ તેના માલમીયા હોય સંત । અનેક૦ ૭

નરસૈયાનો સ્વામીરે જેહ કોઇ અનુભવેરેજી ,
તેહ નરના ભવજલનો થાય અન્ત । અનેક૦ ૮

(૫૭)

રાગ આશાસીં ઝપતાલ

 જ્યાં લગી આત્મા તત્વ ચીન્યો નહિ ,
ત્યાં લગી સાધના સર્વ જૂઠી ,
મનુષા દેહ તારો એમ એલે ગયો
માવઠાની જેમ વૃષ્ટિ વૂઠી । ૧

શું થયું સ્નાન પૂજાને સેવા થકી ,
શું થયું ઘેર રહી દાન કીધે ,
શું થયું ધરી જટા ભસ્મ લેપન કર્યે ,
શું થયુ વાલનો લોચ કીધે । ૨

શુ થયું તપ અને તિરથ કીધા થકી ,
શું થયું માલ ગ્રહી નામ લીધે ,
શું થયું તીલકને તુલસી ધાર્યા થકી ,
શું થયું ગંગાજલ પાન કીધે । ૩

शुं थयुं व्याकरण वाणी वदे,
शुं थयुं रागने रंग जाण्यो,
शुं थयुं खट् दर्शन सेव्या थकी,
शुं थयुं वरणना भेद आण्ये। ४

ए छे प्रपंच सहु पेट भरवा तणा,
आतमाराम परिब्रह्म न जोयो।
भणे नरसैंयो तत्व दरशन विना,
रत्न चिंतामणि जन्म खोयो। ५

(५८)

आई शरण तुमारी भगवान,
बिना दरशन तज दूंगी प्राण (२) आई शरण तुम्हारी भगवान।

अन्तरो

इस दुनिया के फंद से मुझको, तुम बिन कोन छुडाए,
कीसे कहुं दुःख की ए कहानी, को मेरी पीर मिटाए,
मैं पापीन हुं तुम तारण हा...र, रखीओ मेरा मान।

अब मैं आई शरण तुमारी भगवान,
बिन दरशन तर्ज दूंगी प्राण। आई० १

अन्तरो

नीकसी हुं मैं घर से, प्रभु दरस भिखारिन बन के,
पीयुने ही घेर मुख फेर लियो हे रखवारे दीनन के,
अब कीरपा कर मोरी आस मिटा ..वो दासी अपनी जान,

अब मैं आई शरण तुमारी भगवान,
बिन दरशन तज दूंगी प्राण। आई० २

अन्तरो

सारी दुनियाँ मुझसे बिगडी, बिगड़ा सारा कोम,
दरस दिखाकर बिगड़ी बना दो, मैं आन परी तोरे धाम,
तुम बिन तडप रही हूँ निसदिन, प्रेमनगर सुनसान,
अब मैं आई शरण तुमारी भगवान,
बिन दरशन तज दूँगी प्राण। आई० ३

(५९)

संत पुरुषनो ने सग ! बाइ म्हा'रे भाग्ये मल्यो छे ! ॥ टेक० ॥
संत पुरुषनां रे संग बाइ म्हा'रे भाग्ये मल्यो छे। म्हारे०
संत पुरुषनां दरशन करतां (२) चढे रे चोगणो रंग रे। म्हारे०
अडस० तीरथ म्हारा संतने चरणे (२) कोटी काशीने कोटी
गंग रे। म्हारे०
दुरिजन लोकनो संग न करिए, (२) पाडे भजनमां भंग रे। म्हारे०
निंदाना करतल नरके रे जाशे (२) भोगवशे थइ भोरींग रे। म्हारे०
मीरां कहे प्रभु संत चरण रज (२) उडीने लागो म्हारे अंग रे। म्हारे०

(६०)

ज्ञानी ज्ञान दशानी दौर कदी चूके नहीं रे।
विधविधना वहेवारो करता, सघलु करता छता अकरता,
दोर उपर जेम सुरता नट चूके नहीं रे ज्ञानी०
जलमां कमलो निशदिन याता, जल संघाते जलमय थाता,
असंगता जेम संग छतां मूके नहीं रे ज्ञानी०
हाव भाव विधिविधना करती, आडी अवली दृष्टि करती,
हेल नजरथी युवती ! जेम चूके नहीं रे ज्ञानी०

રસના રસમાં રસમય બનતી, સ્વાદે સ્વાદે તનમય થાતી,
અલેપતા જેમ લેપ છતાં મૂકે નહીં રે જ્ઞાની૦
જ્ઞાની ગુરુ ભગવાન મહાત્મા, દેહધારી છતાં પરમાત્મા,
નિજ મહિમામાં રમતાં આત્મલક્ષ ચુકે નહી રે જ્ઞાની૦

(६१)

आबू के गिरि उच्च शिखर पर,
आस पास या यहीं कहीं,
किसी कन्दरा में रहते हैं,
"शांतिसूरजी" संत महान।
कोई कहता है जग तारक,
कोई कहता है दीन-बन्धु,
कोई कहता है जगतगुरु,
कोई कहता है योगिराज,
कोई कहता है त्यागी महान,
पर मैं कहता इच्छा पूरक,
है भक्तो के प्रति दयावान।
वे शांतिसूरजी संत महान।
(केसरीचन्द सेठिया)

(६२)

दर्शन कर सब दुख टल जायें,
कितने ही भय संकट आयें,
प्रभु नाम आपका लेने से,
बस शान्ति शान्ति ही छा जाये।

शोषित है ये प्यासे मानव,
उन्मत आज ये है दानव,
वैज्ञानिक ले अपने साधन,
है आज मिटाने जग को आये।
नेतागण जो भारत के है,
भारत में क्यों पकड़े जावें,
प्रभु! "शान्ति" तुम्हारी शक्ति को,
यदि भारत एक बार पा जाये।

(छगनलाल महात्मा "राघव")

(६३)

आओ शान्ति प्यारे नैया डूब रही है।
तुम हो गुरुवर हम है पुजारी,
हम अज्ञानी तुम पंचव्रत धारी,
तैरावो नाव हमारी नैया डूब रही है।
योगीराज हो योग के दाता,
भवमंडल के तुम हो त्राता,
"करुणेश" जाय बलिहारी नैया डूब रही है।
आबू शैल में वास तुम्हारा,
गुण गावे भू-मण्डल सारा,
तैरावो नाव हमारी नैया डूब रही है।
जग बीच भँवर, भँवर में नैया,
खेवट हो तुम्हीं खेवैया,
"हजारी" जाय बलिहारी नैया डूब रही है।

(हजारीमल वाडिया)

(६४)

सकल विश्व में नाम तुम्हारा,
सकल जग तेरा यश गाता है।
"शान्ति" नाम से पाप कर्म,
सब रोग दूर हट जाते हैं।
"शान्ति" "शान्ति" रट ले प्यारे,
जो रटता सो पाता है।
कुछ नहीं लेना, कुछ नहीं देना,
जो आता सो जाता है।
तो मूर्ख क्यों नहीं भजता
क्यों भजने से शर्माता है?
हृदय बसाले बस "शान्ति" को,
क्यों जीवन व्यर्थ गमाता है।
"मगनकुँवरी" दासी चरणों की,
"करुणेश" तेरा गुण गाता है।

(हजारीमल वाडिया)

(६५)

अम आशा आजे सिद्ध थई, गुरुदेव तणा शुभ दर्शन थी,
मनमन्दिर आनंद वृष्टि थई, गुरुदेव तणा शुभ दर्शन थी। १
एक दर्शन चाहुं गुरुदेव तणु, बीजुं दर्शन चाहुं नहिं अन्य तणुं,
ए अमुलख दर्शना पामुं जदी, भवसागर तरवो सहेल न थी। २
एवा सदगुरुवर जन सोधा न थी, अति पुन्य संयोगे मले जो कदी,
ए गुरुवर हाथ कदी पकड़े एने कर्म रिपु कदी नव जकड़े। ३
सदगुरु शरण मले जो कदी, आतम ज्योति दर्शन पामुं जदी,
अंतरमा एवी लय लागी, दीन भोगी बने कंइ अहोभागी। ४

(६६)

संध्या-प्रार्थना

जय जय गुरुदेवा, प्रभु जय जय गुरुदेवा,
आरति करूँ सद्गुरुनी (२) चरण कमल सेवा
प्रभु चरण कमल सेवा। जय०
चित्त चंदन जळ शब्दे, प्रेम तणा पुष्पे,
प्रभु प्रेम तणा पुष्पे,
ज्ञान गुलाल अबील शील (२) धीरजना धूपे
प्रभु धीरजना धूपे। जय०
दीपक अविचल नाम, अक्षत अनुभवना
प्रभु अक्षत अनुभवना;
कर्पुर आरती करणा (२) लग रही गुरु जपना
प्रभु लग रही जपना। जय०
नथी इच्छा अंतरमां, कांइ लेवा के देवा
प्रभु लेवा के देवा;
भजन गुरु प्रतापे (२) पामुं हुं नित्य सेवा
प्रभु पामुं हुं नित्य सेवा। जय०
वहु इच्छा अंतरमां निशदिन, गुरु दर्शन करवा
प्रभु गुरु दर्शन करवा
धन्य धन्य अहोभाग्य (२) जे दिन पामुं गुरु सेवा
प्रभु पामुं गुरु सेवा। जय०
आरति सद्गुरु केरी, जे कोइ गाशे
प्रभु जे कोइ गाशे,
भाव धरी सेवक कहे (२) शांति थइ जाशे
प्रभु शांति थइ जाशे। जय०

(६७)

नवकार मंत्र स्तवन

भजो भवि मंत्र बड़ो नवकार ।

मंत्र बड़ो नवकार भविजन सब मंत्रन सरदार ॥ भजो० ॥ ए आंकड़ी ॥
डाकिनी शाकिनी भूत पिशाचिनी, सब उपसर्ग संहार ॥ भजो० ॥ १ ॥
एक गौआलिक गौवा चरावर्त, फिरतो अटवी मंझार ॥ भजो० ॥ २ ॥
महा उपकारी मुनिवर भारी, सीखाव्यो नवकार ॥ भजो० ॥ ३ ॥
गौवां चरातीं गाम में आवत, नदी वहे अनपार ॥ भजो० ॥ ४ ॥
महामंत्र ने शुद्ध मन जपीयो, तो सरिता भई दोय डार ॥ भजो० ॥ ५ ॥
दोय मित्र मारग में जातां, थई पानी प्यास अपार ॥ भजो० ॥ ६ ॥
मुसलमीन तब दृढ थई बैठो, जबर जप्यो नवकार ॥ भजो० ॥ ७ ॥
ध्यान चढ्यो जिम पानी चढ़ियो, आखिर कुवा बार ॥ भजो० ॥ ८ ॥
दुष्ट चोर ने शूली चढ़ायो, थई सेठ सोबत सुखकार ॥ भजो० ॥ ९ ॥
पर उपकार करन हल फलियो, सीखाव्यो नवकार ॥ भजो० ॥१०॥
शूली ऊपर शुद्ध जपंता, अन्ते सुर अवतार ॥ भजो० ॥११॥
श्रीमती सेठ तणी वर पुत्री, स्मरती शुद्ध नवकार ॥ भजो० ॥१२॥
सासु हुक्म थी पन्नग फरस्यो, सती य गुणी नवकार ॥ भजो० ॥१३॥
वस्त्राभूषण पुष्पनी माला, थया अहिवर ना तिणवार ॥ भजो० ॥१४॥
भील तणे भव में शुद्ध जपियो, खपियो पाप अपार ॥ भजो० ॥१५॥
काल करीने भील थी हाथी, पायो पंचम कलप मझार ॥ भजो० ॥१६॥
राजगृही नगरी नो बालक, नाम अमर कुमार ॥ भजो० ॥१७॥
विप्र अगनी में होम करंता, समर्यो नवकार ॥ भजो० ॥१८॥
अमर आवी ने अमर कुमार रे, कियो सिंहासन सुखकार ॥ भजो० ॥१९॥
सेठनी जहाज समुद्र पडंता, सुमरीयो सुर करी पार ॥ भजो० ॥२०॥

प्रात. उठीन नित-नित जपिये, ज्यूं आतम रो उद्धार ॥ भजो० ॥२१॥
सोवत जागत उठत बैठत, हिये धरो हर बार ॥ भजो० ॥२२॥
मंत्र जंत्र ने तंत्र औषधि, सबसे अधिक उदार ॥ भजो० ॥२३॥
जंगल झाड़ उजाड़ पहाड़ में मंत्र बड़ो ओकार ॥ भजो० ॥२४॥

(६८)

नवकार मंत्र

भजो मन सार मंत्र नवकार, ध्यान से उतरोगे भवपार ॥टेर॥

मैना सुन्दरी श्री पाल को, नवपद को आधार ।
मन का मनोरथ पूरण हो गया, मिट गया कुष्ट विकार ॥ भजो० ॥ १ ॥

जलती आग सुं नाग निकारयो, दियो पार्श्व नवकार ।
हुआ धरणेन्द्र पद्मावती सरे, भुवनपति सरदार ॥ भजो० ॥ २ ॥

सेठ सुदर्शन शुली चढ़ता, जप्यो मंत्र नवकार ।
शूली मिटकर भयो सिंहासन, महिमा शील अपार ॥ भजो० ॥ ३ ॥

यही मंत्र महा प्रभाविक, चौदह पूरब का है सार ।
'लाल' कहे शुद्ध भाव से जपतां, करते मगलाचार ॥ भजो० ॥ ४ ॥

विश्वप्रेम

विश्वात्मा प्रेम रूप है। प्रेम जगत के कण कण में समाया हुआ है। प्रेम की ज्योति से ही सूर्य-चन्द्र और तारागण प्रकाशमान है। प्रेम से ही जीवन की ज्योति जग रही है। जहाँ प्रेम नही है वहाँ प्राण नही है, जड़ता है, अज्ञानता है, अन्धकार है। इसीलिए समस्त प्राणियो का चरम ध्येय प्रेम की विद्युत्-धारा की खोज करना है। जीवसृष्टि में जो अनवरत गति दिखाई पडती है यह प्रेम की प्राप्ति के लिए उनकी दौड है। जन्म जन्मान्तर इस अथक एव अमन्द प्रवेग से पूर्ण है। एक मात्र प्रेमरूप परमात्मा से तादात्म्य पाने के लिए ही अणु अणु प्रयासी है। यह सतत प्रयास विश्व का परम पवित्र धर्म है। इससे विमुख होकर जीव-जगत् का कल्याण नही।

जीवन में प्रेम का जो सुन्दर झरना दिनरात निरन्तर झरता रहता है उसमें स्नानकरके आत्मा सुख, शान्ति और शीतलता का अनुभव करता है। जहाँ प्रेम का जितना विशुद्ध प्रकाश है वहाँ उतना ही आकर्षण है। माता में, पिता में, स्त्री में, पुत्र मे, मित्र में, सहयोगी में आकर्षण का आधार यही प्रेमतत्त्व है। इसीके खिचाव से एक दूसरे के पास खिचे चले जाते है। वह जीवन सचमुच ऊसर और अभागा है जो प्रेम-रस की वर्षा से वञ्चित रहा है।

प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के धर्मग्रथ आखिर इसी परिणाम पर पहुँचते है। सबके मतान्तर और विरोध यही आकर एक रूप ग्रहण कर लेते है। बाइबिल और कुरान, अवेस्ता और वेद के विभेद आदि स्थापित करनेवाली यही विश्वभावना है। चीटी से हाथी तक इसके बन्धन से बद्ध है। हमारे सौरमडल के ग्रह और उपग्रह तक इस नैसर्गिक नियम

की अवहेलना करने में अपना कल्याण नही देखते । यही कारण है ज्ञानोपजीवी मानव आदि काल से इसके महत्त्व की ओर आकर्षित रहा है। वह इसकी महिमा के आगे सम्मान से सिर झुकाने में कभी विरत नही हुआ है। सृष्टि के आदिम युग में प्राणि-प्रसार अपने विरल स्वरूप में था। उस समय प्रेम की भावना के कसौटी पर इस तरह कसे जाने की आवश्यकता ही बहुत कम थी। उस समय प्रेम-प्रदर्शन एक सहज कर्तव्य था। किसी उल्लेखनीय त्याग के विना भी पारस्परिक सद्भाव सम्भव था। आज की प्राणि-सकुल सृष्टि में प्रेम का निर्वाह कठिन होता जा रहा है। अपने अपने अस्तित्व के लिए परस्पर सहार की भावना प्रवल हो रही है। उस प्राचीनतम काल को सतयुग का नाम देकर हम आज भी उसके प्रति अपनी श्रद्धाजलि समर्पित करते है। हमारा आज का समय कलियुग कहलाता है। इस कलिकाल से सभी कुछ कठिन परीक्षा में से होकर गुज़रे विना अपनी विशुद्धता प्रमाणित नही कर सकता।

ससार में प्रेम का दुष्काल इतना कभी नही पडा था। आज की दुनिया प्रेम के लिए तरस रही है। सृष्टि का कण कण उसके विना छटपटा रहा है। कभी-कभी चेतना में यह अनुभूति घनीभूत होने लगती है कि प्रेम की मरीचिका प्राणी के लिए परम प्राप्य नही हो सकती। स्वार्थ को छोड़ देने से जीव का निस्तार नही है। दिन प्रतिदिन जहाँ सघर्ष की ज्वाला वढती जा रही है वहाँ इसी तरह का अनास्थामय वातावरण वनने के सिवा और क्या हो सकता है। इसीका यह फल है कि दुनिया पथभ्रष्ट होकर प्रतिगामी वन रही है। घर घर में दीवारें खडी हो रही हैं। कोई वश और कुलीनता का दावा करके अपने को शेष से श्रेष्ठ वता रहा है। कोई धन के वल पर गरीवो को चूसने के वन्धेज वाँधता है। कोई वर्ण की खाई खोद रहा है। कोई भाषा के आधार पर अपनी राष्ट्रीयता अलग खडी कर रहा है। पता नही यह प्रवृत्ति ससार को किधर ले जायगी ?

जब सावन की घनघोर भयावनी काली घटाएँ आकाश मे उमडती-घुमडती है तब भी वहाँ विद्युत् के कर प्रकाश की दो चार रेखाएँ बिखेर ही देते हैं। इसी प्रकार प्रेम की विडम्बना के इस युग में भी उस पर आस्था रखनेवाले महात्माओ का अस्तित्व मौजूद है। प्रेम रूप विश्वात्मा की उपासना की यह शृखला किसी काल में छिन्नभिन्न नही हुई है। बराबर रहती आई है। उसने सदा इस पर अपनी अटूट श्रद्धा प्रदर्शित की है। बल्कि इन लोगो ने प्रेम के क्षेत्र को अधिक से अधिक विस्तार देने की रोचक कल्पना में विचरण करके समय को सार्थक किया है। इसी निरतर प्रेम की आराधना द्वारा मनुष्य ने सहस्रो वर्ष से अब तक जो जो सुन्दर स्वप्न देखे हैं, उनमे सबसे मनोहर स्वप्न है विश्वप्रेम।

इसे हमने स्वप्न इसलिए कहा है कि यह अब तक विचारो और कल्पनाओ मे ही रहा है। इसे मानसिक जगत् से बाहर प्रयोग की भूमि पर आने का बहुत कम अवसर मिला है। यदि यदा-कदा कभी मिला भी है तो वैयक्तिक जीवन तक ही इसकी सीमा रही है। भगवान महावीर, बुद्ध और ईसा ऐसे ही प्रातःस्मरणीय महापुरुष है जिन्होने विश्वप्रेम को सुन्दर स्वप्न न रहने देकर अपने अपने जीवन मे उतार लिया है। अपने जीवन से बाहर जनता जनार्दन ही नही बल्कि प्राणिमात्र के लिए उसका विस्तार किया है। उस सन्देश का जयघोष जहाँ तक गूँजा वहाँ तक एक नई सृष्टि का जन्म हुआ। नये नये आदर्श खडे हुए। नये दृष्टिकोण का निर्माण हुआ। साहित्य, शिल्प, धर्म, दर्शन और सदाचार को नई आँखें मिली। परन्तु यह प्रभावना व्यक्तिगत जीवन में जितनी रूप हुई उतनी सार्वजनिक जीवन में चरितार्थ नही हुई। विरोधी शक्तियो के अवरोध के कारण या अननुकूल क्षेत्र मे पडने से वह अपना केवल अल्पकालिक चमत्कार दिखाकर सीमाबद्ध हो गई। परन्तु विचार शीलो ने सदा यह अनुभव किया है कि एक मात्र यही, विश्वप्रेम ही, दुखमय ससार के लिए, ससार के भीतर, साकार स्वर्ग है। इस विषय मे उन्होने कभी अपने विश्वास

में शिथिलता नही आने दी। उनकी अटल धारणा है कि प्राणी यदि चाहे और प्रयत्नशील होकर इसकी आराधना मे लग जाय तो वह विश्वात्मा की इस सबसे प्रिय विभूति से अपनी आत्मा का अभिषेक कर सकता है, और ससार के कल्याण का पथ प्रशस्त हो सकता है।

विश्वप्रेम के अन्तर्गत विश्व की व्याख्या मे निश्चय ही केवल मनुष्य का समावेश नही होता। विश्व-ब्रह्माण्ड मे बसनेवाले छोटे मोटे सभी प्राणी उसमे आ जाते हैं। शेष असमर्थ या निरीह लोगो को उससे वचित रक्खा गया हो। विश्वप्रेम की इतनी सकुचित व्याख्या करने से वह अपनी सार्थकता खो बैठेगा। जो लोग इसी सकुचित अर्थ मे उसका प्रयोग करके अपने को विश्वबन्धुत्व का हिमायती मानते हैं वे वस्तुत विश्वप्रेमी न होकर मानव-प्रेमी हैं।

मानवप्रेमी होना भी सहज नही है। उसके लिए भी पर्याप्त त्याग और व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। परन्तु विश्व-बन्धुत्व के पथ का यह एक निर्देशक पत्थर मात्र है। वह महान साधना सहज सिद्ध नही हो सकती। वह एक बहुत लम्बा पथ है। अपने आदि काल से मानव इस ओर अग्रसर होने के लिए सचेष्ट है। कभी आगे बढता है कभी पीछे लौटता है। प्रयोग चल रहा है। सफलता और विफलता से विकास का पथ विस्तृत हो रहा है। समय-समय पर दिव्य आत्माएँ इसका सन्देश लेकर आती है। उनके आने से पथ आलोकित हो जाता है, फिर वह प्रकाश धूमिल होकर अन्धकार मे डूब जाता है। परन्तु इसमें सन्देह नही कि इन प्रयोगो में सत्य की परीक्षा हो जाती है और प्रति वार आलोक-रेखा से लिखे हुए ये लेख पढने में आते है कि विश्व का कल्याण विश्वप्रेम की सुन्दर भावना में ही समन्वित है।

विश्वप्रेम विचार-साधना का वह तट है, जहाँ पहुँच जाने पर सब कुछ पीछे, बहुत पीछे, छूट जाता है। स्त्री, बच्चे, घर-परिवार, वश-जाति, समाज-राष्ट्र यहाँ तक कि मानवप्रेम भी विश्वप्रेम के पथ की ओर

अग्रसर होने के दूरी-निर्देशक-पत्थर (mile stones) मात्र हैं। जो साधक जितनी दूर तक चल चुका है, वह उद्देश्य के उतना ही समीप पहुँच गया है तो भी उद्दिष्ट स्थल अभी दूर है। आदर्श की प्राप्ति अभी शेष है। वहाँ पहुँचने के लिए आत्मा को जितना पवित्र कर लेने की आवश्यकता, उतना अभी हम कहाँ कर सके हैं? जिस दिन कर सकेंगे, उसी दिन हमारा अपना घर हमारा घर न होकर विश्व का प्रागण ही हमारा घर होगा। उसी दिन ससार का क्षुद्र से क्षुद्र प्राणी और हिंसक से हिंसक जीव भी हमारे हाड-मास का एक अग होगा। हम अपने हृदय के प्रेमामृत को बिना अपने पराये के भेदभाव के समान भाव से सबके लिए प्रस्तुत कर सकेंगे। तब कोई पराया न होगा। कोई शत्रु न होगा। इधर उधर सब तरफ सब कुछ अपना ही अपना होगा।

प्रेमाचरण का व्यापार जब तक इतना विस्तृत नही हो जाता कि उसकी प्रतिध्वनि विश्व के कण-कण से ध्वनित हो उठे तब तक हमारा प्रयास अधूरा है। कुछेक हृदयो तक जब तक यह भावना सीमित है तब तक विश्वभावना की सार्थकता अपने पूरे अर्थों मे नही हुई। हमारे सामने एक नही अनेक दृष्टान्त मौजूद है, जब हिंसक जीवो ने भी महात्माओ और ऋषि-मुनियो के सहवास मे प्रेम का व्यवहार किया है। इसलिए यह भी नही कहा जा सकता कि विश्वप्रेम कभी विश्वधर्म नही हो सकता। यदि इसके प्रचार और प्रसार करने की भावना को मनुष्य उसी प्रकार अपनाते जिस प्रकार उसने अनेक क्षुद्र बातो को जीवन मे स्थान दिया है, तो यह असम्भव भी सम्भव हो सकता है।

तथ्यवादियो की ओर से सदा ही इसका विरोध किया जाता रहा है। वे अपनी आँखो के आगे दिनरात भाई के द्वारा भाई का सर्वस्व हरण, पिता के द्वारा बेटे के स्वार्थ का विरोध, मित्र के द्वारा मित्र का नाश देखते है। ये देखते है कि ससार स्वार्थ-युद्ध का ही पर्याय है। निस्वार्थ-उदारता उदारता के लिए उनकी समझ मे नही आती। 'घर में दिया जलाये

विना मस्जिद मे जलाने' की नीति उनके निकट कोरा आदर्शवाद है। जीवन में वह कभी उतरते हुए देखा नही गया। यदि मान भी लें कि विश्वप्रेम ससार का धर्म हो जायगा तो उनका कहना है कि इससे दुनिया का परित्राण नही होगा। ससार की गति सायकिल के पहिये की तरह है। घूम फिर कर वह फिर अपने पूर्व स्थान पर आ जाती है। इस विश्व-प्रेम को विस्तार देने की प्रतिक्रिया यह होगी कि जीवन की समस्या पहले से भी अधिक उग्र रूप ग्रहण करेगी और प्रचड स्वार्थवाद फैलेगा। यदि सभी विश्वप्रेमी बन जायेंगे तो वह दिन दूर न होगा जब जीवनोपयोगी पदार्थों का अभाव प्रतीत होने लगेगा। भूखी प्यासी दुनिया तब न जाने क्या क्या अकाड ताण्डव करेगी ? इस प्रत्यक्ष सत्य से आँख मूँदकर हम कैसे इसका समर्थन कर सकते है ? यह एक आदर्श और सुन्दर भावना अवश्य है और इसका ध्यान सम्पन्न-जीवन के मनोरजन का विषय भी है। इसी कारण इसकी परिधि सर्वत्यागी महात्माओ या साधनसम्पन्न, सुखी और विचारशील गृहस्थो तक ही रही है। वही इसकी शोभा है। जैसे अपने वृन्त से च्युत होकर एक सुन्दर फूल की दुर्दशा होती है, उसी तरह विश्वप्रेम रूपी आकाशकुसुम को भी यथार्थ जीवन की कठोर धरित्री पर ले आने में सम्भव है।

यह ठीक है, परन्तु विश्वप्रेम के समर्थक तथाकथित सम्भावित परिणाम का दायित्व अपने से अधिक समर्थ उस महाशक्ति के कन्धो पर रखना अच्छा समझते है, जिसने विश्वकल्याणकारी इस मनोहर भावना का उनके अन्तर मे प्रकाश किया है। जब वे अपने लिए जीने का प्रश्न लेकर नही चलते तो जीवनरक्षा के साधनो की चिन्ता मे व्यग्र क्यो हो ? उनका यह उत्तर सबसे बडा उत्तर है। यदि इससे भी विपक्षियो को सन्तोष नही हो सकता तो विश्वप्रेम के अपने ही जैसे सुन्दर परिणाम तक उन्हे प्रतीक्षा करनी होगी। कारण, जीवन की वर्तमान व्यवस्था एक सघर्ष है और इसका शान्तिपर्व है विश्वप्रेम।

श्री आचार्य देव का प्रवचन

श्री जगद्गुरु आचार्यदेव श्री श्री श्री १००८ श्री श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज साहेब का प्रवचन

महात्मनां कीर्तिनं हि श्रेय' श्रेयास्पदम् ।

अर्थ महापुरुषों का गुणगान, कीर्तन, भक्ति आदि करना कल्याण और मोक्षपद का हेतु है ।

हेमचद्राचार्य वचनामृत सर्ग १

क्षणमपि सज्जन संगतिरेका भवति भवार्णव तरणे नौका ।

अर्थ केवल एक क्षण की भी महापुरुष की सगति ससार सिन्धु को तैरने के लिये नौका रूप है ।

जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहारणिच्छ्रए मुपह ।
एकेण विणा छिज्जई तित्थं अण्णेण उण तच्चं ॥

अर्थ यदि तुम जिनमत स्वीकार करना चाहते हो तो व्यवहार और निश्चय दोनो मे एक का भी त्याग न करो । व्यवहार के बिना तीर्थ एव आचार का उच्छेद हो जाता है और निश्चय बिना तत्त्व ही का विनाश हो जाता है ।

(आगमसार)

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि ।
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥
जातोऽस्मि तेन जनबांधव ! दुःखपात्रं ।
यस्मात्क्रिया॰ प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥

अर्थ हे प्रभो ! मैंने आपके वचनो को सुना है, आपकी पूजा भी की है, और आपके दर्शन भी किये हैं किन्तु निश्चय ही मैंने आपको अपने हृदय मे धारण नही किया। हे विश्वबान्धव ! इसी कारण मैं दुखपात्र बना हुआ हूँ। सच है, भावशून्य क्रियाएँ फलवती नही होती।

— कल्याणमन्दिर

जिसे उथले तालाब का स्वच्छ पानी पीना है, उसे हल्के हाथ से जल लेना होगा। यदि थोडा सा भी पानी हिल गया तो नीचे का सब मैल ऊपर चला आयेगा और सारा पानी गँदला हो जायगा। इसी प्रकार यदि तुम पवित्र रहना चाहते हो तो विश्वास और सावधानी के साथ ईश्वर से प्रेम करो। व्यर्थ के विवादो में अपना समय नष्ट न करो, नही तो नाना प्रकार की शका-प्रतिशकाओ से तुम्हारा मस्तिष्क गन्दा हो जायगा।

अपि पौरुषमादेयं शास्त्रं चेद्युक्ति बोधक
मन्यत्वार्ष मपि त्याज्य भाव्य न्यायैकसेविनाम्।
युक्तियुक्तमुपादेय वचन बालकादपि
अन्यत्तृणमिव त्याज्यमप्युक्त पद्मजन्मना॥

अर्थ- न्याय-प्रिय व्यक्ति को मानव-कृत शास्त्र भी, यदि युक्ति-बोधक हो तो, स्वीकार करना चाहिए एव युक्ति-शून्य-शास्त्र को चाहे वह प्राचीन ऋषि, महर्षियो का ही कहा हुआ क्यो न हो, छोड देना चाहिये। युक्ति-सगत बात बालक की भी स्वीकार करनी चाहिये एव युक्तिहीन बात को, ब्रह्मा की भी कही हुई हो तो, तृण की तरह त्याग देनी चाहिये।

वशिष्ठ विचार

जं अन्नाणी कम्मं खवेइ पुव्वाहिं वास कोडीहिं।
त नाणी तिगुत्तो खवेइ उस्सासमेत्तेणं॥

अर्थ अज्ञानी जीव जिस कर्म को करोडो पूर्व वर्षों में क्षय करता है, ज्ञानी पुरुष उसी कर्म को एक श्वासोच्छ्वास मे क्षीण कर देता है।

नाशाम्वरत्वे न सिताम्वरत्वे
न तत्ववादे न च तर्कवादे।
न पक्षसेवा श्रयणेना मुक्तिः
कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव ॥

पाठान्तरे न च संजमे न च मौने न च तपसि
कषाय मुक्तिः किलमुक्तिरेव।

भावार्थ दिगम्वर अथवा श्वेताम्वर अवस्था में मोक्ष नही है। तत्ववाद अथवा तर्कवाद से भी आत्म-कल्याण नहीं होता। पक्ष विशेष का आश्रय लेने से आत्मा की शुद्धि नहीं होती, न सयम, मौन और तप से ही आत्मा की मुक्ति होती है। किन्तु कषायो का त्याग करने से ही आत्मा की शुद्धि एव मुक्ति होती है।

उपदेश तरंगिणी

मासोपवास निरतोऽस्तु तनोतु सत्यं
ध्यानं करोतु विदधातु वहिर्निवासम्।
ब्रह्मव्रत धरतु भैक्ष्यरतोऽस्तु नित्यं
रोष करोति यदि सर्व मनर्थकं तत्॥

अर्थ चाहे मास-मास के उपवास करो, सत्य वोलो, शुभ ध्यान ध्याओ, वाहर वन मे निवास करो, ब्रह्मचर्य का पालन करो और सदा भिक्षा से निर्वाह करो। किन्तु यदि मनुष्य क्रोध करता है तो ये सभी व्रत अनुष्ठान निष्फल है।

ज्ञानसार अष्टक

मासे मासे उ जो वालो कुसग्गेणं तु भुंजए।
न सो सुयक्खाय धम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं॥

अर्थ- जो अज्ञानी जीव मास-मास की तपस्या करता है और कुशाग्र

परिमाण आहार से पारणा करता है। इतनी कठोर तपस्या करनेवाला भी सर्वज्ञ-भाषित सर्वविरति-धर्म की सोलहवी कला को प्राप्त नही करता।

उत्तराध्ययन, ६वाँ अध्ययन

अवश्यं नाशिनो बाह्यस्यास्यास्य कृते ततः।
कोपः कार्यो नान्तरङ्ग ध्रुवं धर्मधनापहः॥

अर्थ अवश्य ही नाश होनेवाले इस बाह्य शरीर के लिये कोप न करना चाहिये क्योकि यह आभ्यन्तर धर्म रूप धनका नाश करनेवाला है।

भावविजयगणि कृत, उत्तराध्ययन-सूत्र टीका अ० २५

ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थो यतिस्तथा।
सर्वते च शमेनैव प्राप्नुवन्ति परां गतिम्॥

अर्थ चाहे ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ हो अथवा वानप्रस्थ हो या यति हो ये सभी शम अर्थात् शान्ति द्वारा ही उत्तम गति को प्राप्त करते है।

इतिहास समुच्चय, अ० ४, श्लोक ३४

To forget is human but to forgive is divine

अर्थ भूल जाना मनुष्य का स्वभाव है किन्तु क्षमा देना ईश्वरीय गुण है।

शेक्सपीयर

प्रणिहन्ति क्षणार्धेन साम्यमालम्ब्य कर्म तत्।
यन्न हन्यान्नरस्तीव्र तपसा जन्मकोटिभिः॥

अर्थ जिस कर्म को मनुष्य करोडो जन्म तक तीव्र तप करके भी नाश नही कर सकता उसी कर्म को समता भाव का आलम्बन लेकर आत्मा आधे क्षण में नष्ट कर देता है।

तत्त्वामृत

पठन्ति वेदशास्त्राणि धर्मशास्त्र मीमासकाः ।
आत्मतत्त्वं नैव जानन्ति द्रव्यपीके दर्वी यथा ॥

भावार्थ जो लोग वेदशास्त्र, धर्मशास्त्र मीमासा आदि सभी कुछ पढ लेते है किन्तु आत्मा का स्वरूप नही जानते, वे लोग हलुए में रही हुई कुडछी समान है । कुडछी हजारो मन हलुआ हिलाती है पर हलुआ का स्वाद वह नही जानती । इसी प्रकार उपरोक्त आध्यात्मिक शास्त्रो के पढ जाने के वाद भी यदि पण्डित लोगों को आत्मतत्व का ज्ञान नही होता तो फिर उस कुडछी की अपेक्षा उनमे क्या विशेषता है ।

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

अर्थ जिस पुरुष की अपने इष्ट देव मे परम भक्ति होती है और जैसी देव में भक्ति होती है वैसी ही गुरु मे होती है उस महात्मा पुरुष के हृदय मे कहे हुए ये सभी अर्थ प्रकाशमान होते है ।

श्वेताम्बर उपनिषद्

सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया, दुक्खपडिकूला, अप्पिय वहा, पियजीविणो, जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं (तम्हा) जातिवाएज्ज किंचणं ।

अर्थ सभी जीवो को अपनी आयु प्रिय है, वे सुख चाहते हैं और दु ख से द्वेष करते है, उन्हें वध अप्रिय लगता है और जीवन प्रिय लगता है अतएव वे दीर्घ आयु चाहते है । सभी को जीवन प्रिय है । इसलिये किसी भी जीव के प्राणो का नाश न करना चाहिये ।

आचारांग सूत्र

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हंतव्वा न अज्जीवेयव्वा न परिघेत्तव्वा न परियावेयव्वा न उद्दवेयव्वा । एसधम्मेधुवे णिच्चे सासए समिच्च लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ।

अर्थ सर्व प्राण भूत जीव और सत्व का हनन न करना चाहिये, उन पर अनुशासन न करना चाहिये, उन्हे ग्रहण न करना चाहिये, परिताप न देना चाहिये तथा प्राणों से नियुक्त न करना चाहिये। यह अर्थ ध्रुव नित्य और शाश्वत है। षट्कार्य लोक के स्वरूप को सम्यक् प्रकार से जानकर तीर्थंकर भगवान् ने इस धर्म का उपदेश दिया है।

आचाराग सूत्र

जयणा धम्मस्स जणणी।

अर्थ यातना दया धर्म की माता है।

भगवती सूत्र

जइविय णिगणे किसे चरे जइविय भुंजिय मासमंतसो।
जे इह मायाइ मिज्जई आगंता गब्भाय णंतसो॥

अर्थ चाहे कोई नग्न रहे, वस्त्र के न होने से उसका शरीर क्षीण हो जाय, अथवा कोई मास-मास के अन्त मे भोजन करे किन्तु यदि वह माया तथा अन्य कषायो से युक्त है तो उसे अनन्त वार गर्भवास प्राप्त करना होगा।

सूत्रकृताग, २ अध्ययन

न वि मुण्डिएण समणो।

अर्थ मुडन करा लेने से ही कोई साधु नही वन जाता।

उत्तराध्ययन, २५ अध्ययन, गाथा ३१

समयाए समणो होइ।

अर्थ जिसमें समता भाव है वही साधु है।

उत्तराध्ययन, २५ अध्ययन गाथा ३२

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं।

अर्थ श्रद्धा बिना चारित्र नही है।

उत्तराध्ययन; २८ अध्ययन

जिम जिम बहुश्रुत भण्यो बहुशिष्ये परिवर्यो।
तिम तिम जिन शासन नो वैरी जो निश्चय हृदय नवि धर्यो।

अर्थ—यदि हृदय मे निश्चय-आत्मस्वरूप धारण न किया तो ज्यों ज्यो बहुत शास्त्रो का अध्ययन किया, बहुत से शिष्यो से घिरा रहा त्यों त्यो जिन शासन का शत्रु होता गया।

अप्पणा सच्चमेसिज्जा मित्ति भूएसु कप्पए।

अर्थ आत्मा द्वारा सत्य की गवेषणा करे एव प्राणियो के साथ मैत्री भाव रखे।

उत्तराध्ययन, अ० ५, गाथा २

पापवत्स्वपि चात्यन्तं स्वकर्म निहतेष्वलम्।
अनुकम्पैव सत्त्वेषु न्याय्य धर्मोऽयमुत्तमः॥

अर्थ व्याध, कसाई आदि पापी प्राणी अपने कर्मों से ही मरे हुए है। ऐसे जीवो पर भी द्वेष न रखते हुए अत्यन्त अनुकम्पा भाव रखना, यही श्रेष्ठ न्याय्य धर्म है।

सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।

अर्थ—जिसकी आत्मा सरल और भद्र है उसी की शुद्धि होती है और शुद्ध आत्मा मे ही धर्म रहता है।

उत्तराध्ययन सूत्र

अंजू समाहि।

अर्थ जहाँ सरलता है वहाँ आत्म-समाधि है।

सूत्रकृतांग

द्रव्य क्रिया रुचि जीवड़ा जी भावधर्म रुचि हीन।
उपदेशक पण तेहवा जी शुं करे जीव नवीन॥

चन्द्रानन सामलीए अरदास।

भावार्थ- जीवो मे द्रव्य क्रिया करने की रुचि है, भावधर्म पर उनकी अरुचि है। फिर उपदेश देनेवाले भी उन्हे वैसे ही मिल गये। अब जीव नवीन क्या कर सकता है ?

श्री देवचन्द्रजी महाराज

चउव्विह ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताते कम्मं पगरेंति तजहा पगइ भद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए।

अर्थ चार स्थानो से जीव मनुष्यायु योग्य कर्म बाँधते है, जैसे भद्र प्रकृति होने से, स्वभावत विनम्र होने से, अनुकम्पा सहित होने से और मात्सर्य का त्याग करने से।

— स्थानाग सूत्र ४, सूत्र ३७३

तहारूवाणं समणाण णिग्गथाण एगे वयण णिण्हन्ति सिज्झंन्ति, बुज्झन्ति, मुच्चन्ति परिनिव्वायति सव्व दुक्खाणमंत करेन्ति।

अर्थ एक एक पुरुष तथा रूप श्रमण निर्ग्रन्थो के वचन ग्रहण करते है। वे सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होते है, निर्वाण को प्राप्त करते है एव सभी दुःखो का नाश करते है।

स्थानागसूत्र

अहिंसा सत्य मस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः॥

भावार्थ अहिसा, सत्य, अचौर्य, लोभत्याग एव इन्द्रिय-जय सक्षेप में यह धर्म मनु ने चारो वर्णों के लिये कहा है।

मनु

पाणातिपातवेरमणि मुसावादवेरमणि अदिन्नादाणवेरमणि,
सुरा मेरेय मज्ज पमायत्थान वेरमणि कामेसुमिच्छाचार वेरमणि॥

भावार्थ प्राणातिपात (जीवहिसा) का त्याग, मृषावाद (असत्य)

का त्याग, अदत्तादान (चोरी) का त्याग, सुरा मदिरा आदि प्रमाद स्थानों का त्याग, इन्द्रिय विषयो मे स्वेच्छाचार का त्याग।

बौद्धमत

Mose's commandments are:

Thou shalt not kill, not bear false witness, not steal, not commit adultery, not covet anything that is thy neighbour's.

भावार्थ ईसा मसीह की ये आज्ञाएँ है तू किसी को न मारना, किसी की झूठी गवाही न देना, चोरी मत करना, व्यभिचार न करना और अपने पडोसी की किसी चीज की इच्छा न करना।

ईसा मसीह

Slay none, God has forbidden it, except justice requires it,.. ...And avoid false words, woman and man who steal shall lose their hands. Intoxicants are satan's own device. They who avoid unlawfulness in sex and watchfully and resolutely control their senses, they alone achieve success.

भावार्थ किसी की हत्या न करो। ईश्वर ने हत्या करना मना किया है बशर्ते कि न्याय के लिये वैसा करना जरूरी हो। असत्य भाषण का त्याग करो। जो स्त्री पुरुष चोरी करते है उनके हाथ नष्ट हो जायँगे। नशा करनेवाले लोग शैतान की ही प्रतिमूर्ति है। जो स्त्री पुरुषो के अनैतिक सम्बन्ध का परिहार करते है और सावधानी के साथ दृढता पूर्वक अपनी इन्द्रियों का दमन करते है, केवल वे ही लोग सफलता प्राप्त करते है।

इस्लाम

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।

अर्थ धर्म वह है जिससे विकास एव कल्याण की प्राप्ति हो।

वैशेषिक सूत्र

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो॥

भावार्थ धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। अहिंसा सयम और तप धर्म के प्रकार है। जिस पुरुष का चित्त सदा धर्म मे लगा रहता है उसे देवता भी मस्तक झुकाते है।

दशवैकालिक द्रुमपुष्पिकाध्ययन

कुल ता लो इला कलामातिन सवाइन बैनाना वा बैना कुम।

भावार्थ आओ, हम सभी ऊपर उठें और सर्व सम्मत महान् सत्य एव सिद्धान्तो के आधार पर एक दूसरे से मिले।

कुरान

Whatever things have been rightly said, among all men, are the property of us Christians.

भावार्थ अखिल मानव जाति मे, जो भी बाते यथार्थ रूप से कही गई है वे सभी हम क्रिश्चियन लोगो की सम्पत्ति है।

(The place of Christianity in the Religions of the world).

गवामनेक वर्णाना क्षीरस्यास्त्येकवर्णता।
क्षीरवत्पश्यत ज्ञानं लिंगिनस्तु गवा यथा॥

भावार्थ जैसे गाये जुदे जुदे रग की होती है किन्तु उन सभी का दूध एक ही रग का यानी सफेद होता है। इसी तरह मतानुयायी भी गायो की तरह अनेक प्रकार के है किन्तु उन सभी का ज्ञान दूध की तरह एक ही प्रकार का है।

उपनिषद्

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ ! सर्वशः ।

भावार्थ हे अर्जुन ! सर्वत्र मनुष्य मेरे ही मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं ।

गीता।

तुमासि नाम सच्चेव ज हंतव्वति मन्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं अज्जावे अव्वंति मन्नसि, तुमं सि नाम सच्चेव जं परियावेयव्वंति मन्नसि, तुमं सि नाम सच्चेव जं परिघेत्तव्वं ति मन्नसि एवं तुमं सि नाम सच्चेव जं उद्दवेयव्वंति मन्नसि ।

भावार्थ जब तुम किसीको हनन, आज्ञापन, परिताप, परिग्रह एवं विनाश योग्य समझते हो तो यह विचार करो कि वह तुम ही हो । उसकी आत्मा और तुम्हारी आत्मा एक सी है । तुम्हें जैसे हननादि अप्रिय है और तुम उनसे बचना चाहते हो उसी प्रकार उसकी आत्मा को भी समझो ।

आचारांग लोकसाराध्ययन

मनुष्य यह विचार किया करता है कि मुझे जीने की इच्छा है, मरने की नही; सुख की इच्छा है, दुःख की नही । यदि मैं अपनी ही तरह सुख की इच्छा करनेवाले प्राणी को मार डालूँ तो क्या ये बाते उसे अच्छी लगेंगी ?

बुद्धलीला

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवह घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥

भावार्थ सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नही चाहता । अतएव, प्राणी-हिंसा को भीषण समझकर, मुनि लोग उसका त्याग करते हैं ।

——दशवैकालिक-महासारकथा-महाच

तुझे कोई गाली दे, और गाली ही नही, तेरे गाल पर कोई थप्पड़ मार दे, या पत्थर या हथियार से तेरे शरीर पर कोई प्रहार करे, तो भी

तेरे चित्त मे विकार नही आना चाहिये, तेरे मुँह से गन्दे शब्द नही निकलने चाहिये, तेरे मन मे उस समय भी तेरे शत्रु के प्रति अनुकपा और मैत्री का भाव रहना चाहिये और किसी भी हालत मे क्रोध नही आना चाहिये ।

मज्झिमनिकाय

Resist not evil; if any smite thee on the right cheek, turn the left to him as well.. ...Bless them that curse you. Love your enemies and pray for those who persecute you.

भावार्थ बुराई से बुराई को न रोको । यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड मारे तो तुम बायाँ गाल भी उसकी ओर फेर दो ।. . . . जो तुम्हे शाप देते हैं उनके लिये तुम शुभ कामना करो । अपने शत्रुओ से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं उनके लिये तुम प्रार्थना करो ।

——ईसा मसीह

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं, ततो न विजिगुप्सते । ततो न विचिकित्सते ॥

भावार्थ जो सभी प्राणियो को अपने आत्मा मे देखता है और अपने आत्मा को सभी प्राणियो मे देखता है । वह किसी से द्वेष नही करता और न उन पर सन्देह ही करता है ।

——उपनिषद्

अफजलुल ईमानो अन्तो हिब्बा लिनन्ना से मा तो हिब्बो लिनफ़्सेका, वा तरवो लहुम लहुमा मा तरवो हा लिनफ़्सेका ।

भावार्थ सर्वोत्तम धर्म यह है कि तुम अपने लिये जो चाहते हो वही तुम दूसरो के लिये भी पसन्द करो और अपने लिये जिसको तुम दु खदायी समझते हो उसे दूसरो के लिये भी वैसा ही समझो ।

——हदीस

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ॥
न तत्परस्य कुर्वीत स्यादनिष्टं यदात्मनः ।
यद्यदात्मनि चेच्छेत् तत्परस्यापि चिन्तयेत् ॥

भावार्थ जो बाते आत्मा के लिये प्रतिकूल है उनका दूसरो के प्रति आचरण न करना यही धर्म का सर्वस्व है । इसे सुनो और समझो । जो तुम्हारे लिये अनिष्ट है जिसे तुम अपने लिये किया जाना नही चाहते उसे तुम दूसरो के लिये भी कभी न करो । जो तुम्हे इष्ट है, जिसे तुम अपने लिये चाहते हो उसकी तुम दूसरो के लिये भी इच्छा करो ।

महाभारत

No man liveth unto himself......We are all parts of one another......God hath made of one blood all nations that dwell upon the face of the earth.

भावार्थ मानव अपने लिये जीवन धारण नही करता हम सभी एक दूसरे के अवयव है परमात्मा ने उन सभी राष्ट्रो को एक ही खून से बनाया है जो इस भूतल पर निवास करते है ।

जो व्यक्ति अपने बाये हाथ को गन्दा होने देता है और अपने दाहिने हाथ से उसकी सफाई नही करता; वह शीघ्र ही अपनी देह के सभी अवयवो को मैला कर देगा । अवयवो के सिवा पूर्ण अवयवी है ही क्या ? वे ही तो उसका निर्माण करते हैं, और मनुष्य शरीर भी क्या है ? केवल अवयव ही तो । तब फिर प्रत्येक अवयव को प्रत्येक दूसरे अवयव की सार सँभाल क्यो न करनी चाहिये ?

महात्मा बुद्ध

अश्रफुल ईमाने उन यमा नफ्फुनिसा, वा अश्रफुल ईमाने उन यस्ल मुस्लिसा । मिनलिसाने का वे यदेका ।

भावार्थ सर्वश्रेष्ठ धर्म यही है कि दूसरे प्राणी तुझसे अपने आपको सुरक्षित समझें। यही सर्वोच्च इस्लाम है कि तेरे मुख और हाथो से सभी अपने को सही सलामत महसूस करें।

कुरान

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।

भावार्थ अहिंसा की सिद्धि होने पर वैर का अभाव हो जाता है।

योग सूत्र

तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानभिद्रोहः।

भावार्थ सदा के लिये सब प्रकार से सभी प्राणियो पर द्वेष भाव का न होना ही अहिंसा है।

योगभाष्य

उत्तरे च यम नियमास्तन्मूलास्तत्सिद्धि परतयैव तत्प्रतिपादनाय प्रतिपाद्यन्ते तदवदातकरणायैवोपादीयन्ते।

भावार्थ अहिंसा के बाद कहे जानेवाले सत्य आदि यम और नियम सभी का मूल अहिंसा है। अहिंसा का प्रतिपादन करने के लिये ही उनका प्रतिपादन किया जाता है। अहिंसा को विशुद्ध करने के लिए ही उनका आचरण किया जाता है।

योगभाष्य

पंचेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च उच्छ्वास निःश्वास मथात्पदायुः।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्ता स्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा॥

भावार्थ पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और काया, श्वासोच्छ्वास तथा आयु ये दस प्राण है और इन्हें जुदा करना हिंसा है।

जैनशास्त्र

प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।

भावार्थ प्रमाद पूर्ण योग से प्राणो का वध करना हिंसा है ।

उमास्वाति

प्रमादोऽज्ञान संशय विपर्यय रागद्वेष स्मृतिभ्रंश योगदुष्प्रणिधान धर्मानादरभेदादष्टविधः ।

भावार्थ अज्ञान, सशय, विपर्यय, राग, द्वेष, स्मृतिभ्रश, मन वचन काया की बुरी प्रवृत्ति और धर्म मे अनादर ये प्रमाद के आठ भेद है ।

स खल्वयं ब्राह्मणो यथा यथा व्रतानि बहूनि समादित्सते तथा तथा प्रमाद कृतेभ्यो हिंसा निदानेभ्यो निवर्तमानस्तामेवावदातरूपामहिंसां करोति ।

भावार्थ ब्रह्म अर्थात् आत्मा का मनन करनेवाला ब्राह्मण जैसे जैसे बहुत से व्रतो को ग्रहण करता है, वैसे वैसे हिंसा के कारणो से निवृत्त होता हुआ वह अहिंसा को ही निर्मल बनाता जाता है ।

उपनिषद्

My creed of non-violence is an extremely active force It has no room for cowardice or even weakness. There is hope for a violent man to be some day non-violent, but there is none for a coward.

भावार्थ मेरा अहिंसा-सिद्धान्त एक अत्यन्त क्रियाशील शक्ति है । उसमें कायरता और कमजोरी के लिये कोई स्थान नही है । एक हिंसक व्यक्ति का किसी दिन अहिंसक बन जाना सम्भव है पर कायर व्यक्ति के लिये कोई भी आशा नही ।

— महात्मा गाधी

Perfect love casteth out fear.

अर्थ पूर्णप्रेम भय को भगा देता है।

बाइबिल

Beloved, let us love one another; for love is of God, and everyone that loveth is born of God and knoweth God He that loveth not, knoweth not God For God is love

भावार्थ प्यारे, हम परस्पर प्रेम करे; क्योंकि प्रेम ही परमात्मा है। जो व्यक्ति प्रेम करता है वह परमात्मा की सन्तान है और वह उसे जानता है। जो प्रेम नही करता, वह परमात्मा को भी नही जानता क्योकि वह प्रेमरूप है।

बाइबिल

God is love in essence. Love is God in solution. In so much as we love we are in God and God is in us, and in so far as we do not love, we are without God, in this world or any other. The ideal church of all religions and philosophies is the same. It is the union of all who love in the service of all who suffer.

भावार्थ परमात्मा प्रेम का सूक्ष्म-सार-रूप है और प्रेम परमात्मा का स्थूल रूप है। जितने अशो मे हम प्रेम करते है उतने ही अशो में हम परमात्मा में और परमात्मा हमारे आत्मा में है और जितने अशो में हम प्रेम नही करते, हमारी आत्मा, इस विश्व में या अन्यत्र कही भी, परमात्मा से वचित है। सभी धर्म एव दर्शनशास्त्रो का आदर्श आराधना मन्दिर यही है। दुखी जीवो की सेवा करनेवाले महात्मा पुरुषो का यही सम्मिलन केन्द्र है।

एक पाश्चात्य लेखक

सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधइ ॥

भावार्थ जो सभी प्राणियों को आत्मा के समान समझता है, उन्हें सम्यक्-शास्त्रोक्त विधि अनुसार देखता है अर्थात् उनको यातना नही करता है, नवीन कर्म प्रवाह को रोकता है एवं पाँचो इन्द्रियों का दमन करता है, उसके पाप कर्म का बन्ध नही होता।

दशवैकालिक षड्जीवनिकाध्ययन

Love......God with all thy heart......soul...... mind Love thy neighbours as thy self (God). On these two commandments hang all the law and the prophets.

भावार्थ हृदय की पूर्ण श्रद्धा के साथ परमात्मा से प्रेम करो। परमात्मा के प्रेम मे अपने आत्मा और मन को लगा दो। पड़ोसियों से ठीक उसी तरह प्रेम करो जैसा कि तुम अपनी आत्मा से (परमात्मा से) प्रेम करते हो। सभी नियम और पैग़म्बरों का आधार ये ही दो आज्ञाए है।

बाइबिल पेथ्यू

He that loveth another hath fulfilled the law. For this, thou shalt not commit adultery, not kill, not steal, not bear false witness, not covet; and if there be any other commandment; it is (all) briefly comprehended in this saying, namely: 'Thou shalt love thy neighbour as thyself. Love worketh no ill to his neighbour. Love is the fulfilling of the law.

भावार्थ जो दूसरे से प्रेम करता है उसीने नियमो का परिपालन किया है। व्यभिचार न कर, हिंसा न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे, आसक्ति न रख इनका तथा यदि और भी कोई आज्ञा हो तो उसका भी, सक्षेपत इस कथन में समावेश हो जाता है कि पडोसी को आत्मवत् समझ कर उससे प्रेम कर। प्रेम अपने पड़ोसी का बुरा नही करता। प्रेम करना नियमो का पालन करना है।

बाइबिल रोमन्स

खामेमि सव्वे जीवा सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसुं वेरं मज्झ न केणइ॥

भावार्थ मैं सभी जीवो से क्षमा चाहता हूँ। सभी जीव मुझे क्षमा करें। सभी प्राणियो के साथ मेरा मैत्रीभाव है। किसी के भी साथ मेरा वैरभाव नही है।

आवश्यक सूत्र

Seek to be in harmony with all your neighbours; live in amity with your brethren

भावार्थ अपने समी पड़ोसियो से मेल रखो और बन्धुओ के साथ प्रेमपूर्वक रहो।

(C. Shu King)

अल खुलको अल इलाही, फा अहब्बुल खलकी इल इलाही मान अहसान इलाहुलइलाही।

भावार्थ सभी प्राणी ईश्वर के परिवार रूप है। और वही ईश्वर को सबसे अधिक प्यारा है जो उसके परिवार के साथ अधिकाधिक भलाई करता है।

हदीस

मेत्तञ्च सब्बलोकस्मिं मानसं भावये अपरिमाणं।
उद्धं अधो च तिरियञ्च असम्बाधं अवेरं असपत्तं॥

भावार्थ चारे लोक में ऊपर नीचे और तिर्छे सभी जगह सभी प्राणियों में बाधा एव वैर रहित, असपत्न असीम मैत्री भाव की वृद्धि करो।

सुत्तनिपात मेत्तसुत्त

To the good I would be good; and to the not-good I would also be good, in order to make them good. To those who are sincere I am sincere; and to those who are not sincere I am sincere; thus all grow to be sincere.

भावार्थ जो लोग भले है उनके प्रति मैं भला रहूँगा और जो भले नही है उनके प्रति भी मैं इस ख्याल से भला रहूँगा कि वे भी भले बन जायँ। इसी प्रकार जो आदमी खरे है उनके साथ मैं खरा वर्ताव करूँगा और जो खरे नही है उनके साथ भी मेरा वर्ताव खरा ही रहेगा ताकि हम सभी खरे बन जायँ।

(Chuang-tse)

Love your enemies, bless them that curse you, do good to them that hate you, and pray for them which despitefully use you and persecute you; ......for if you love them which love you, what reward have ye? Do not even the publicans the same.

भावार्थ शत्रुओ से प्रेम करो, जो तुम्हें शाप देते है उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुमसे द्वेष करते है उनका भला करो, जो तुम्हारे साथ घृणा का वर्ताव करते है या तुम पर अत्याचार करते है उनके लिये परमात्मा से प्रार्थना

करो। क्योंकि यदि तुम उन लोगो से प्रेम करते हो जो तुम्हें चाहते हैं तो तुम्हें क्या पारितोषिक मिलेगा ? क्या (पब्लिकन) भी ऐसा नही करते ?

—बाइबिल

Take no thought, what shall we eat ? What shall we drink? But seek first His Kingdom and His righteousness; and all these things shall be added unto you.

भावार्थ हम क्या खायेंगे ? क्या पियेंगे ? इसका ख्याल भी न करो। किन्तु सर्वप्रथम परमात्मा के साम्राज्य एव उसकी भलमनसाहत की खोज करो और ये सभी चीजें तुम्हें स्वत सुलभ हो जायेंगी ?

—बाइबिल

आत्मा वा अरे श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य, नान्योऽतोऽस्ति विज्ञाता।

भावार्थ श्रवण, मनन एव निदिध्यास का विषय आत्मा ही है, इसके सिवा और कोई विज्ञाता नही है।

—उपनिषद्

Great heaven is intelligent, clear seeing, and is with you in all your doings.

भावार्थ बुद्धिमत्तापूर्वक वस्तु स्वरूप का स्पष्ट दर्शन ही महान् स्वर्ग है और वह तुम्हारे सभी कार्यों में तुम्हारे साथ रहता है।

(C. Shu King)

Behold, the kingdom of God is within you. Know ye not that ye are the temple of God, and the spirit of God dwelleth in you.

भावार्थ देखो, परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारे ही अन्दर है। क्या तुम नही जानते कि तुम ही परमात्मा के मन्दिर हो और उसकी शक्ति तुम्ही में निवास करती है ?

बाइबिल

अप्पा कत्ता विकत्ता य सुहाण य दुहाण य।
अप्पा मित्त ममित्तं च दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ॥

भावार्थ सदनुष्ठान रत आत्मा सुख देनेवाला और दुख दूर करने वाला है और दुराचार प्रवृत्त यही आत्मा दुःख देनेवाला और सुखो का छीननेवाला हो जाता है। सदनुष्ठान रत आत्मा ही उपकारी होने से मित्ररूप है एवं दुराचार प्रवृत्त आत्मा अपकारी होने से शत्रुरूप है। इस प्रकार आत्मा ही सुख दुख का देनेवाला है और यही मित्र और शत्रु रूप है।

उत्तराध्ययन; महानिर्ग्रन्थीय अध्ययन

Ye are the temple of God......Ye are the Salt of the earth......If the salt lose its Savor, with what shall it be flavoured?......What shall it profit a man if he gain the whole world but lose his own soul?

भावार्थ तुम स्वय देवालय हो, तुम ही भूमंडल के सारभाग हो। यदि नमक अपना स्वाद गँवा दे तो फिर उसमें क्या विशेषता रहेगी। इसी प्रकार यदि मानव अपनी आत्मा को खो दे तो फिर अखिल विश्व के पा लेने पर भी उसे क्या लाभ होगा!

बाइबिल

What the undeveloped man seeks is others; what the advanced man seeks is himself.

भावार्थ अविकसित मानव की खोज के विषय आत्मा से भिन्न पदार्थ है जबकि उन्नत मानव अपनी आत्मा की ही खोज करता है।

कन्फ्यूशस

The human mind partaking of Divinity, is an abode of the Deity, which is the Spiritual Essence. There exists no highest Deity outside the human mind.

भावार्थ देवत्व को ग्रहण करनेवाला मानव का मस्तिष्क ही देव-मन्दिर है। यही आध्यात्मिक मूल तत्व है। मनुष्य के मस्तिष्क के बाहर किसी भी महान् देवता का अस्तित्व नहीं है।

(Shinto Din Ju)

सनातनं गुह्यमिदं ब्रवीमि, न मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्।

भावार्थ मानव से अधिक महान् कोई भी नहीं है, यह सनातन रहस्य तुम्हें बतलाता हूँ।

महाभारते

The heavens are still; no sound.
Where there shall God be found?
Search not in distant skies;
In man's own heart he lies.

भावार्थ स्वर्ग शान्त है, वहाँ से कोई आवाज नहीं आती। फिर ईश्वर की खोज कहाँ की जाय? सुदूर आकाश में उसे न ढूंढो। वह मनुष्य के हृदय में ही विराजमान है।

Shao Yung

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मा ह्येवात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

भावार्थ आत्मा का उद्धार आत्मा से ही करो, किन्तु उसका पतन न होने दो। आत्मा ही आत्मा का मित्र है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।

गीता

Thy money perish with thee, because thou hast thought that the gift of God may be purchased with money.

भावार्थ तेरा धन तेरे साथ नष्ट हो जाय क्योंकि तूने धन के बल पर ईश्वर की देन को खरीदने का विचार किया है।

— बाइबिल

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते, इमम्मि लोए अदुवा परत्था।

भावार्थ क्या इस लोक में और क्या परलोक में कही भी प्रमत्त व्यक्ति धन द्वारा अपनी रक्षा नही कर सकता।

उत्तराध्ययन, असस्कृताध्ययन

धणेण किं धम्मधुराहिगारे सयणेण वा कामगुणेहिं चेव।

भावार्थ- जहाँ धर्माचरण का प्रश्न है वहाँ धन से कोई मतलब नही। इसी तरह स्वजन एव शब्दादि इन्द्रिय विषयों का भी उसके साथ कोई सम्बन्ध नही है।

उत्तराध्यायन; इपुकारीयाध्ययन

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन।

भावीर्थ प्रवचन, बुद्धि एव अनेक शास्त्रों का ज्ञान—इन सभी से आत्म-लाभ करना सम्भव नही है।

उपनिषद्

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्ये।

भावार्थ धन से मानव की आत्मा तृप्ति नही होती।

कठोपनिषद्

If thine enemy be hungry, give him bread; if be thirsty, give him water; so shalt thou heap

coals of fire upon his head; and so the Lord shall award thee.

भावार्थ यदि तुम्हारा शत्रु भूखा हो तो उसे भोजन दो, यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाओ। ऐसा करने से तुम उसके सिर पर अंगारों की राशि रख दोगे अर्थात् पश्चात्ताप की अग्नि से वह जलने लगेगा। परमात्मा से तुम्हें इसके लिये पारितोषिक मिलेगा।

बाइबिल

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुंज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एससेपरमो जओ॥

भावार्थ एक शूरवीर योद्धा दुर्जेय सग्राम में दस लाख सैनिको को जीत लेता है और एक महात्मा अपने आत्मा पर विजय प्राप्त कर लेता है। इन दोनो में महात्मा की विजय ही श्रेष्ठ विजय है।

उत्तराध्ययन; नमिप्रव्रज्याध्ययन

अत्ता हि अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया।
अत्तना हि सुदतेन नाथं लभ्भति दुल्लभं॥

भावार्थ आत्मा ही आत्मा का सहायक है। इसके सिवा अन्य कौन सहायक हो सकता है। आत्मा का दमन कर मनुष्य दुर्लभ सहायक प्राप्त कर लेता है।

—धम्मपद-आत्मवर्ग

अप्पा चेवे दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य॥

भावार्थ - आत्मा का दमन करना बड़ा कठिन है इसलिए आत्मा ही का दमन करना चाहिये। जिसने अपनी आत्मा को वश कर लिया है वह इस लोक और परलोक दोनो जगह सुखी होता है।

उत्तराध्ययन, विनयश्रुताध्ययन

प्रायणे लोक तापेन तप्यन्ते साधवो जनाः ।
परमाराधनं तद्धि पुरुषस्याखिलात्मनः ॥

भावार्थ सन्त पुरुष विश्व के दुख को अपना दुख समझ कर दुखी होते हैं और यही विश्वात्मरूप परमात्मा की सबसे बडी सेवा है ।

(भागवत)

येन केन प्रकारेण यस्य कस्यापि जन्तुनः ।
संतोषं जनयेद्धीमांस्तदेवेश्वर पूजनम् ॥

भावार्थ बुद्धिशील मनुष्य को चाहिये कि वह हर तरह से विश्व के सभी प्राणियो को शान्ति पहुँचावे । यही ईश्वर की पूजा है ।

(भागवत)

The disease of men is this that they neglect their own field and go to weed the field of others, and what they require from others is great while what they lay upon themselves is light.

भावार्थ मनुष्यो मे यही बीमारी है कि वे अपने खेत को छोड दूसरो के खेत की सफाई करने जाते है वे अपने दोष न देख दूसरो के छिद्र खोजते रहते हैं; वे दूसरो से महानता की आशा रखते है जब कि वे स्वयं तुच्छता अपनाये रहते है ।

कन्फयूशस-मेन्शस

To attempt to correct others while one's own virtue is clouded is to set one's own virtue a task for which it is inadequate.

भावार्थ यदि किसी व्यक्ति में सद्गुण प्रगट नही हुए है तो फिर दूसरो का सुधार करने का प्रयत्न करना ऐसे कार्य में हाथ डालना है जिसके लिये वह सर्वथा अयोग्य है ।

(Taoist writings)

न परेसं विलोमानि न परेसं कताकतं।
अत्तनो व अवेक्खेय्य कतानि कतानि च ॥

भावार्थ दूसरे की त्रुटियो या कृत्य अकृत्यो को न देखो। अपनी ही त्रुटियो तथा अपने ही कृत्य अकृत्यों पर विचार करो।

(धम्मपद-पुप्फवग्ग)

यदन्यैर्विहितं नेच्छेदात्मन. कर्म पुरुषः।
अपत्रपेत वा यस्मान्न तत्कुर्यात् कदाचन ॥

भावार्थ जो कार्य मनुष्य दूसरो को बताना नही चाहता अथवा जिस कार्य के करने में लज्जा अनुभव करता है वह कार्य उसे कभी न करना चाहिये।

(महाभारत)

यो चात्तान समुक्कंसे परं च मवजानति।
निहीनो सने मानेन तं जञ्ञा वसलो इति ॥

भावार्थ -जो अहंभाव के कारण पतित होकर आत्म स्तुति और परनिन्दा करता है उसे चाडाल समझना चाहिए।

सुत्तनिपात-वसलसुत्त

जे परिभवइ परं जणं संसारे परिवत्तई महं।
अदु इंखणिया उपाविया इति संखाय मुणी न मज्जइ ॥

भावार्थ जो व्यक्ति दूसरे की अवज्ञा करता है वह चिरकाल तक ससार मे परिभ्रमण करता रहता है। परनिन्दा भी आत्मा को नीचे गिरानेवाली है। यह जानकर मुनि, जाति कुल श्रुत तप आदि किसी का भी मद नही करता।

सूयगड़ा वेतालीयाध्ययन

The recompense of good and evil follows as the shadow follows the figure.

भावार्थ जैसे छाया मूर्ति का अनुसरण करती है इसी प्रकार सुकृत और दुष्कृत के अच्छे बुरे फल भी कार्यों का अनुसरण करते हैं।

Ta Tai Shang Ken Ying Pien.

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेवा।
स्वयं कृतं स्वेन फलेन युज्येत शरीर हे निस्तर यत्त्वया कृतम्॥

भावार्थ—सुख दुख का देनेवाला कोई नही है। दूसरा देता है यह सोचना अज्ञानता है। हमारे अच्छे बुरे कार्य ही अच्छा बुरा फल देते हैं। हे शरीर, तूने जो किया है उसका फल भोग कर तू कृतार्थ हो।

(गरुडपुराण)

मा असाबेका मिन हेसनतिन फ़मिन इलाही,
व मा असाबेका फ़मिन सयातिन फमिन नफ़्सेका।

भावार्थ तुम मे जो अच्छापन है वह सभी परमात्मा से प्राप्त हुआ है और तुम मे जो बुराइयाँ है वे सभी तुम्ही से उत्पन्न हुई हैं।

(कुरान)

जज़ा उन बेमा कानु यमलून।

भावार्थ तुम जो भी करते हो उसके बदले मे तुम्हें वैसा ही प्रतिदान और पुरस्कार प्राप्त होगा।

(कुरान)

Those who do evil in the open light of day men will punish them. Those who do evil in secret God will punish them. Who fears both man and God he is fit to walk alone.

भावार्थ जो दिन दहाडे बुरे कार्य करते है उन्हें मनुष्य दड देते है। जो छिपकर बुरे काम करते है उन्हे ईश्वर दड देता है। जो मनुष्य

और ईश्वर दोनो से भय रखता है वह एकाकी विचरण करने योग्य है।

(T. Kwang-Tze.)

इदफा बिलाते हेया अहसन।

भावार्थ बुराइयों को दबा लो और उनके बदले खूबियाँ पैदा करो।

(कुरान)

पमाय कम्म माहंसु अप्पमायं तहावरं।

भावार्थ तीर्थंकरदेव ने प्रमाद ही को कर्म कहा है और अप्रमाद को कर्म का अभाव बतलाया है।

(सूयगडाग वीर्याध्ययन)

अप्पमादो अमतपदं पमादो मच्चुनो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति ये पमत्ता यथा मता॥

भावार्थ अप्रमाद से अमृतपद की प्राप्ति होती है और प्रमाद से मृत्यु की। जो प्रमाद रहित है वे नही मरते और प्रमादी मरे के ही समान है।

(धम्मपद-अप्रमाद वर्ग)

Not learning but doing is the cheif thing.

भावार्थ - ज्ञान नही किन्तु क्रिया ही प्रधान वस्तु है।

(Judaism)

यथापि रुचिरं पुप्फं वण्णवन्तं अगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा अफला होति अकुब्बतो॥

भावार्थ जैसे फूल सुन्दर और रंगदार हो किन्तु सुगन्ध वाला न हो तो वह व्यर्थ है। इसी प्रकार सुन्दर शब्द यदि कार्यरूप में परिणत न किये जायँ तो व्यर्थ होते है।

धम्मपद-पुप्फवर्ग

Choose ye the path of Action Dutiful......For the deluded one who giveth up All action he forfeiteth welfare too.

भावार्थ कर्त्तव्यमय कर्ममार्ग को स्वीकार करो। जो भ्रान्त व्यक्ति सभी कर्म छोड बैठता है वह सुख से भी वंचित हो जाता है।

(Zend-Avesta)

जहा खरो चंदणभारवाही भारस्सभागी न हु चंदणस्स।
एवं खुणाणी चरणेण हीणो भारस्सभागी न हु सुग्गईए॥

भावार्थ जैसे चन्दन का भार ढोनेवाला गधा केवल भार ही का भागी है चन्दन की शीतलता उसे नही मिलती। इसी प्रकार चारित्र रहित ज्ञानी का ज्ञान केवल भार रूप है। वह सुगति का अधिकारी नही होता।

विशेषावश्यक भाष्य

एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ कंचण।

भावार्थ ज्ञानी के ज्ञान सीखने का यही सार है कि वह किसी प्राणी की हिंसा न करे। इसी प्रकार असत्य आदि पाप का सेवन भी न करे।

सूयगडांग समयाध्ययन

यो च वस्स सतं जीवे कुसीतो हीन वीरियो।
एकाहं जीवितं सेय्यो विरियमारभतो दळ्हं॥

भावार्थ सौ वर्ष के आलसी और हीनवीर्य जीवन की अपेक्षा एक दिन का दृढ कर्मण्यता का जीवन अच्छा है।

धम्मपद-सहस्सवर्ग

सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वओ अप्पमत्तस्स नत्थि भयं।

भावार्थ प्रमादी को चारो ओर से भय ही भय है। सावधान व्यक्ति को कही से भी भय नही है।

(आचारांग शीतोष्णीयाध्ययन)

पण्डुपलासो व दानिसि यमपुरिसा पि च तं उपट्ठिता ।
उय्यागमुखे च तिट्ठसि पाथेय्यं पि च तेन विज्जति ॥

भावार्थ तू पीले पत्ते के समान है । यम के दूत तेरी ताक मे है । तू वियोग के द्वार पर खडा है । (मरने के निकट है) और मार्ग के लिये तेरे पास पथेय नही है ।

(धम्मपद-मलवर्ग)

दुमपत्तए पंडुरए जहा निवडइ एइगणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए ॥

भावार्थ- जैसे वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता कुछ दिन बीतने पर गिर पडता है । इसी प्रकार मनुष्य का जीवन है । इसलिये हे गौतम ! तू समय मात्र भी प्रमाद न करना ।

(उत्तराध्ययन; द्रुमपत्रकाध्ययन)

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥

भावार्थ जिसकी मृत्यु के साथ मैत्री है, जो मृत्यु से बचकर भग सकता है अथवा जो यह निश्चयपूर्वक जानता है कि मैं नही मरूँगा, ऐसा व्यक्ति ही किसी कार्य के लिये कल पर निर्भर रह सकता है ।

उत्तराध्ययन; इषुकारीयाध्ययन

अस्सय्यो मिन्नि व इतमामे मिन्नु ला ।

भावार्थ प्रयत्न करना मनुष्य का काम है, सफलता ईश्वर के हाथ है ।

(हदीस)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

भावार्थ पुरुषार्थ करना तेरे वश की बात है पर फल पर तेरा कोई अधिकार नही है ।

(गीता)

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं कडाण कम्माण न मुक्खऽत्थि ॥

भावार्थ प्राणियों के सभी सदनुष्ठान सफल होते हैं। जो कर्म किये हैं उनका फल भोगना ही पडता है, उनसे छुटकारा सम्भव नही है।

(उत्तराध्ययन चित्रसंभूतीयाध्ययन)

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए।
जयं भुजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधइ ॥

भावार्थ जो यतना के साथ चलता है, खडा होता है, बैठता है और सोता है तथा जो यतना के साथ भोजन करता है एवं बातचीत करता है उसे पाप कर्म का बन्ध नही होता।

(दशवैकालिक षड्जीवनिकाध्ययन)

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषा न चेतांसि त एव धीराः ॥

भावार्थ विकारोत्पादक पदार्थों के बीच में रहते हुए भी जिनका चित्त विकृत नही होता, वे ही धीर पुरुष हैं।

(कालिदास)

Blessed is the man that endureth temptation.

भावार्थ पवित्र मनुष्य वही है जो प्रलोभन के वश नही होता।

(बाइबिल)

जे य कंते पिये भोए लद्धे विपिट्ठी कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए से हु चाईत्ति वुच्चइ ॥

भावार्थ जो पुरुष प्राप्त मनोज्ञ एव प्रिय भोगो को ठुकरा देता है। स्वाधीन भोग सामग्री का त्याग कर देता है, वही त्यागी कहा जाता है।

(दशवैकालिक श्रामण्यपूर्वकाध्ययन)

वत्थ गंध मलंकारमित्थिओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजति न से चाइत्ति वुच्चइ ॥

भावार्थ जो अभाव या पराधीनता के कारण विवश हो वस्त्र, गन्ध, आभूषण, स्त्री, शय्या आदि भोग सामग्री का उपयोग नही करता वह त्यागी नही है

(दशवैकालिक; श्रामण्यपूर्वकाध्ययन)

नत्थि रागसमो अग्गी, नत्थि दोस समो गहो ।
नत्थि मोह समं जालं, नत्थि तण्हा समा नदी ॥

भावार्थ राग के समान कोई आग नही, द्वेष के समान कोई अरिष्ट ग्रह नही, मोह के समान कोई जाल नही और तृष्णा के समान कोई नदी नही ॥

धम्मपद-मलवर्ग

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं कम्मं च मोहप्पभवं वदन्ति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइमरण वयन्ति ॥

भावार्थ राग और द्वेष कर्म के मूल कारण है । कर्म मोह से उत्पन्न होता है । जन्म मृत्यु का मूल हेतु कर्म है और जन्म और मृत्यु को ही दुःख कहा जाता है ।

(उत्तराध्ययन, प्रमादस्थानाध्ययन)

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होई लोहो लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥

भावार्थ जिसके मोह नही है उसका दुःख नष्ट हो गया । जिसके तृष्णा नही है उससे मोह दूर हो गया । जिसके लोभ नही है उसके तृष्णा भी नही है और जिसके पास कुछ नही है उसे लोभ भी नही है ।

जहा लाहो तहा लोहो लाहा लोहो पवड्ढई ।

भावार्थ ज्यो ज्यो वस्तु का लाभ होता है त्यो त्यो लोभ बढता है । लाभ ही लोभ-वृद्धि का कारण है ।

(उत्तराध्ययन, कापिलिकाध्ययन)

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा।

भावार्थ तीर्थंकर भगवान् ने मूर्छा-ममत्व भाव को ही परिग्रह कहा है।

(दशवैकालिक; महाचारकथाध्ययन)

खुहं पिवासं दुसिज्जं सीउण्हं अरहं भयं।
अहिआसे अव्वाहिओ देहदुक्खं महाफलं॥

भावार्थ भूख, प्यास, दुःशय्या, शीत, उष्ण, अरति और भय इन्हे अव्यथित भाव से सहन करना चाहिये। समभाव से सहन किया गया शारीरिक दुःख (कायाक्लेश) महान् फल देनेवाला है।

(दशवैकालिक आचारप्रणिध्यध्ययन)

Whatever afflictions they mayst put on me
As blissful favours will I take them all.

भावार्थ वे मुझे कैसे ही कष्ट क्यो न दे, मैं उन सभी को आनन्दप्रद अनुग्रह के रूप मे ग्रहण करूँगा।

(Zend-Avesta)

अल फक्रो फ़ख़्री।

भावार्थ अत्यधिक दीनावस्था में मुझे गर्व होता है।

हदीस

यस्यानुग्रहमिच्छामि तस्य सर्वं हराम्यहं॥

भावार्थ जिस व्यक्ति पर मेरी कृपा होती है मैं उसका सर्वस्व छीन लेता हूँ।

(भागवत)

इजा अहब्बा उलाहे अब्दां अप्ता महुबिल बलाये।

भावार्थ जब भगवान् अपने भक्त को प्यार करते है तो उसकी जाँच के लिये मुसीबते भेजते है।

(हदीस)

Heaven makes hard demands on faith.

भावार्थ श्रद्धा के लिये परमात्मा की ओर से निष्ठुर माँग होती है ।

(कन्फ्यूशस शिकिंग)

क्षुधातृषार्ताः जननीं स्मरन्ति ।

भावार्थ भूख प्यास लगने पर बच्चे माता को याद करते हैं ।

(शंकराचार्य)

ला यु अल्ले मोमिनो नियां लहु मिनल अजरे ।

फ़िइल मसायावा ला तमन्नाओ अन्नहुल फुज्जे बिल मक़रीज ।

भावार्थ जिस व्यक्ति में परमात्मा के प्रति श्रद्धा भक्ति है वह यदि यह समझ ले कि उन यातनाओं को, जिन्हे वह दुर्भाग्य समझता है, सहन करने से भगवान् की ओर से क्या क्या वरदान प्राप्त होते है तो वह उनके लिये लालायित होगा और चाहेगा कि कैंची से उसके शरीर के टुकडे टुकडे कर दिये जायँ ।

(कुरान)

विपदः सन्तु नः शाश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो ।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥

भावार्थ हे जगद्गुरो ! हमारी आपसे विनय है कि हम पर सदा सर्वदा विपत्तियां आती रहें ताकि हमें आपका दर्शन सुलभ हो जिसे पाकर जीव इस ससार में पुन जन्म नही लेते ।

(भागवत)

The sacrifices of God are a broken spirit, a broken and a contrite heart. Thou wilt not despise.

भावार्थ भग्न हृदय आत्मा ईश्वर का नैवेद्य है । भग्न एव अनुतप्त हृदय से तुझे घृणा न करनी चाहिये ।

(बाइबिल)

'Tis only through a broken heart
That Christ can enter in.

भावार्थ केवल भग्नहृदय मानव के अन्तर मे ही ईसामसीह का पदार्पण होता है।

(एक अंग्रेजी कवि)

सच्चं वे अमता वाचा एस धम्मो सनातनो।
सच्चे अत्थे च धम्मे च आहु सन्तो पतिट्ठिता॥

भावार्थ सत्यवाणी ही अमृतवाणी है, सत्यवाणी ही सनातनधर्म है। सत्य, सदर्थ और सद्धर्म पर सन्तजन सदैव दृढ़ रहते है।

सुत्तनिपात-सुभासितसुत्त

पुरिसा सच्चमेव समभिजाणाहि, सच्चस्स आणाए उवट्ठिए से मेहावी मार तरइ।

भावार्थ हे पुरुषो! सत्य ही का सेवन करो, सत्य की आज्ञा का आराधक मेधावी पुरुष मृत्यु को तिर जाता है।

(आचाराग शीतोष्णीयाध्ययन)

सत्यान्नास्ति परोधर्मः।

भावार्थ सत्य से बढ़कर कोई धर्म नही हैं।

(महाभारत)

Ye Shall know the truth and truth shall make you free.

भावार्थ तुम सत्य को समझो। सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।

(बाइबिल ज्होन)

अज सूफी ला मजहबो लहु इल्ला मजहबुलहक़।

भावार्थ सूफी सत्य के सिवा कोई धर्म नही जानते।

(सूफी)

सच्चानुपत्तिया खो, भारद्वाज, पधानं बहुकरं, नो चे तं पदहेय्य, न य इदं सच्चं अनुपापुणेय्य ।

भावार्थ सत्य प्राप्ति का उपकारी धर्म प्रयत्न (प्रधान) है मनुष्य प्रयत्न न करे तो फिर सत्य की प्राप्ति कहाँ से हो ।

मज्झिम-निकाय

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियं ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः ॥

भावार्थ ऐसा सत्य कहो जो प्रिय हो । अप्रिय सत्य न कहो और न प्रिय असत्य ही कहो । यही सनातन धर्म है ।

(महाभारत)

मुसावाओ उ लोगम्मि सव्व साहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥

भावार्थ संसार में सभी साधु पुरुषो ने मृषा वाणी की निन्दा की है । मृषा (असत्य) बोलनेवाला दूसरे जीवो का विश्वास खो देता है । इसलिए मृषावाणी से परहेज करना चाहिये ।

(दशवैकालिक; महाचारकथाध्ययन)

मुहुत्त दुक्खाउहवंति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुत्तराणि वेराणुबंधोणि महब्भयाणि ॥

भावार्थ लोहे के तीखे काँटे थोडे समय तक ही दुख देते हैं और वे सहज ही शरीर में से निकाल लिये जाते है । किन्तु हृदय में चुभे हुए कठोर वचनों का निकालना सहज नही है । इनसे वैर बँध जाता है और ये बडे भयावह सिद्ध होते हैं ।

(दशवैकालिक; विनयसमाध्यध्ययने)

Not that which goeth in at the mouth defileth a man, but which cometh out of the mouth, this defileth hand.

भावार्थ यह बात नही है कि जो (अहितकर खान-पान) मुंहे में जाता है वही मनुष्य का बिगाड करता है किन्तु जो (दुर्वचन) मुंह से बाहर निकलता है वह भी मनुष्य का बिगाड करता है।

(बाइबिल)

फा अजाजा बिल इसानेहि व काला कूफा अलैका हाजा, वा हलो या कि बुनुआसे फिआरे अला वुजूहेहि इला हसदो अलसिनातेहि।

भावार्थ पैगम्बर साहेब ने जिह्वा की ओर सकेत करते हुए कहा आप लोग अपनी इस इन्द्रिय का सयम रखिये। इसके कारण लोग पाप का इतना भारी गट्ठर बाँध लेते है कि वे सिर के बल नरक की आग मे ढकेल दिये जाते है।

(मुहम्मद साहेब)

तावज्जितेन्द्रियो न स्याद् विजितान्येन्द्रियो पुमान्।
न जयेद्रसनां यावज्जितं सर्वं रसे जिते॥

भावार्थ दूसरी इन्द्रियो को जीत लेने पर भी पुरुष तब तक जितेन्द्रिय नही कहलाता जब तक कि उसने रसना (जिह्वा) को नही जीता है। इसे जिसने जीत लिया है उसने सभी को जीत लिया।

(भागवत)

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुव स्मृतिः।
स्मृति लंभे सर्व ग्रन्थीनां विप्रमोक्षः॥

भावार्थ पवित्र भोजन से मन पवित्र रहता है। मानसिक पवित्रता से स्मरणशक्ति असदिग्ध एव स्पष्ट हो जाती है। इस स्मरणशक्ति को पाकर आत्मा सभी बन्धनों से छूट जाता है।

छान्दोग्योपनिषद्

त्यागेनैकेनामृतत्वमश्नुते ।

भावार्थ सांसारिक सुखों का त्याग करने से आत्मा अमरता प्राप्त करता है ।

उपनिषद्

भिक्षुओ ! मैं तुम्हारी सेवा न करूँ तो कौन करेगा ? तुम्हारे यहाँ माता नहीं, पिता नहीं, जो तुम्हारी सेवा-शुश्रूषा करते । तुम एक दूसरे की सेवा न करोगे तो फिर कौन करेगा । जो रोगी की सेवा करता है वह मेरी ही सेवा करता है ।

बुद्धचर्या

सय्यदं उल क़ौमे खादिमे हुम ।

भावार्थ नेता अपने दल का मुख्य सेवक होता है ।

(हदीस)

He that is greatest among you shall be your servant.

भावार्थ जो तुम लोगों में सबसे बड़ा है वह तुम्हारा सेवक होगा ।

बाइबिल

वेयावच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेणं तित्थयर गोत्ते नामं कम्मं बंधइ ।

भावार्थ प्र० हे भगवन् ! वैयावृत्त (सेवा) करने से जीव को क्या लाभ होता है ?

उ० वैयावृत्त्य से जीव तीर्थंकर गोत्र कर्म का बंध करता है ।

उत्तराध्ययन सम्यक्त्वपराक्रमाध्ययन

Humility is the root of honour, lowliness the foundation of loftiness, the world's weakest overcomes the world's hardest

भावार्थ नम्रता प्रतिष्ठा का मूल कारण है, लघुता महानता की नींव है। संसार का सबसे बड़ा अशक्त व्यक्ति संसार के कठोरतम व्यक्ति को पराजित कर देता है।

T. Tao Teh King.

God giveth to grace to the humble.

भावार्थ परमात्मा विनम्र व्यक्ति को अपनी कृपा प्रदान करता है।

वाईबिल

इन्नल्लाहो ला यु हिब्बो कुल्ले मुख्तालिन् फखुरिन्।

भावार्थ आत्म श्लाघा करने वाले अभिमानी लोग परमात्मा का प्रेम नही पाते।

—कुरान

Pride bringeth loss, humility, increase. This is the way of Heaven. He comes to ruin who says that others do not equal him.

भावार्थ अभिमान से हानि होती है, इसलिये विनम्रता की वृद्धि करो। यही स्वर्ग का मार्ग है। जो यह कहता है कि दूसरे लोग मेरी समता नही करते, उसका सर्वनाश हो जाता है।

(कन्फ्यूशस-शुकिंग)

Those, who aspire to greatness, must humble themselves.

भावार्थ महत्वाकांक्षी व्यक्ति के लिये विनम्र होना आवश्यक है।

(Tas Teh King)

'The meek shall inherit the earth, and their's is the Kingdom of heaven.

भावार्थ जो लोग नम्र है उन्हें पृथ्वी का उत्तराधिकार प्राप्त होगा और स्वर्ग का साम्राज्य भी उन्ही का है।

(बाइबिल)

इन्ना अक्रमुकुम इन्दा इलाहे अतू काकुम।

भावार्थ जो व्यक्ति तुम लोगो में सबसे अधिक शरीफ हैं वही परमात्मा के अधिक समीप एव उसकी दृष्टि में महान् है।

(कुरान)

एवं धम्मस्स विणओ मूल परमो से मुक्खो।
जेण कित्तिं सुअं सिग्धं, नीसेसं चाभिगच्छइ॥

भावार्थ विनय धर्म रूप वृक्ष का मूल है और मोक्ष उसका सर्वोत्तम रस है। विनय से कीर्ति-लाभ होता है और पूर्णत प्रशस्त श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है।

दशवैकालिक; विनयएताध्ययध्ययन

संपातोऽवियणं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपाग सहस्सपागेहिं तिल्लेहि अब्भंगेत्ता सुरभिणा गधट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारस वंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा। तेणावि तस्स अम्मापिडस्स दुप्पडियारं भवइ।

भावार्थ कोई कुलीन पुरुष सवेरे ही सवेरे शतपाक, सहस्रपाक जैसे तैल से माता पिता के शरीर की मालिश करे, मालिश करके सुगन्धित द्रव्य का उबटन करे। एव इसके बाद सुगन्धित, उष्ण और शीतल तीन प्रकार के जल से स्नान करावे। तत्पश्चात् सभी अलकारो से उनके शरीर को भूषित करे। वस्त्र, आभूषणो से अलकृत कर मनोज्ञ अठारह प्रकार के व्यंजनो सहित भोजन करावे और इसके बाद उन्हें अपने कन्धो पर

उठाकर फिरे। यावज्जीव ऐसा करने पर भी वह पुरुष माता-पिता के महान् उपकार से उऋण नही हो सकता।

ठाणांग ३

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते संभवेनृणाम्।
न तस्यापचितिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि॥

भावार्थ अपनी सन्तान के जन्म एवं पालन-पोषण मे माता पिता जो कष्ट उठाते है, सैकडो वर्ष पर्यन्त उनकी सेवा करके भी उसका बदला नही चुकाया जा सकता।

(महाभारत)

Filial devotion and respect for elders are the very foundation of an unselfish life.

भावार्थ माता पिता की भक्ति एव गुरुजनो का सम्मान, निःस्वार्थ जीवन के निर्माण में नींव रूप है।

(कन्फ्यूशस)

Honour thy father and thy mother.

भावार्थ अपने माता पिता का सम्मान करो।

(बाइबिल)

माता पितु उपत्थानं पुत्तदारस्स संगहो।
अनवज्जानि कम्मानि एवं मंगल मुत्तमं॥

भावार्थ माता पिता की सेवा, स्त्री पुत्रादि की सँभाल और व्यवस्थित रीति से किये हुए कर्म यही उत्तम मगल है।

(सुत्तनिपात-महामगलसुत्त)

बिल वालिदिनि एहसाना।

भावार्थ अपने माता पिता का उपकार मानो।

(कुरान)

अल जन्नतो तहता कुदुमुल उम ।

भावार्थ निश्चय ही माता के चरणो मे स्वर्ग बिछा हुआ है ।

(हदीस)

वेदस्त्यागश्च यज्ञश्च नियमश्च तपांसि च ।
न विप्रदुष्टस्य भावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ।
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं तपस्तीर्थमुदाहृतम् ।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा ॥

भावार्थ जिसका हृदय दुष्ट है उसके लिये वेदो का अध्ययन, त्याग, यज्ञ, नियम, तप ये सभी बेकार हैं ।

ज्ञान तीर्थ है, धृति तीर्थ है और तप तीर्थ है किन्तु मन की शुद्धि सभी तीर्थों से बडा तीर्थ है ।

महाभारत

The pure in heart shall see God.

भावार्थ पवित्र हृदय वाले को ईश्वर के दर्शन होगे ।

(बाइबिल)

सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोद क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीत वृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव ॥

भावार्थ विश्व के सभी जीवो के साथ मेरा भी मैत्री का व्यवहार हो, गुणी जनो के दर्शन कर मेरा हृदय आनन्द से खिल उठे, और दीन दुखी जीवो को देखकर मेरा चित्त दयाभाव से द्रवित हो जाय एव दुष्ट लोगो पर भी मेरा समभाव रहे पर उनपर द्वेष न हो । हे भगवन् ! मैं चाहता हूँ कि मेरी इस तरह की परिणति हो जाय ।

(सामायिक पाठ)

श्रद्धामयोऽयं पुरुषः यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥

भावार्थ यह पुरुष श्रद्धारूप है। जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वह वैसा ही होता है।

(गीता)

इधा भिक्खवे भिक्खु मेत्तसहगतेन चेतसा ...पि....फरित्वा विहरति, करुना, ...मुदिता.. .उपेक्खा सहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरति, तथा दुतियं तथा ततियं तथा चतुत्थिं, इति उद्धं अद्धो तिरियं सव्वधि सव्वत्त तया सव्ववन्तं लोकं, उपेखा सह गतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अव्यापज्झेन फरित्वा विहरति। एवं खो भिक्खवे भिक्खु ब्रह्मप्पत्तो होति।

भावार्थ मैत्रीपूर्ण चित्त से, करुणापूर्ण चित्त से, मुदितापूर्ण चित्त से और उपेक्षापूर्ण चित्त से जो भिक्षु चारो दिशाओ को व्याप्त कर देता है; सर्वत्र सर्वात्मरूप होकर समस्त जगत् को अवैर और अद्वेषमय चित्त से भर देता है उसे मैं 'ब्रह्मप्राप्त' भिक्षु कहता हूँ।

अंगुत्तर निकाय; चतुक्कनिपात (वोधजीववग्गो)

न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मणा वसलो होति कम्मणा होति ब्राह्मणो॥

भावार्थ जन्म से न कोई शूद्र होता है और न ब्राह्मण ही। कर्म से ही शूद्र होता है और कर्म से ही ब्राह्मण होता है।

सुत्तनिपात-वसलसुत्त

कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तियो।
कम्मुणा वइस्सो होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा॥

भावार्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये सभी कर्म से ही होते है पर जन्म से नही।

(उत्तराध्ययन यज्ञीयाध्ययन)

सात्त्विको ब्राह्मणः प्रोक्त क्षत्रियस्तु रजोगुणः ।
तमोगुणस्तथा वैश्यः गुण साम्यात्तु शूद्रता ॥

भावार्थ सत्व गुण वाला ब्राह्मण कहा गया है । रजोगुण और तमोगुण वाले क्रमश क्षत्रिय और वैश्य कहे गये है । तीनो गुणो की समता वाला शूद्र होता है ।

(भविष्यपुराण)

न ख्वो उच्च कुलीनताय लोभधम्मा वा परिक्खयं गच्छन्ति, दोस धम्मा वा परिक्खयं गच्छन्ति, मोहधम्मा वा परिक्खयं गच्छन्ति । नो चे पि उच्चा कुला पब्बजितो होति, सो च होति धम्मानुधम्मपतिपन्नो सामिचि पतिपन्नो अनुधम्मचारी, सो तत्थ पुज्जो सो तत्थ पासंसोति ।

भावार्थ उच्चकुल में जन्म लेने से लोभ थोडा ही नष्ट हो जाता है । उच्चकुल में जन्म लेने से न द्वेष ही नष्ट होता है न मोह ही । उच्च-कुल में भले ही जन्म न लिया हो, किन्तु यदि मनुष्य धर्म मार्ग पर आरूढ होकर धर्म का ठीक ठीक आचरण करता है तो वह पूज्य है । प्रशसनीय है ।

(मज्झिमनिकाय-सप्पुरिससुत्त)

सक्खं खु दीसइ तवो विसेसो न दीसइ जाइ विसेस को वि ।

भावार्थ साक्षात् तप की विशेषता दिखाई देती है, जाति की कोई विशेषता दिखाई नही देती ।

(उत्तराध्ययन १२ अध्य०)

पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठई सव्वां संजए ।
अन्नाणी कि काही किं वा नाहीइ सेय पावगं ॥

भावार्थ पहले ज्ञान और उसके बाद क्रिया है । इस प्रकार ज्ञान और क्रिया दोनो स्वीकार करने से ही साधु अपने आचार का पालन कर सकता है । साध्य और उसकी प्राप्ति के उपाय का जिसे ज्ञान नही

है वह क्या कर सकता है और अपने कल्याण और अकल्याण को भी कैसे समझ सकता है।

(दशवैकालिक षड्जीवनिकाध्ययन)

जिस वस्तु का जन्म हुआ है उसका नाश न हो क्या यह शक्य है।

(दीर्घनिकाय)

सव्वं जगं जइ तुहं सव्व वा वि धणं भवे।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव॥

भावार्थ यदि यह सारा ससार और सभी धन तुम्हारा हो जाय फिर भी यह तुम्हारे लिये पर्याप्त न होगा और न इससे तुम्हारी रक्षा ही हो सकेगी।

उत्तराध्ययन इषुकारीयाध्ययन

सुवण्ण रुप्पस्स हु पव्वया भवे सिया हु केलास समा असंखया।
णरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि इच्छा हु आगास समा अणंतिया॥

भावार्थ कैलाश पर्वत के समान सोने चाँदी के असख्यात पर्वत भी हो, तो उनसे भी लोभी मनुष्य का मन नही भरता। सच है, आकाश की तरह इच्छाओ का कही अन्त नही आता।

उत्तराध्ययन नमिप्रव्रज्याध्ययन

सोने चाँदी के लाखो करोड़ो सिक्को को मै श्रेष्ठ धन नही कहता। उसमे तो भय ही भय है राजा का, अग्नि का, जल का, चोर का, लुटेरे का और अपने सगे सम्बन्धियो तक का भय है।

(बुद्धवाणी)

सद्धा धनं सील धनं हिरि ओत्तापिय धनं।
सुतधनं च चागो च पञ्जा वे सत्तमं धनं।

यस्स एते धना अत्थि इत्थिया पुरिसस्स वा।
अदालिद्दो ति तं आहु अमोघं तस्स जीवितम् ॥

भावार्थ श्रेष्ठ और अचंचल तो मैं इन सात धनों को मानता हूँ श्रद्धाधन, शीलधन, लज्जाधन, लोकभयधन, श्रुतधन, त्यागधन और प्रज्ञाधन। जिस स्त्री पुरुष के ये धन हैं उसे दारिद्रय का अभाव कहा गया है और उसीका जीवन सफल है।

(अंगुत्तरनिकाय-धनवग्ग)

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुईसद्धा सजमंमि य वीरियं ॥

भावार्थ- इस संसार में प्राणियों के ये चारों अंग परम दुर्लभ हैं - मनुष्यभव, शास्त्रश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

(उत्तराध्ययन चतुरंगीयाध्ययन)

किच्छो मनुस्स पटिलाभो किच्छं मिच्चा न जीवितं।
किच्छं सद्धम्म सवणं किच्छो बुद्धानमुप्पादो ॥

भावार्थ मनुष्य जन्म कठिन है, मृत्यु वाला जीवन कठिन है। सच्चे धर्म का सुनना कठिन है और बुद्धों का उठना कठिन है।

धम्मपद-बुद्धवर्ग

लब्भन्ति विमला भोया लब्भन्ति सुरसंपया।
लब्भन्ति पुत्तमित्तं च एगो धम्मो न लब्भई ॥

भावार्थ सुन्दर मनोज्ञ भोग, देव सम्पत्ति, पुत्र और मित्र इन सभी का पाना सहज है। केवल एक धर्म की प्राप्ति दुर्लभ है।

जा जा वच्चई रयणी न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जंति राईओ ॥

भावार्थ जो रातें बीत रही हैं वे वापिस नहीं लौटती। जो व्यक्ति धर्म क्रिया का आचरण करता है उसकी रात्रियां सफल होती हैं।

(उत्तराध्ययन; इषुकारीयाध्ययन)

पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ।
झाणं च विउसग्गो एसो अब्भिंतरो तवो॥

भावार्थ प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग ये आभ्यन्तर तप है।

(उत्तराध्ययन तपोमार्गगत्यध्ययन)

अच्चणं रयणं चेव. वंदणं पूयणं तहा।
इड्ढी सक्कार सम्माणं मणसा वि न पत्थए॥

भावार्थ—अर्चा, पूजा, वन्दना, नमस्कार, ऋद्धि सत्कार और सन्मान—इनकी मुमुक्षु मन से भी इच्छा न करे।

(उत्तराध्ययन अनगारगतिमार्गाध्ययन)

चीराजिणं नगिणिणं जडी संघाडि मुण्डिणं।
एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागयं॥

भावार्थ विशिष्ट वस्त्र पहनना, नग्न रहना, जटा रखना, कन्था धारण करना, मस्तक का मुडन करना इन धर्म-चिह्नों को धारण करके भी जो व्यक्ति दुराचार का सेवन करता है। दुराचारी साधु नामधारी उस व्यक्ति की ये चिह्न दुर्गति से रक्षा नहीं करते।

(उत्तराध्ययन अकाममरणाध्ययन)

किं ते जटाहि दुम्मेध किं ते अजिन साटिया।
अब्भन्तरं ते गहनं बाहिरं परिमज्जसि॥

भावार्थ हे मूर्ख! जटा से क्या लाभ और मृगचर्म से भी क्या लाभ? तेरा भीतर का तो गन्दा है। बाहर धोने से क्या होता है।

- धम्मपद (ब्राह्मण वर्ग)

जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा ।
जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा ॥

भावार्थ जिन अनुष्ठानो से आत्मा मे कर्म आते है उन्ही से कर्मों का निरोध होता है और जिनसे कर्मों का निरोध होता है उन्ही से कर्म आते है । जिन अनुष्ठानो से आत्मा मे कर्मों का आगमन नही होता है उन्ही से आत्मा मे कर्म आते है और जिनसे कर्म का निरोध नही होता है उन्ही से कर्मों का निरोध होता है । सभी अध्यवसायो पर निर्भर है ।

——आचाराग; सम्यक्त्वाध्ययन

जयं वेरं पसवति दुक्खं सेति पराजितो ।
उपसन्तो सुखं सेति हित्वा जय पराजयं ॥

भावार्थ जय से वैर पैदा होता है क्योकि पराजित पुरुष दुखी होता है । जो जय और पराजय को छोड देता है वही सुख की नीद सोता है ।

धम्मपद, सुखवर्ग

विसेनिकत्वा पन ये चरन्ति दिट्ठीहि दिट्ठिं अविरुज्झमाना ।
तेसु त्वं किं लभेथो पसूर ये-सीध नत्थि परम उग्गहितं ॥

भावार्थ जिन्होने प्रतिपक्ष बुद्धि को नष्ट कर दिया है और जो अपने पथ के खातिर दूसरे पथो से विरोध भाव नही रखते, और जिन्हें यह प्रतीत नही होता कि हमारा ही पथ सर्वश्रेष्ठ है, उनके पास जाकर, हे प्रशूर ! तुझे क्या मिलने का है ।

सुत्तनिपात; अट्ठकवर्ग

मेरे परिनिर्वाण के पश्चात् मेरे शरीर की पूजा करने की मायापञ्ची में न पडना । मैने तुम्हें जो सन्मार्ग बताया है उसके अनुसार चलने का प्रयत्न करना ।

(दीर्घनिकाय, महापरिनिब्बाणसुत्त)

अप्पावटा तुम्हे आनन्द होत्थ तथागतस्स सरीरपुजाय इंघ तुम्हे आनन्द सदत्थे घटथ, सदत्थं अनुपुञ्जथ सदत्थे अप्पमत्ता आतापिनो पहितट्ट विहरथ ।

आनन्द ! तथागत की शरीर पूजा से तुम बेपर्वाह होना । तुम आनन्द; सच्चे पदार्थ के लिये प्रयत्न करना, सदर्थ के लिये उद्योग करना । सदर्थ में अप्रमादी, उद्योगी आत्मसयमी हो विहार करना ।

दीघनिकाय-महापरिनिव्वाणसुत्तं, बुद्धचर्या पृ० ५३७

The teaching of sects is not different. The large hearted man regards them as embodying the same truths. The narrow minded man observes only their differences.

भावार्थ शिक्षा की दृष्टि से मजहबो में कोई भेद नही है । उदार चित्त-आत्मा सभी मजहबो में सरीखे सत्य पाती है । छोटे दिल वाले को उनमें भेद ही भेद दिखाई देता है ।

(Lu Shun Yan)

तफ़रक़ा दर नफ़्से हैवानी बुवद
रूहे वाहिद रूहे इन्सानी बुवद ।

भावार्थ भेद, अनैक्य मनुष्य मे पशुता के सूचक है । अभेद और ऐक्य उसकी मानवता के लक्षण है ।

(सूफी कवि)

अत् तराकुल इलाही काना नफ़्सा बेना आदमा ।

भावार्थ जितने आत्मा है और उनके श्वास है उतने ही परमात्मा को पाने के रास्ते है ।

(हदीस)

देश काल निमित्तानां धर्मो भेदैर्विभिद्यते ।

भावार्थ देशकाल और निमित्त के भेद से धर्म जुदे जुदे रूप धारण करता है।

(महाभारत)

अहो चित्रं चित्रं तव चरितमेतन्मुनीपते
स्वीकीयानामेषा विविध विषय व्याप्ति वशिनाम्।
विपक्षापेक्षाणां कथयसि नयानां सुनयतां
विपक्ष क्षेप्तृणा पुनरिह विभो दुष्ट नयताम्॥

भावार्थ हे मुनीश ! तुम्हारा धर्म विचित्र है। वस्तुओ के विविध धर्मों की अपेक्षा जो नय दूसरे मत को भी ठीक मान लेते है उन्हें शुद्ध नय कहते हो और जो नय दूसरे मत का खण्डन करते है उन्हें दुष्ट नय कहते हो।

रत्नप्रभसूरि

समियं ति मन्नमाणस्स समिया वा असमिया वा समिया होइ उपेहास।

भावार्थ सम्यक्त्वधारी आत्मा की भावना सम्यक् होती है इसलिए उसे सम्यक् अथवा असम्यक् कोई भी बात सम्यक् रूप से ही परिणत होती है।

आचारांग लोकसाराध्ययन

ला इक्राहा फ़िद्दीने....लकुम् दीनकुम्
वाले यादिम....उद्दु इले हे सबिला रब्बेका बिल हिकमते, वल मौअज्जे दिल हसनते।

भावार्थ धार्मिक मामलो में बल-प्रयोग न होना चाहिये। आपको अपने श्रद्धा-विश्वास पर सन्तोष हो और मुझे अपने श्रद्धा-विश्वास पर। जो लोग परमात्मा को जानते है उन्हें भद्र उपायो से और मधुरवाणी से बुद्धिमत्तापूर्ण हितकर उपदेश देकर उन लोगों का पथ प्रदर्शन करना चाहिये जो कि परमात्मा के विषय में अज्ञान है।

कुरान

अतिसारं दिट्ठिया सो समत्तो मानेन मत्तो परिपुण्णमानी।
सयमेव सामं मनसाभिसित्तो दिट्ठी हि सा तस्स तथा समत्ता॥

भावार्थ हमारे ही मत मे अत्यन्त सार है, इस प्रकार के विचार को आश्रय देकर ये वादविवादी लोग अपने को कृतकृत्य मान रहे है। अहंकार मे मत्त हो ये पूर्ण अभिमानी बन बैठे है। अपने मान से ही अपने को अभिषिक्त कर रहे है। यह सब साम्प्रदायिकता को कलेजे लगाने का परिणाम नही तो क्या है ?

सुत्तनिपात; चूलवियूहसुत्त

न खो आनन्द एतापता तथागतो सक्कतो वा होति गरुकतो वा, मानितो वा, पूजितो वा अपचितो व। यो खो आनन्द भिक्खु वा भिक्खुनी वा उपासको वा उपासिका वा धम्मानुधम्मा पतिपन्नो विहरति समिति पतिपन्नो अनुधम्मचारी, सो तथागतं सक्करोति गरुकरोति मानेति पूजेति परमाय पूजाय।

भावार्थ हे आनन्द, इस (पुष्पवर्षा वाद्य एवं सगीत के) समारोह से न मेरा सत्कार सम्मान होता है, न गौरव बढता है, न पूजन ही होता है। किन्तु जो भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक या उपासिका धर्ममार्ग एव समिति पर आरूढ हो उनका ठीक ठीक आचरण करता है वही मुझे वास्तव में सत्कार देता है, मेरा सम्मान करता है, मेरा गौरव बढाता है और मेरी पूजा करता है।

दीघनिकाय; महापरिनिव्वाणसुत्तं

लोहा पारस का स्पर्श पाकर सदा के लिये सोना बन जाता है। ऐसे ही महापुरुषो के सम्पर्क से दुष्ट जन सज्जन बनते है।

नाम और रूप की उपाधि पाकर ससार में भिन्न भिन्न जीव है परन्तु सभी में एक सी परम शुद्ध और नित्य आत्मा विद्यमान है। अत. सबसे प्रेम रखो।

जैसे पतला धागा सुई मे आसानी से पिरोया जाता है। इसी प्रकार अभिमान क्रोध आदि से रहित विनयशील पुरुष परमात्मा मे लीन हो जाता है क्योकि वह अकिंचन और नम्र है अर्थात् पतला है।

करोडो वर्षों तक समुद्र मे डूबे रहने पर भी पत्थर में पानी प्रवेश नहीं कर सकता पर मिट्टी थोडे ही समय में गल जाती है। श्री रामकृष्ण परमहंस कहते हैं कि श्रद्धालु और विश्वासी लोग हजारो बार परीक्षा होने पर भी हताश नही होते किन्तु अविश्वासी पुरुष साधारण कारण आने पर ही बदल जाते हैं।

ज्ञानियो से अज्ञानी परिश्रम अधिक करते हैं जैसे इंजीनियर और मजदूर। पर अज्ञानियो की अपेक्षा ज्ञानियो को फल अधिक होता है क्योकि ज्ञानी विवेकपूर्वक और अज्ञानी विना समझे काम करते है। श्री लक्ष्मीसूरिजी महाराज बीस स्थानक की पूजा मे फर्माते है 'तत्त्वरस पामिया विहुणा क्रिया कहि ते बालक साल।'

ज्ञान का उपयोग दो प्रकार से होता है। महापुरुष ज्ञान का सदुपयोग करते हैं जब कि दूसरे उसका दुरुपयोग करते है। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् वही यथार्थ विद्या है जो अविद्या का नाश कर परमपद को पहुँचाती है। शकराचार्य का भी यही मत है कि जो ब्रह्मज्ञान को देनेवाली है वही विद्या है।

जैसे मछुए गहरे समुद्र में गोते लगाकर मोती निकालते हैं वैसे ही महापुरुष गहरे उतरकर सार वस्तु ग्रहण करते है। जैसे गीध और चील आकाश मे ऊँचे उड़कर अपनी दीर्घ दृष्टि से केवल मरे हुए जानवर ही देखते है ठीक इसी तरह कई पढे लिखे विद्वान लोग भी अपनी बुद्धि का दुरुपयोग ही करते है।

There are two uses of knowledge. The wise use it in a right way while others make misuse of it. Knowledge is that which destroys ignorance and leads to salvation. According to Shankaracharya, that which contributes to spirituality is only the real knowledge.

Just as the fishermen dive deep into the ocean and pick out pearls, so do the great seers dive deep and pick up the essential principles. There are some learned persons who abuse their knowledge. They are like those vultures and kites who with their long sight, look only for the carcasses from high above the sky.

महापुरुष की जो भी बुराई व निन्दा करते है उनका वें कदापि बुरा नही करते प्रत्युत वे उनकी भलाई में ही लगे रहते है।

तीर्थंकर भगवान् महावीर को गोशाला ने अनेक सन्ताप दिये पर वे उनकी परवाह न करते हुए ससार के उपकार मे डटे रहे। विष्णु (कृष्ण) की छाती मे भृगु ने लात मारी पर उन्होंने बुरा न माना। क्राइस्ट-को फाँसी पर चढाया गया पर उन्होने जगत् का भला ही किया। इसी तरह भगवान् बुद्ध, जरुतस्क और मुहम्मद साहेब-को भी दुष्टों ने अनेकानेक कष्ट पहुँचाये पर वे महापुरुष अपने उपकार के आदर्श पर डटे रहे।

Great men do not mind the evils done by the evil-doers but are always engaged for their good.

Tirthankar Lord Mahavir was given many a trouble by Goshala but he did not care for them. He went on with doing good of the world. Bhrigu kicked Vishnu (Krishna) in the chest but he did not take it ill. Christ was hanged but he still did good of the world. In the same way the Great Lord Buddha, Jerutsu and Mohammad were greatly harrassed by the evil doers but they stuck themselves to the great ideal of doing public good.

जिन लोगो के पास बुद्धि नही है उनसे बुद्धि की आशा करना मूर्खता है। जिन लोगो के पास दया नही है उनसे दया चाहना मूर्खता है। ऐसे ही जो ब्रह्मज्ञान से रहित है उनसे ब्रह्मज्ञान की और जो स्वय अशान्त है उनसे शान्ति की इच्छा रखना भी निरी मूर्खता है।

जो लोग ऐसे लोगो से बुद्धि, दया आदि की इच्छा रखते हैं वे स्वय इच्छा रखने के साथ ही मूर्ख बनते है। साथ ही वे बुद्धि का नाप और नीलाम भी करते है।

It is folly to expect knowledge from those who are devoid of it; it is folly to hope for mercy from the merciless. Likewise it is but sheer folly to desire for spiritual knowledge and peace from those who lack in spirituality and are themselves peaceless.

Those who expect knowledge, mercy etc. from such people, do befool themselves from the very time they desire for them. Moreover, not only do they put their intelligence at a discount but also set it for auction.

रागी मनुष्य के उपदेश में स्वार्थ का अश अवश्य रहता है। वीतराग का उपदेश एकान्त परमार्थोपदेश है।

Advice given by people whom passion governes, is always marred by selfish regards. The advice of the passionless alone can guide thee towards thy very welfare.

हे मनुष्यो, ससार के क्लेशो से यदि तुम्हें घृणा उत्पन्न हुई है, और

मृत्यु के दुःखो से उद्विग्न हुए हो तो विषय की छाया मे एक क्षण भी विश्राम मत करो उससे दूर ही रहो।

If the quarrels of this world have filled thee with disgust and the terrors of death with apprehension, beware, O man! from reposing thy self in the shadow of sensual pleasure! keep aloof from it! keep far aloof!

रोग की शान्ति के लिये जैसे औषधि उपयोगी है वैसे मद-अहंकार अभिमान को दूर करने के लिये मृदुता यह परम औषध है।

Mildness is an excellent remedy against Pride, Arrogance and Conceit.

लोभ की विद्यमानता मे सभी दुर्गुण आ करके एकत्रित होते हैं और लोभ के अभाव में मनुष्य सद्गुणी बना रहता है।

Around 'Desire' all the vices seem to flock together.

If desire is absent, man is virtuous.

लोह की जंजीर शरीर के बल से तोड़ी जा सकती है, परन्तु मोह की जंजीर अन्य किसी शक्ति से नही तोडी जा सकती, सिवाय एक वैराग्य के।

An iron chain can be broken by physical strength, but the chain 'Infatuation' Cannot be shattered, except with the help of the tool, 'Aversion from the world.'

जिस सुख के अन्त मे दुःख है वह वस्तुतः सुख नही, परन्तु दुःख ही है और जिस दुःख के अन्त में सुख है वह दुःख नही परन्तु सुख है।

Happiness followed by pain, is pain, and not

happiness and pain followed by happiness is happiness, and not pain.

वीरो का भूषण क्षमा है। जहाँ क्षमा का अभाव और क्रोध का प्रभाव है वहाँ अहिंसा महादेवी का निवास नही हो सकता।

Forgiveness is an ornament of the followers of Vira. Where Forgiveness is absent and wrath dominates, there the great Goddess Non-Injury will never come to dwell.

निन्दा करने से अपनी शुद्ध क्रिया भी दूसरे की अशुद्ध क्रिया के बराबर हो जाती है।

Slandering pulls our own pure actions down to the level of the impure ones of others.

शुभाशुभ प्रवृत्ति, यह धर्म और अधर्म का संक्षिप्त स्वरूप है। शुभ प्रवृत्ति वह धर्म, अशुभ प्रवृत्ति वह अधर्म।

Piety is nothing but good acting and impiety nothing but evil acting.

जहाँ कदाग्रह होता है वहाँ धर्म नही हो सकता।

Obstinacy excludes piety.

शान्ति का बढना, विषयेच्छा का कम होना, न्यायनीति का पालन और दुनिया के समस्त जीवो के साथ प्रेम का होना इसीका नाम धर्म है।

With the increase of tranquility, sensuality fades away, justice and morals rule, and love towards all creatures becomes manifest: this is called piety.

भक्ति, यह मुक्ति के लिये होनी चाहिये, न कि दुश्मन के क्षय, धन की पूर्ति किंवा यशोवाद के लिये।

Neither the destruction of our enemies, nor the increase of our fortune, nor the attainment of renown ought to be the motive of our devotions, but salvation only and alone.

प्रियता किंवा अप्रियता किसी चीज में नही रहती है, परन्तु मनुष्यो की परिणति ही राग द्वेष वाली होने से किसी को एक चीज प्रिय मालूम होती है और वही वस्तु दूसरे को अप्रिय ।

No object is in itself endowed with the quality of being dear or hateful. Our own disposition for loving or hating makes one object dear to us and another hateful. This is why one and the same object so often appears dear to us and hateful to some one else.

ज्ञान के साथ ही क्रिया फलवती होती है और ज्ञान भी तभी सफल होता है जब वह क्रिया के साथ हो ।

Religious actions are fertile only if combined with knowledge and religious knowledge is fertile only if combined with actions.

जो मनुष्य लोभ को अपने आधीन करता है वही ससार में सच्चा स्वामी, योगी और संसार से सर्वथा वियोगी है ।

He who subdues desire is a true ascetic, a true sage and though living in the world, still aloof from it in every respect.

परदोष को प्रगट करने का स्वभाव, स्वदोष की वृद्धि करनेवाला होता है और वह दुर्गति का असाधारण कारण है ।

The habit of exposing other's faults not only adds to our own faults, but also helps to create bad propsects for our own after-lives.

दूसरे के उत्कर्ष को नही सहन करनेवाला दूसरे का अपकर्ष करने वाला कभी कीर्ति प्राप्त नही कर सकता।

He who cannot see other's merits without debasing them, will never gain renown,

परात्मा की रक्षा के लिये स्वात्मा अर्पण कर देना यही भगवान् वीर की शिक्षा है आज्ञा है।

It is one of the chief commandments of Lord Vira to save others lives even at the cost of our own

ऐसे रिवाज जो धर्म के लिये कलक रूप है उन्हे वन्द कर देने में धर्म की हानि नही किन्तु दृढता है उज्ज्वलता है।

The suppression of such customs as are stain on religion, is no way harmful to religion but helps to establish religion itself so much the firmer.

जिस क्रिया से मनोवृत्तियाँ शुद्ध हो, उसीका नाम धार्मिक क्रिया है।

Religiousness is that attitude or activity by which thinking and feeling are being purified.

इष्ट के सयोग में राग और वियोग में द्वेष नही करना चाहिये; वैसे ही अनिष्ट के सयोग में द्वेष और वियोग में राग नही करना चाहिए।

On being united with the desirable, thou shalt not exult, and on being seprated from it, that shalt not grieve. Nor shalt thou grieve on being united with the undesirable, nor exult on being separated from it.

किसीके शरीर का नाश करना उसीका नाम हिंसा नहीं है, किन्तु द्वेषबुद्धि से किसी को मानसिक दु:ख देना, वह भी हिंसा है।

Not only destroying another's body is violence, but violence comprises the causing of any pain to another creature in inimical intention.

हिंसा करके प्रायश्चित्त करना यह कीचड में पैर भरकर धोने के बराबर है।

To commit injury and afterwards atone for it, is just like soiling one's feet with mud and then washing them.

भय से व्याप्त इस संसार में वही मनुष्य सदा निर्भय रह सकता है जो सब जीवों पर दया करता है।

In this world, which is so full of fears, only he can live fearlessly, who practises compassion towards all creatures.

जितने अंशो में ब्रह्मचर्य की विशेष रक्षा की जाय उतने ही अंशो में महान् कार्य करने की शक्ति प्रबल होती है।

The faculty of performing great deeds grows in the measure in which one preserves one's chastity.

शास्त्र मर्यादा का उल्लंघन कर अनीतिपूर्वक काम का सेवन करने वाला काम पुरुषार्थ की साधना नहीं करता परन्तु कुकर्म करता है दुराचार का सेवन करता है।

He who, transgressing the limits drawn in the sacred writings, indulges in sexual enjoyment in a way discordant with Ethics, does not accomplish one of the aims of human life, but commits a crime.

वृद्धावस्था, यह बुद्धि का खजाना और अनुभव ज्ञान की मूर्ति तभी बन सकती है, जब प्राथमिक जीवन में सावधानीपूर्वक ब्रह्मचर्य पालन किया गया हो।

Old age can indeed be a treasury of wisdom and an embodiment of empirical knowledge, provided it has been preceded by a period of strictly observed sexual abstinence.

विनय, विवेक और सन्तोषादि गुण उस स्त्री और पुरुष में आकर निवास करते हैं जो मन वचन काया से अपने शीलव्रत की रक्षा करता है।

Modesty, discretion, contentment and all other virtues take their permanent seat in the heart of such men and women as have preserved their chastity in full.

समय विशेष तक विषय सेवन कर लेने से पूर्ण तृप्ति हो जाती है यह आशा रखना व्यर्थ है। क्या घी सीचने से कभी अग्नि शान्त होती है।

The hope of fully gratifying sensual desire by indulging in it for a time, is vain. Has one ever calmed down fire by feeding it with melted butter.

वास्तविक सुख की पराकाष्ठा में पहुँचना, यही सच्ची आत्मोन्नति है।

Reaching the summit of genuine happiness is truest self perfection

दुष्कर्म के नाश का सच्चा उपाय सद्विचार और सदाचार है।

Good conduct and good thought are the best expedients to annihilate evil actions.

जैसे रत्नों का आधार समुद्र और प्राणीमात्र का आधार पृथ्वी है वैसे समस्त गुणों का आधार सम्यग्दर्शन (उत्तम श्रद्धा) है।

As the ocean is the support of all jewels, and the earth the support of all beings, just so Right Faith is the support of all virtues.

श्रद्धा और चारित्र रहित ज्ञान निरर्थक है, वह कार्यसिद्धि नहीं कर सकता।

Knowledge without Faith and Good Conduct is useless: it cannot lead to the accomplishment of any object whatsoever.

शुभ कर्म वाले मनुष्य के पास सभी सम्पदाएं गुणाधीन होकर अपने आप चली आती हैं।

With a person, in whom the latent efficacy of former good deeds is still operative, wealth becomes dependent on virtue, and spontaneously hastens to join it.

संसार में भिन्नता भले ही रहे किन्तु विरोध न हो। स्पर्द्धा भले ही रहे किन्तु ईर्ष्या न हो।

Let there be diversity in the world but let there be no enmity. Let there be competition but let there be no jealousy.